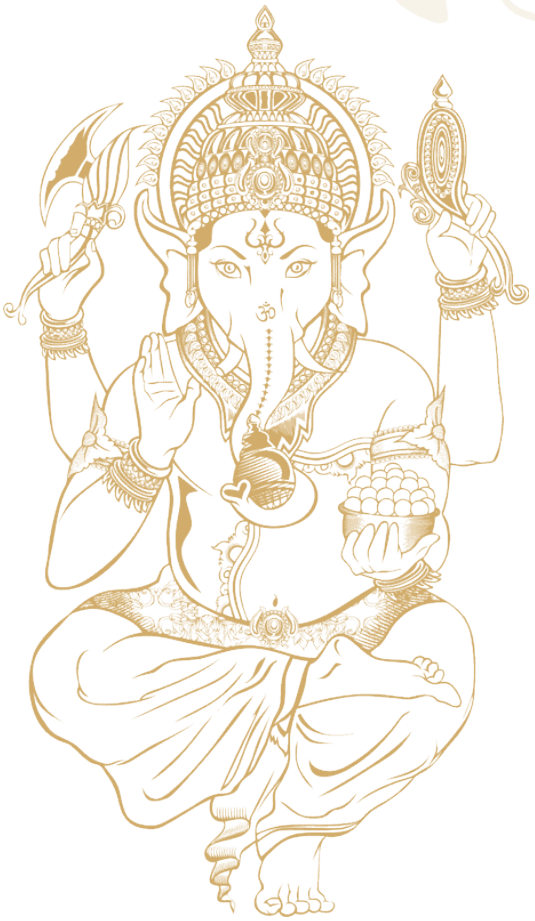

17 Jan 2026

12:39 PM

Delhi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120954901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17/01/2026**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**12:39:00 घंटे**
इष्ट	13:29:58 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:17:52 घंटे
वेलान्तर	-00:10:01 घंटे
साम्पातिक काल	20:04:46 घंटे
सूर्योदय	07:15:00 घंटे
सूर्यास्त	17:47:42 घंटे
दिनमान	10:32:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	02:57:05 मकर
लग्न के अंश	18:09:39 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पूर्वाषाढ़ा - 1**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	व्याघात
करण	शकुनि
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भू-भूपेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	पौष	27
पंजाबी	संवत : 2082	माघ	4
बंगाली	सन् : 1432	माघ	3
तमिल	संवत : 2082	थई	4
केरल	कोल्लम : 1201	मकरम	3
नेपाली	संवत : 2082	माघ	4
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2082	पौष	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 24:04:12
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:12:13 घंटे
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ___: व्याघात
योग समाप्ति काल _____: 21:17:51 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ___: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 11:16:05 घंटे
जन्म करण _____: शकुनि
भयात _____: 11:06:59
भभोग _____: 65:04:47
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 16 वर्ष 7 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

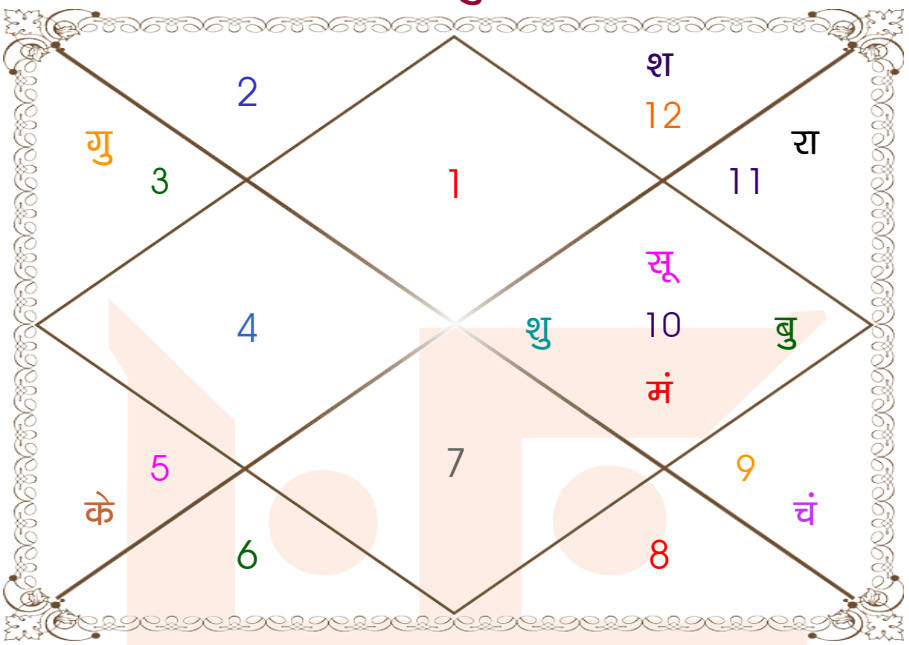

चन्द्र कुंडली

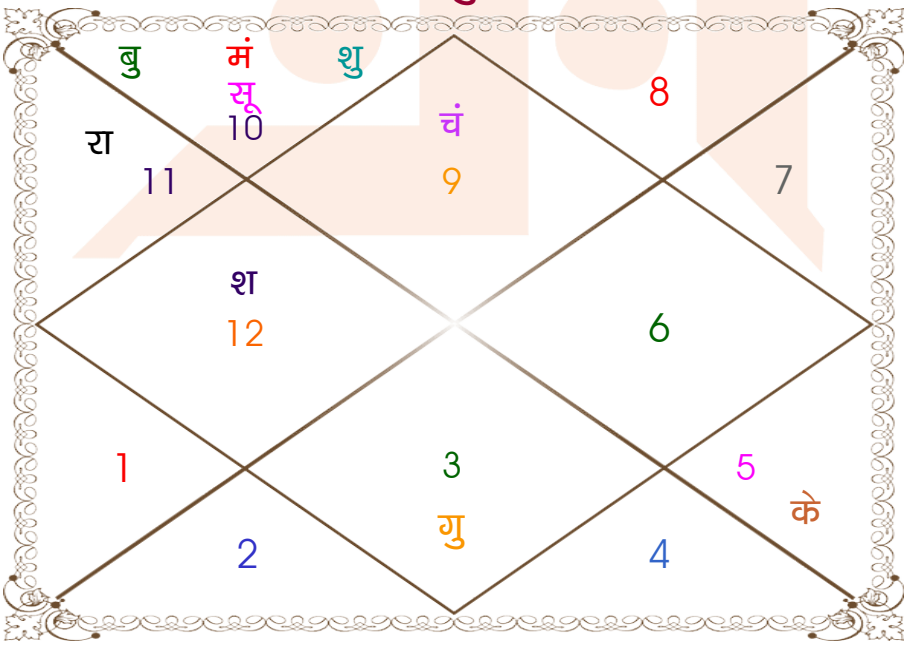

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

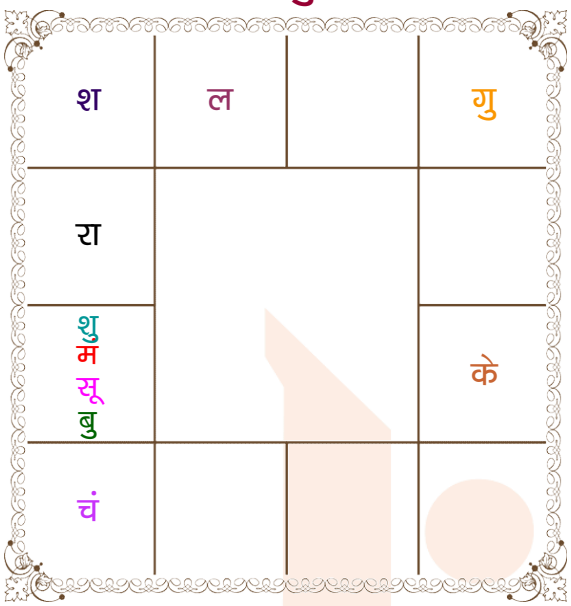

लग्न कुंडली

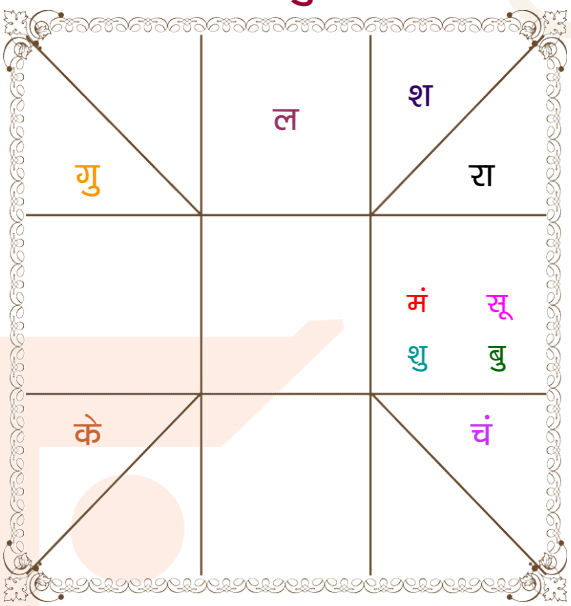

विंशोत्तरी
शुक्र 16वर्ष 7मा 7दि

शुक्र

17/01/2026

27/08/2142

शुक्र	26/08/2042
सूर्य	25/08/2048
चन्द्र	26/08/2058
मंगल	26/08/2065
राहु	26/08/2083
गुरु	26/08/2099
शनि	27/08/2118
बुध	27/08/2135
केतु	27/08/2142

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 9मा 22दि

सिद्धा

17/01/2026

10/11/2031

सिद्धा	21/03/2026
संकटा	10/10/2027
मंगला	20/12/2027
पिंगला	10/05/2028
धान्या	09/12/2028
भ्रामरी	20/09/2029
भद्रिका	10/09/2030
उल्का	10/11/2031

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	18:09:39	446:45:08	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	---
सूर्य			मक	02:57:05	01:01:07	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			धनु	15:35:48	12:13:55	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	सम राशि
मंगल		अ	मक	01:02:26	00:46:35	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	उच्च राशि
बुध		अ	मक	00:09:14	01:38:24	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
गुरु	व		मिथु	24:57:18	00:07:57	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र		अ	मक	05:29:08	01:15:27	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	मित्र राशि
शनि			मीन	03:05:22	00:04:53	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	15:28:19	00:08:13	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	15:28:19	00:08:13	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:22:28	00:00:55	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:33:28	00:01:16	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	09:00:14	00:01:55	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मक	04:49:46	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:22

लग्न-चलित

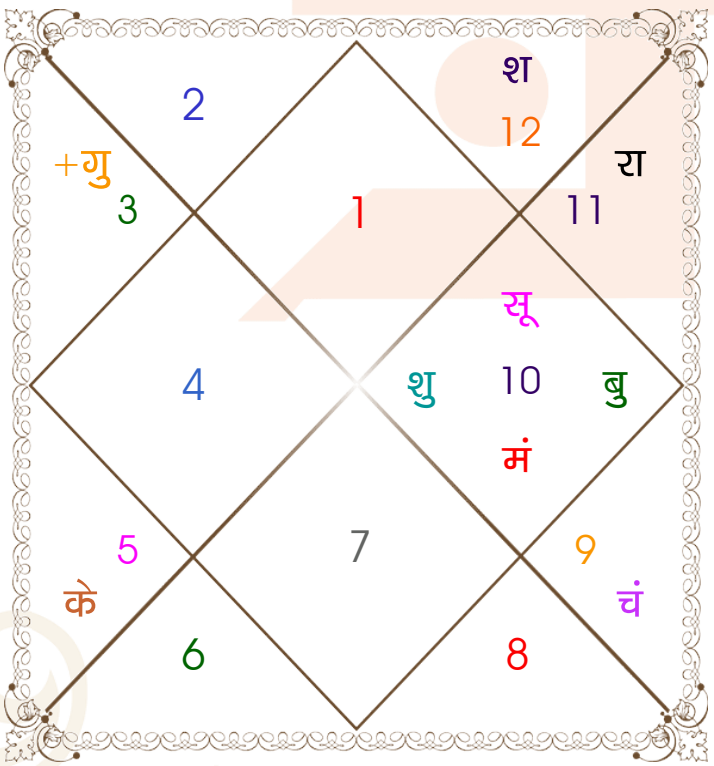

चन्द्र कुंडली

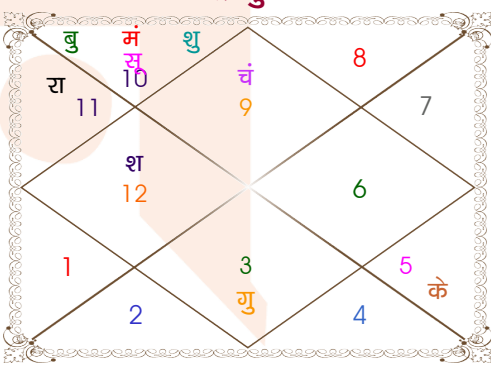

नवमांश कुंडली

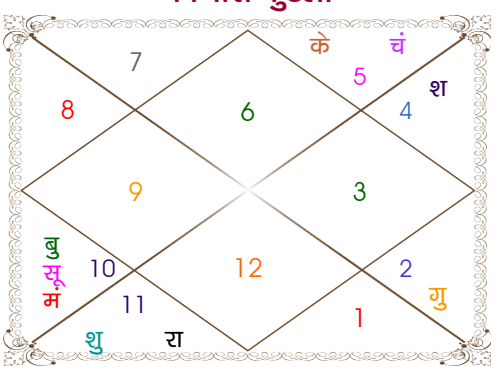

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	00:56:20	मेष	18:09:39
2	वृष	00:56:20	वृष	13:43:01
3	वृष	26:29:42	मिथुन	09:16:23
4	मिथुन	22:03:04	कर्क	04:49:46
5	कर्क	22:03:04	सिंह	09:16:23
6	सिंह	26:29:42	कन्या	13:43:01
7	तुला	00:56:20	तुला	18:09:39
8	वृश्चिक	00:56:20	वृश्चिक	13:43:01
9	वृश्चिक	26:29:42	धनु	09:16:23
10	धनु	22:03:04	मकर	04:49:46
11	मकर	22:03:04	कुम्भ	09:16:23
12	कुम्भ	26:29:42	मीन	13:43:01

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	18:09:39
2	वृष	17:04:48
3	मिथुन	11:02:37
4	कर्क	04:49:46
5	सिंह	02:23:48
6	कन्या	07:19:16
7	तुला	18:09:39
8	वृश्चिक	17:04:48
9	धनु	11:02:37
10	मकर	04:49:46
11	कुम्भ	02:23:48
12	मीन	07:19:16

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

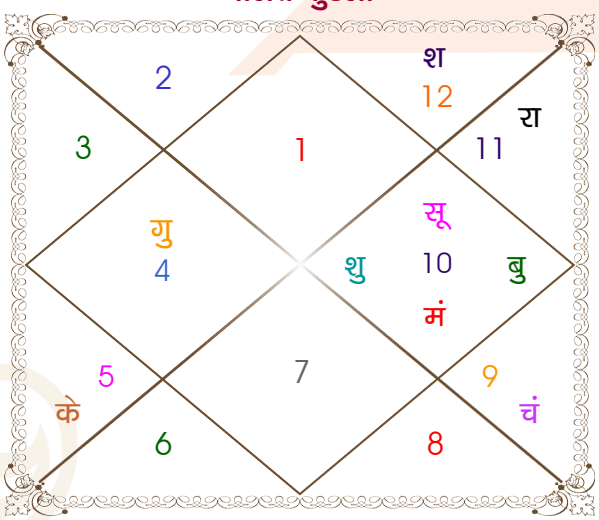

भाव कुंडली

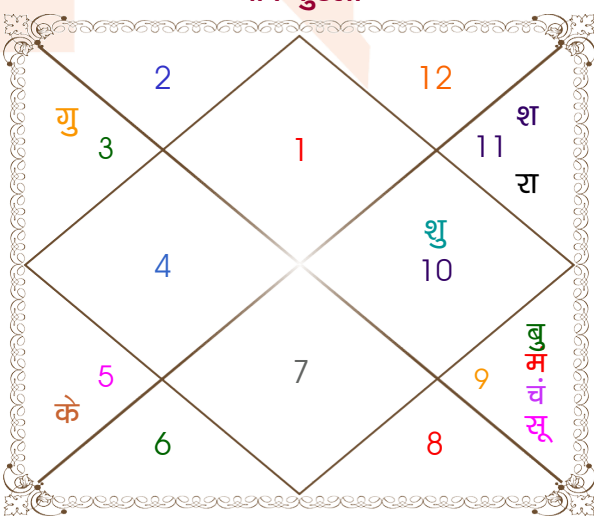

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	मृत	खल	सभा	4.61	40 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	युवा	शान्त	आगमन	1.06	40 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	मृत	विकल	शयन	0.00	32 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	विकल	नृत्यलिप्सा	0.00	48 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	खल	उपवेशन	2.64	69 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	मृत	विकल	नृत्यलिप्सा	5.84	59 %
शनि	मातृ	आयु	मृत	शान्त	गमन	1.56	39 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	नृत्यलिप्सा	0.00	64 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	शयन	0.00	64 %
कुल						15.72	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

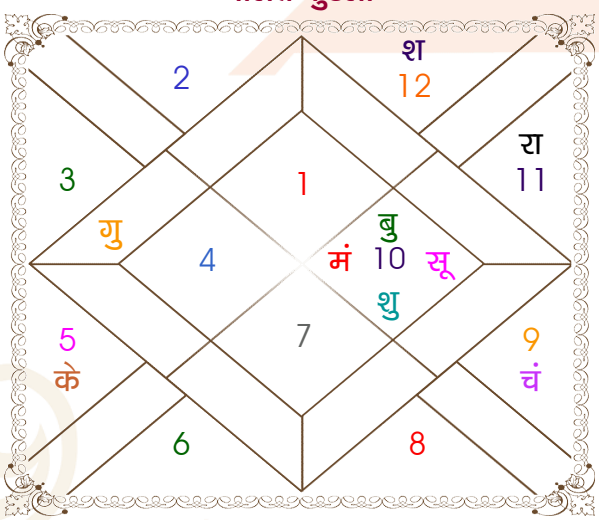

लग्न-चलित

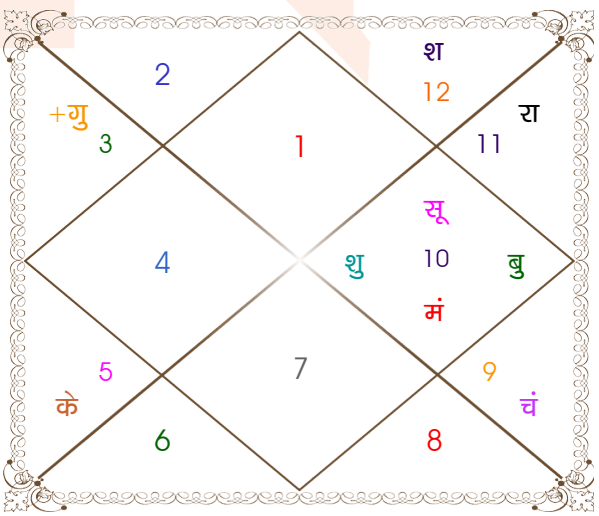

सुदर्शन चक्र

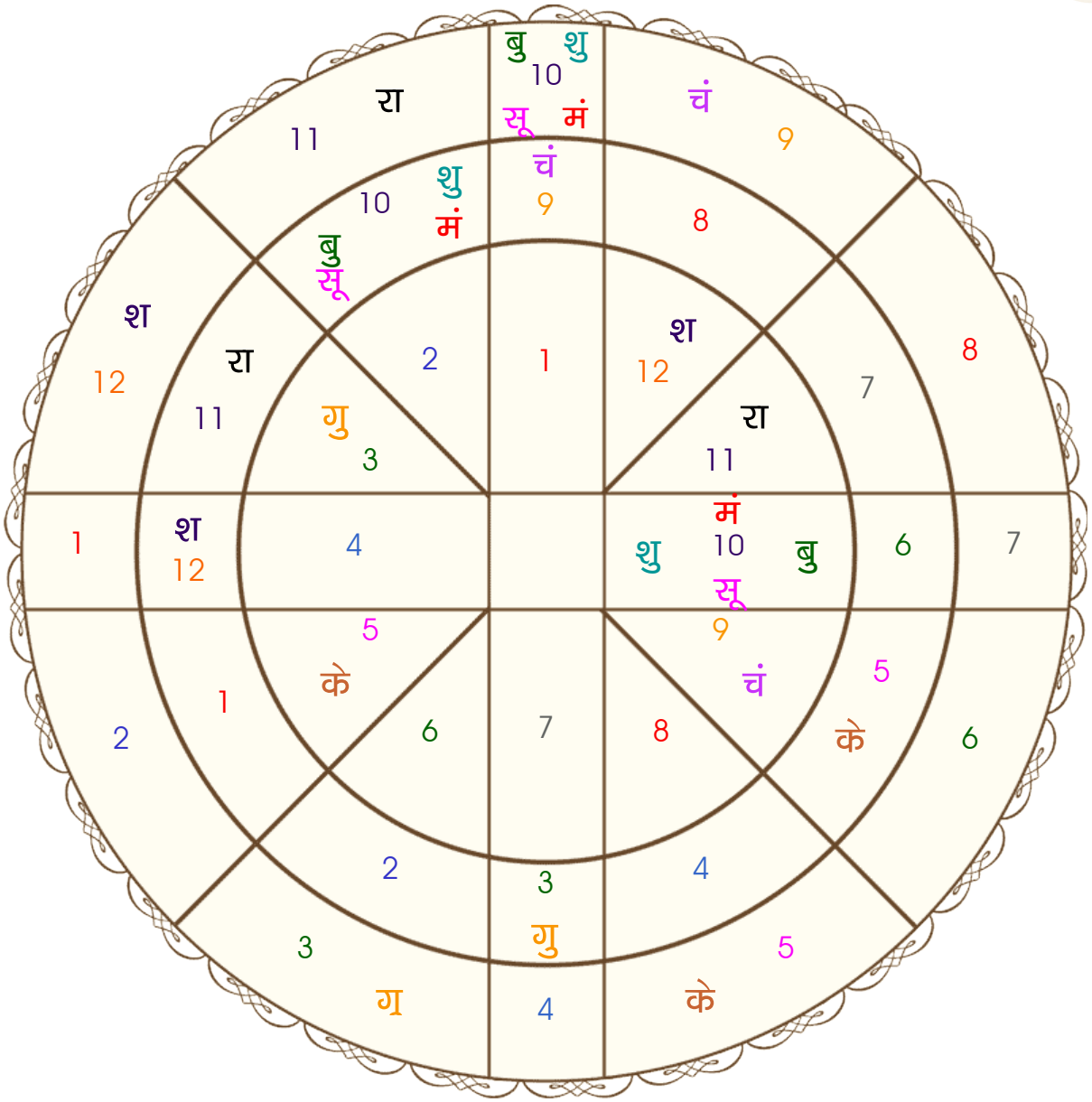

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 16 वर्ष 5 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	03:03:34	शनि	सूर्य	शनि	शनि
चंद्र		धनु	15:42:17	गुरु	शुक्र	सूर्य	राहु
मंगल		मक	01:08:55	शनि	सूर्य	राहु	मंगल
बुध		मक	00:15:44	शनि	सूर्य	राहु	बुध
गुरु	व	मिथु	25:03:47	बुध	गुरु	बुध	राहु
शुक्र		मक	05:35:37	शनि	सूर्य	बुध	शुक्र
शनि		मीन	03:11:51	गुरु	गुरु	राहु	चंद्र
राहु	व	कुंभ	15:34:49	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र
केतु	व	सिंह	15:34:49	सूर्य	शुक्र	सूर्य	सूर्य
हर्ष	व	वृष	03:28:57	शुक्र	सूर्य	शनि	बुध
नेप		मीन	05:39:57	गुरु	शनि	बुध	बुध
प्लूटो		मक	09:06:44	शनि	सूर्य	शुक्र	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	18:16:08	मंगल	शुक्र	राहु	राहु
2	वृष	17:11:18	शुक्र	चंद्र	शनि	राहु
3	मिथु	11:09:06	बुध	राहु	शनि	केतु
4	कर्क	04:56:15	चंद्र	शनि	शनि	राहु
5	सिंह	02:30:17	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
6	कन्या	07:25:45	बुध	सूर्य	केतु	राहु
7	तुला	18:16:08	शुक्र	राहु	चंद्र	राहु
8	वृश्चि	17:11:18	मंगल	बुध	बुध	शुक्र
9	धनु	11:09:06	गुरु	केतु	शनि	राहु
10	मक	04:56:15	शनि	सूर्य	शनि	गुरु
11	कुंभ	02:30:17	शनि	मंगल	केतु	शनि
12	मीन	07:25:45	गुरु	शनि	केतु	शुक्र

के.पी. अयनांश : 24:06:52

फॉरच्युना : मेष 00:54:51

लग्न कुंडली

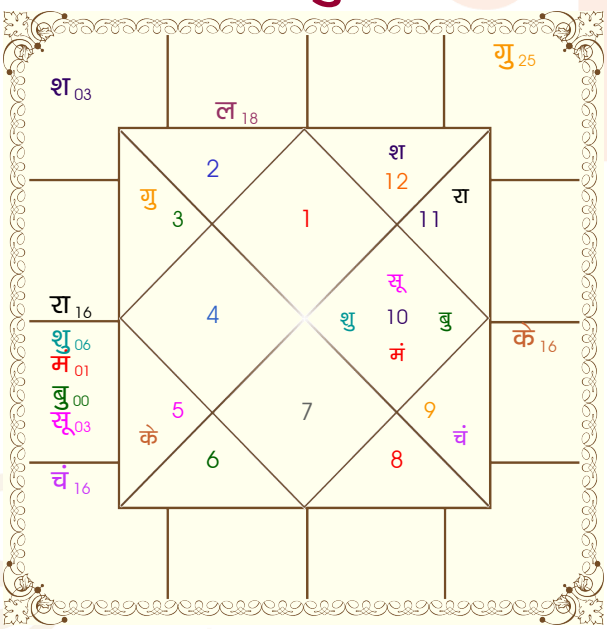

भाव कुंडली

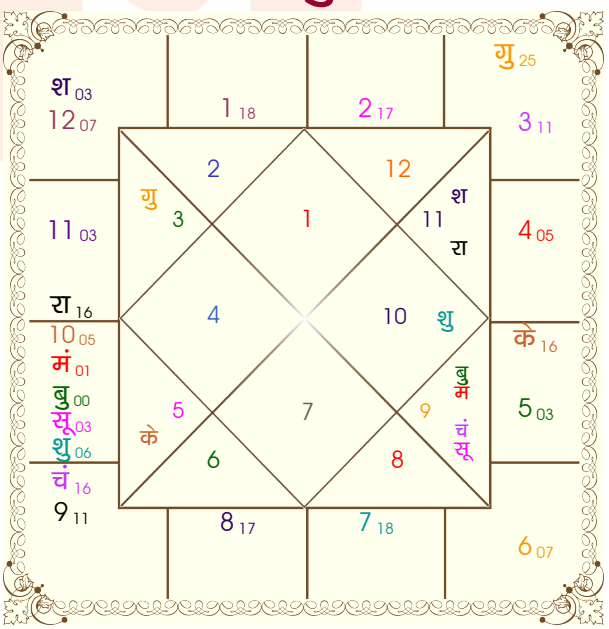

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल-
2	चंद्र- शुक्र- केतु-
3	बुध- गुरु+ शनि,
4	चंद्र-
5	सूर्य, मंगल- बुध- शुक्र- केतु,
6	बुध-
7	चंद्र- शुक्र- केतु-
8	मंगल-
9	सूर्य+ चंद्र, मंगल+ बुध+ गुरु, शुक्र, शनि-
10	चंद्र, शुक्र, शनि- केतु,
11	शनि, राहु+
12	गुरु, शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5, 9+
चंद्र	2- 4- 7- 9, 10,
मंगल	1- 5- 8- 9+
बुध	3- 5- 6- 9+
गुरु	3+ 9, 12,
शुक्र	2- 5- 7- 9, 10,
शनि	3, 9- 10- 11, 12-
राहु	11+
केतु	2- 5, 7- 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	मं
2	--	--	चं के	शु
3	गु श	गु	--	बु
4	--	--	--	चं
5	--	के	सू मं बु शु	सू
6	--	--	--	बु
7	--	--	चं के	शु
8	--	--	--	मं
9	सू मं बु शु	सू चं मं बु	गु श	गु
10	चं के	शु	--	श
11	रा	श रा	--	श
12	--	--	गु श	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	6,10	मकर	9
चंद्र	4	2	धनु	9
मंगल	1,8	11	मकर	9
बुध	3,6	8	मकर	9
गुरु	9,12	---	मिथुन	3
शुक्र	2,7	1	मकर	10
शनि	10,11	4,12	मीन	11
राहु	---	3,7	कुम्भ	11
केतु	---	5,9	सिंह	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5	6,10	9	10,11	4,12	11
चंद्र	2,7	1	10	5	6,10	9
मंगल	5	6,10	9	---	3,7	11
बुध	5	6,10	9	---	3,7	11
गुरु	9,12	---	3	3,6	8	9
शुक्र	5	6,10	9	3,6	8	9
शनि	9,12	---	3	---	3,7	11
राहु	---	3,7	11	2,7	1	10
केतु	2,7	1	10	5	6,10	9

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	272.95	255.60	271.04	270.15	84.95	275.49	333.09	315.47	135.47	33.37	335.56	279.00
सूर्य	--	--	युति	युति	सप्त	युति	तृती	--	--	पंच	तृती	युति
272.95	0.00	0.00	9.80	9.57	6.69	9.65	3.00	0.00	0.00	2.98	2.33	8.06
चंद्र	--	--	--	युति	सप्त	--	--	तृती	--	--	--	--
255.60	0.00	0.00	0.00	0.46	5.57	0.00	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	युति	--	--	युति	सप्त	युति	तृती	अष्ट	8वां	पंच	तृती	युति
271.04	9.80	0.00	0.00	9.96	8.04	8.94	2.58	0.63	0.59	2.46	1.14	6.72
बुध	युति	युति	युति	--	सप्त	युति	तृती	अष्ट	--	पंच	तृती	युति
270.15	9.57	0.46	9.96	0.00	8.55	8.48	2.16	0.88	0.00	2.00	0.47	6.00
गुरु	सप्त	सप्त	सप्त	सप्त	--	सप्त	9वां	9वां	--	--	9वां	सप्त
84.95	6.69	5.57	8.04	8.55	0.00	4.51	6.59	5.46	0.00	0.00	4.44	0.99
शुक्र	युति	--	युति	युति	सप्त	--	तृती	नवां	--	पंच	तृती	युति
275.49	9.65	0.00	8.94	8.48	4.51	0.00	2.43	1.00	0.00	2.55	3.00	9.33
शनि	--	10वा	--	--	--	--	--	--	--	3रा	युति	--
333.09	0.00	2.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	9.67	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
315.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	पंच	अष्टां	अष्टां	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
135.47	0.00	3.00	0.63	0.88	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
33.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	तृती	--	--
335.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.67	0.00	0.00	2.52	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	युति	युति	सप्त	युति	तृती	--	--	पंच	तृती	--
279.00	8.06	0.00	6.72	6.00	0.99	9.33	0.07	0.00	0.00	0.29	1.86	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	18.16	43.72	69.27	94.83	129.27	163.72	198.16	223.72	249.27	274.83	309.27	343.72
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
272.95	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	0.00
चंद्र	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु
255.60	2.35	0.00	7.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.89	0.00	0.00	2.64
मंगल	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	पंचा
271.04	0.00	0.00	0.00	9.22	6.51	0.00	0.00	0.00	0.00	9.22	0.00	0.49
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
270.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.83	0.19	0.00
गुरु	--	--	--	युति	--	--	5वां	--	--	सप्त	--	--
84.95	0.00	0.00	0.00	5.11	0.00	0.00	7.57	0.00	0.00	5.11	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
275.49	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	0.00
शनि	3रा	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति
333.09	0.07	4.42	0.00	2.69	0.00	4.42	0.00	0.00	7.98	0.00	0.00	4.42
राहु	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
315.47	2.29	2.69	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
135.47	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	2.29	2.69	0.00	0.00	7.97	0.00
हर्ष	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--
33.37	0.00	4.69	0.00	2.79	0.08	0.00	0.00	4.69	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
335.56	0.00	0.00	1.69	2.95	0.00	6.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.57
प्लूटो	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
279.00	0.00	0.99	0.91	9.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	18.16	47.08	71.04	94.83	122.40	157.32	198.16	227.08	251.04	274.83	302.40	337.32
सूर्य	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
272.95	0.00	0.20	0.00	9.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	1.24
चंद्र	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
255.60	2.35	0.00	8.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.88	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	--
271.04	0.00	0.00	0.00	9.22	9.90	0.00	0.00	0.00	0.00	9.22	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
270.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.83	0.00	0.00
गुरु	--	--	युति	युति	--	पंचा	5वां	--	सप्त	सप्त	--	9वां
84.95	0.00	0.00	1.14	5.11	0.00	0.84	7.57	0.00	1.14	5.11	0.00	2.72
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
275.49	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	2.66
शनि	3रा	3रा	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति
333.09	0.07	1.06	0.00	2.69	0.46	9.03	0.00	0.00	6.73	0.00	0.00	9.03
राहु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
315.47	2.29	2.74	1.20	0.00	2.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.00	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
135.47	0.00	0.00	0.00	0.00	2.00	0.00	2.29	2.74	0.00	0.00	2.00	0.00
हर्ष	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
33.37	0.00	1.35	0.00	2.79	2.90	1.54	0.00	1.35	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	पंचा	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
335.56	0.00	0.73	0.40	2.95	0.00	9.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.83
प्लूटो	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
279.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

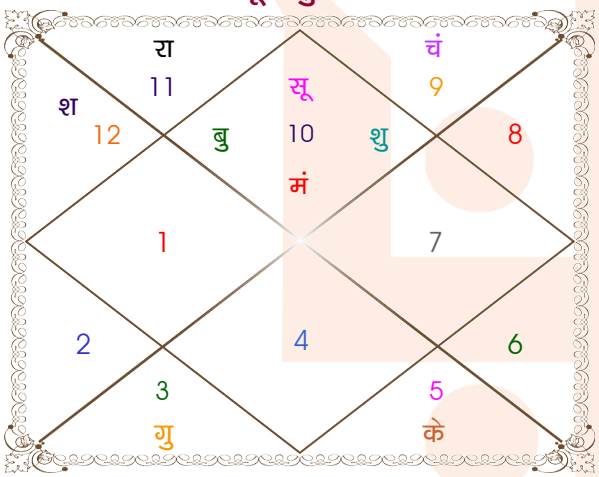

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

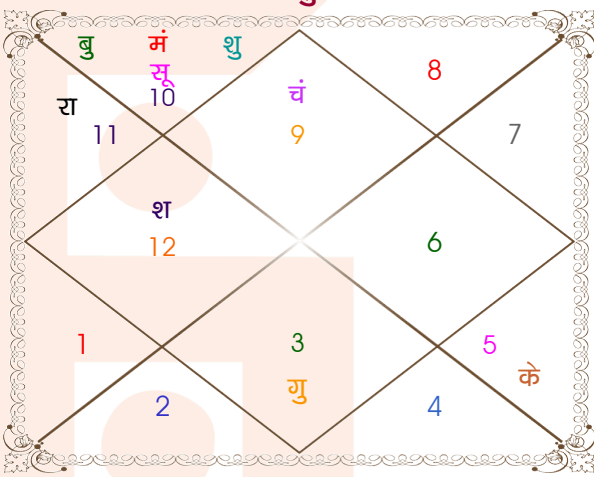

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

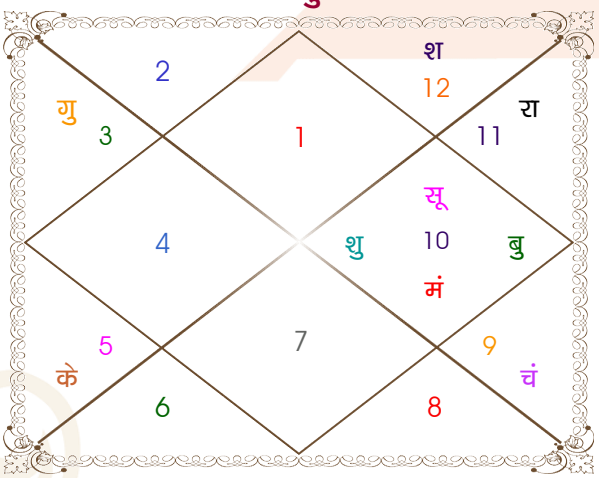

देह विचारः

होरा कुंडली

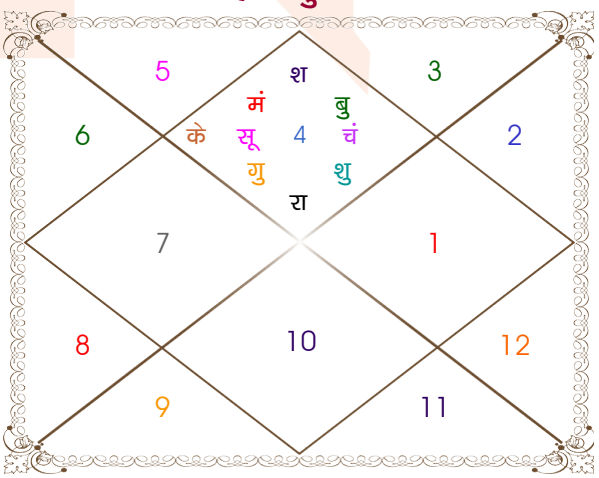

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

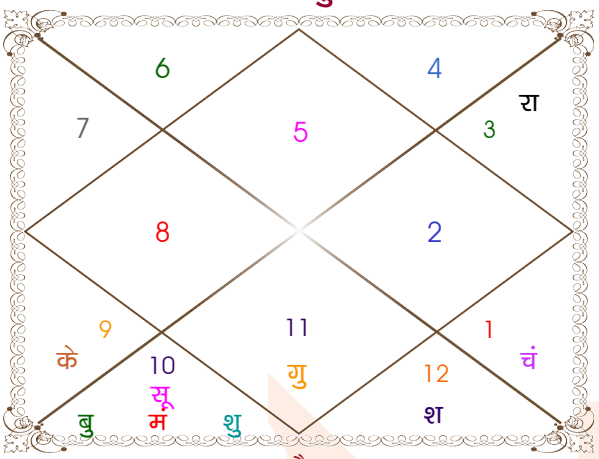

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

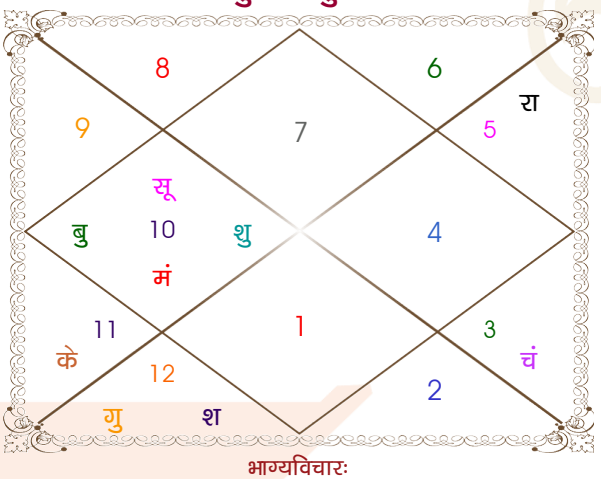

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

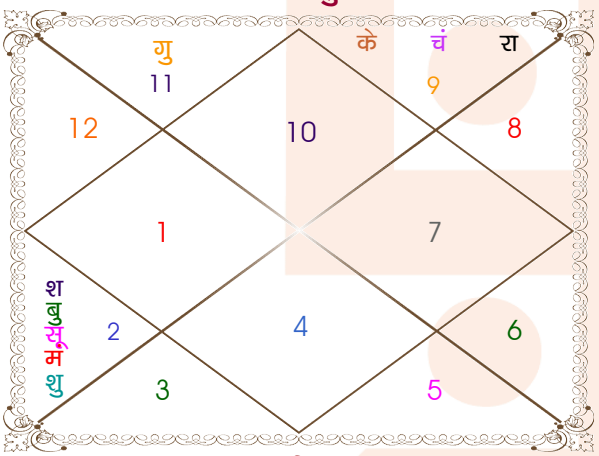

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

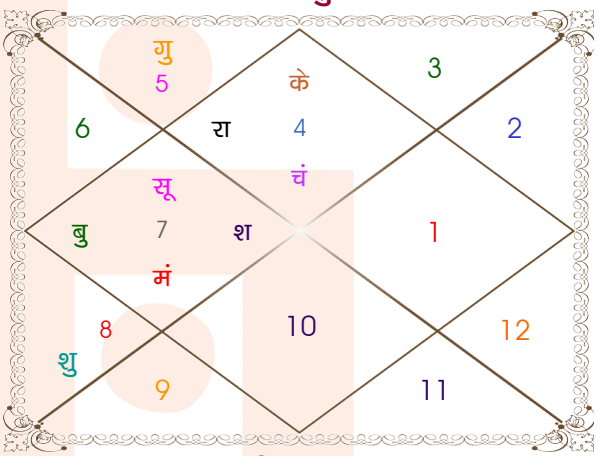

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

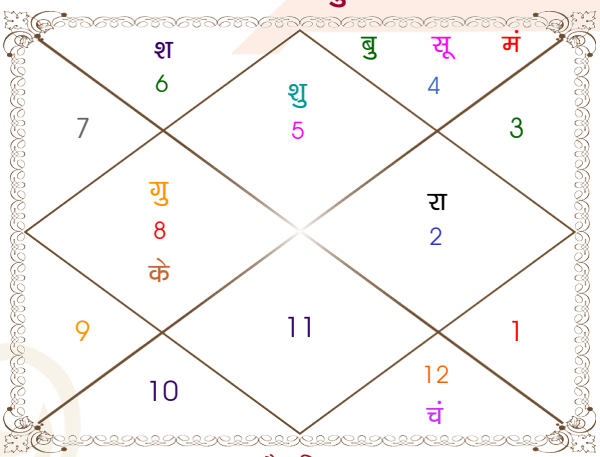

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

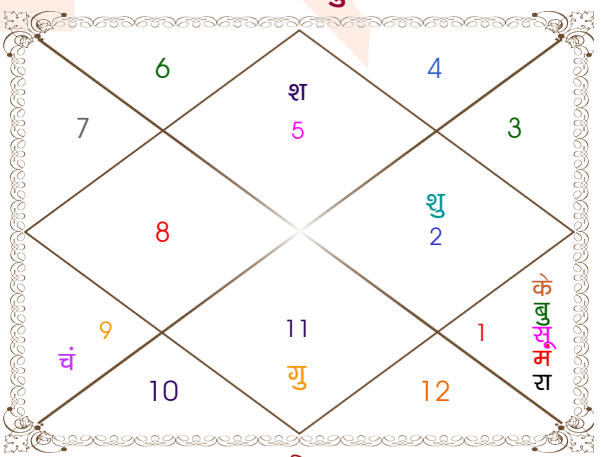

आयुविचारः

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

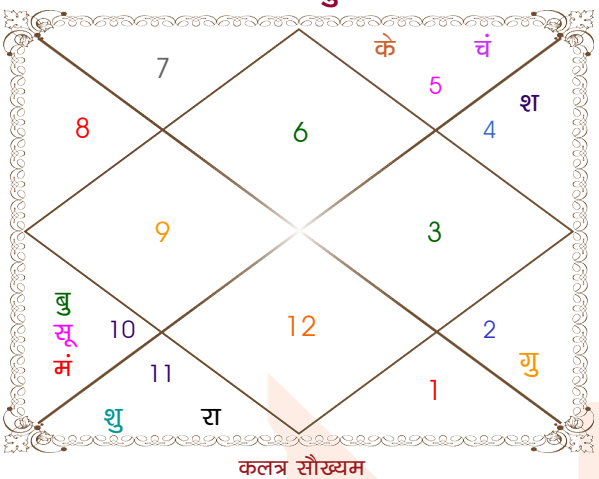

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

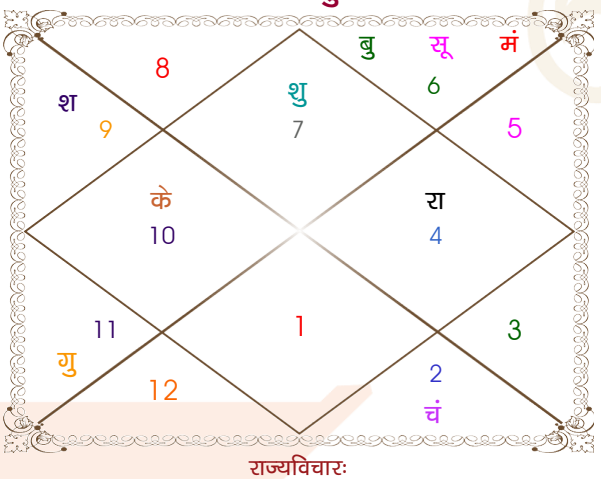

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

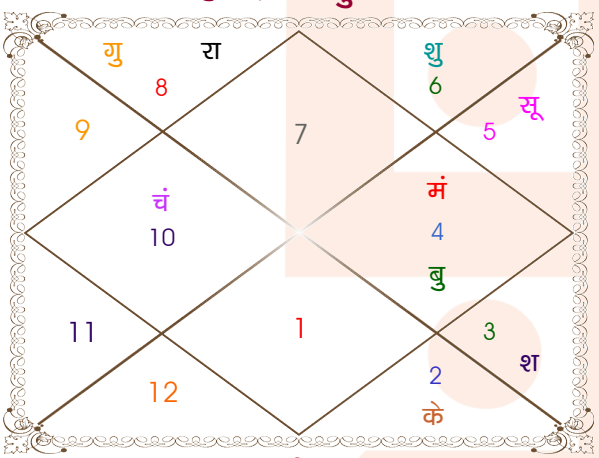

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

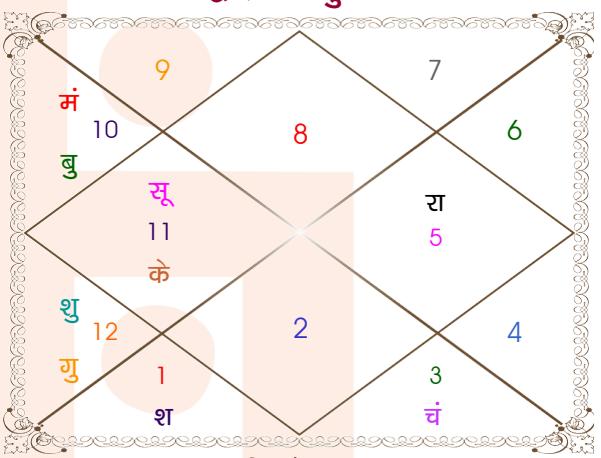

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

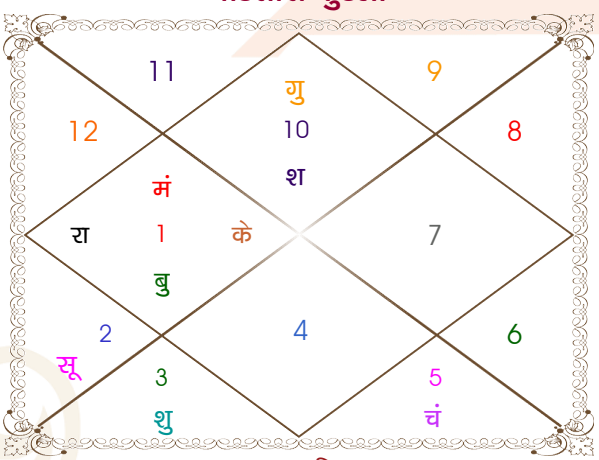

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

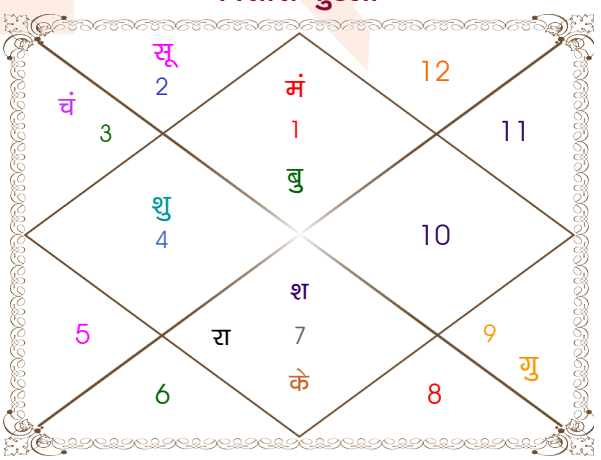

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

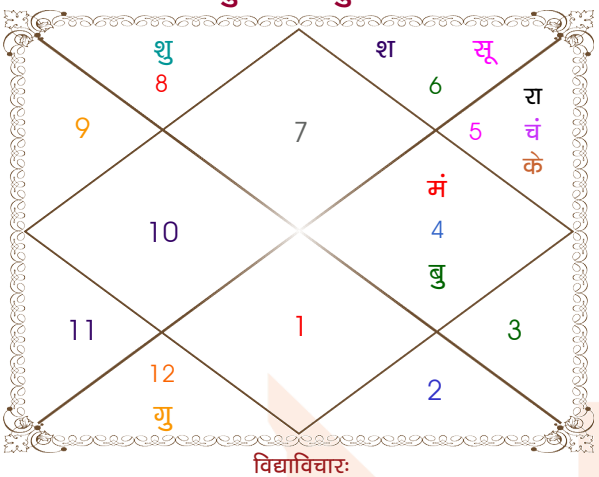

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

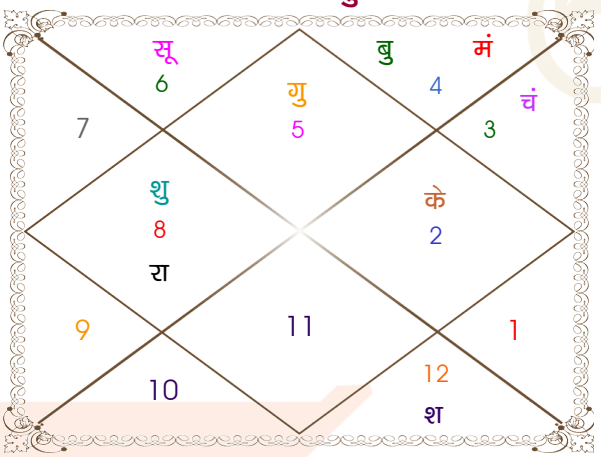

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

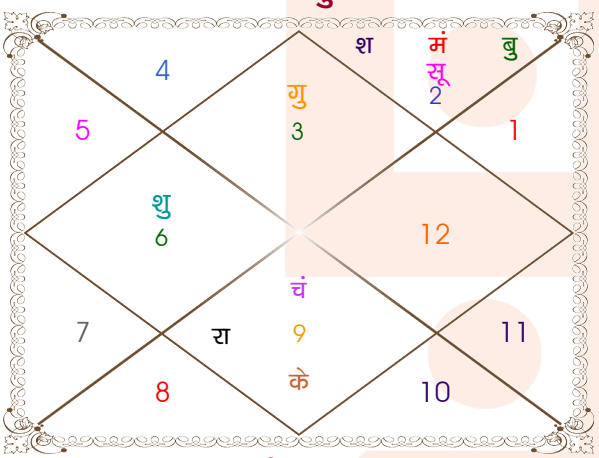

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

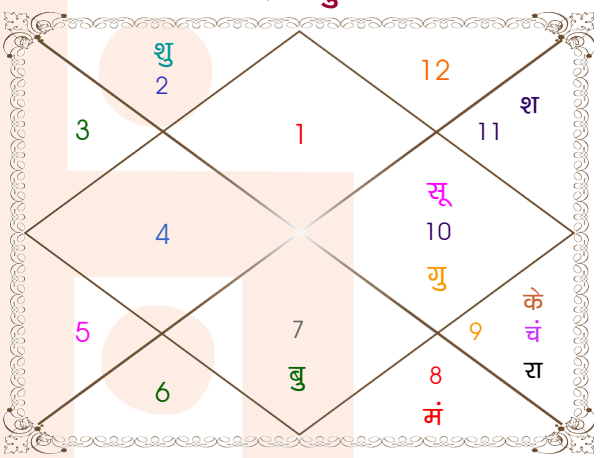

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

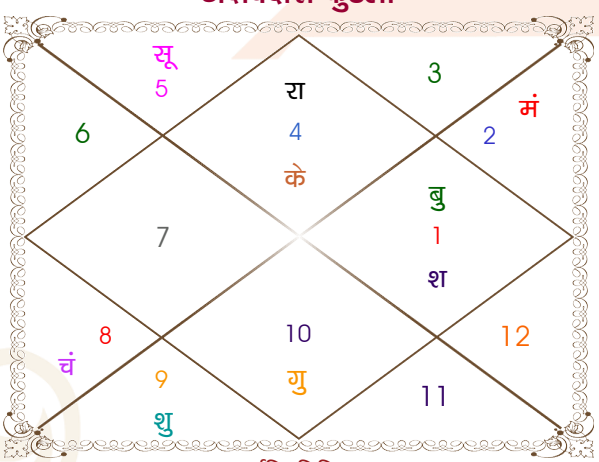

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

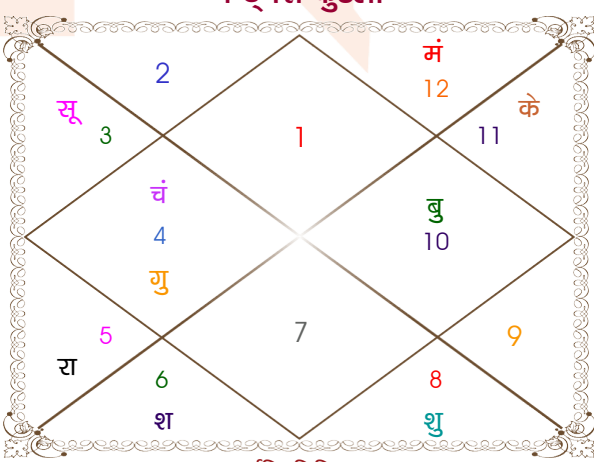

सर्वास्थितिविचारः

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मेष	मक	धनु	मक	मक	मिथु	मक	मीन	कुंभ	सिंह
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	सिंह	मक	मेष	मक	मक	कुंभ	मक	मीन	मिथु	धनु
चतुर्थांश	तुला	मक	मिथु	मक	मक	मीन	मक	मीन	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	सिंह	कर्क	मीन	कर्क	कर्क	वृश्चि	सिंह	कन्या	वृष	वृश्चि
नवमांश	कन्या	मक	सिंह	मक	मक	वृष	कुंभ	कर्क	कुंभ	सिंह
दशमांश	तुला	कन्या	वृष	कन्या	कन्या	कुंभ	तुला	धनु	कर्क	मक
द्वादशांश	वृश्चि	कुंभ	मिथु	मक	मक	मीन	मीन	मेष	सिंह	कुंभ
षोडशांश	मक	वृष	सिंह	मेष	मेष	मक	मिथु	मक	मेष	मेष
विंशांश	मेष	वृष	मिथु	मेष	मेष	धनु	कर्क	तुला	तुला	तुला
चतुर्विंशांश	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	कर्क	मीन	वृश्चि	कन्या	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	सिंह	कन्या	मिथु	कर्क	कर्क	सिंह	वृश्चि	मीन	वृश्चि	वृष
त्रिंशांश	मिथु	वृष	धनु	वृष	वृष	मिथु	कन्या	वृष	धनु	धनु
खवेदांश	मेष	मक	धनु	वृश्चि	तुला	मक	वृष	कुंभ	धनु	धनु
अक्षवेदांश	कर्क	सिंह	वृश्चि	वृष	मेष	मक	धनु	मेष	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	मेष	मिथु	कर्क	मीन	मक	कर्क	वृश्चि	कन्या	सिंह	कुंभ

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	4 चामर	4 चामर	5 सिंहान	8 चन्दनवन
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.55	13.75	14.90	14.25	9.00	15.70	12.90	15.25	7.50
सप्तवर्ग	11.55	13.08	15.28	13.63	9.13	14.08	13.40	15.40	7.63
दशवर्ग	9.48	14.90	13.23	13.65	10.38	11.80	15.45	12.55	7.25
षोडशवर्ग	9.15	15.18	14.28	12.93	10.25	12.68	15.35	13.03	7.13

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	शत्रु	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	28	14	51	25	57	33	16
सप्तवर्गज बल	77	101	109	83	66	88	98
ओजयुग्मक बल	0	0	0	0	15	15	0
केन्द्र बल	60	15	60	60	15	60	15
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	180	130	235	167	152	196	128
कुल दिग्बल	59	6	59	24	38	0	15
नतोन्नत बल	59	1	1	60	59	59	1
पक्ष बल	54	108	54	54	6	6	54
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	7	60	3	57	58	4	31
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	180	169	58	232	228	69	131
कुल चेष्टाबल	0	0	0	7	57	2	22
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	3	-3	3	3	-48	14	-3
कुल षट्बल	482	354	371	458	462	324	301
रूप षट्बल	8.0	5.9	6.2	7.6	7.7	5.4	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.0	1.2	1.1	1.2	1.0	1.0
संबंधित पद	1	6	2	4	3	7	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	15.83	9.06	0.65	13.02	56.83	8.64	18.35
कष्ट फल	40.59	49.83	23.22	43.19	3.17	39.60	41.30

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	371	324	458	354	482	458	324	371	462	301	301	462
भावदिग्बल	30	20	40	60	10	10	0	50	20	60	40	20
भावदृष्टि बल	18	-5	-9	23	23	34	29	35	14	55	38	61
कुल भाव बल	419	339	489	437	514	502	353	456	496	416	379	543
रूप भाव बल	7.0	5.6	8.1	7.3	8.6	8.4	5.9	7.6	8.3	6.9	6.3	9.0
संबंधित पद	8	12	5	7	2	3	11	6	4	9	10	1

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

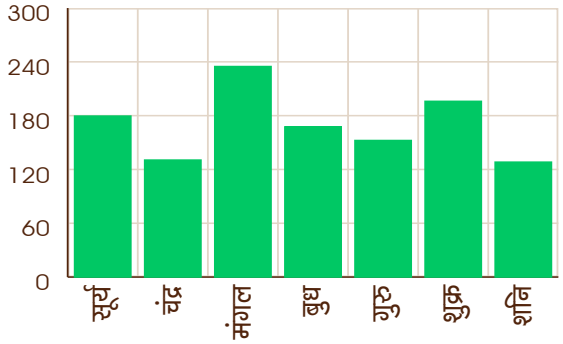

दिग्बल

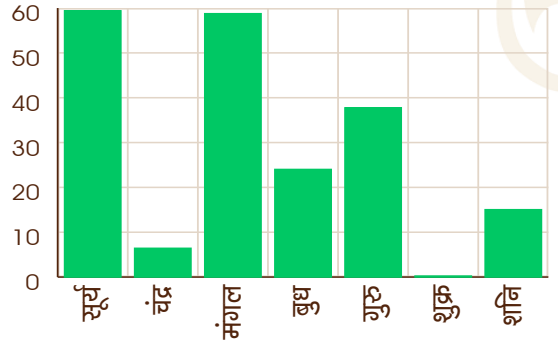

कालबल

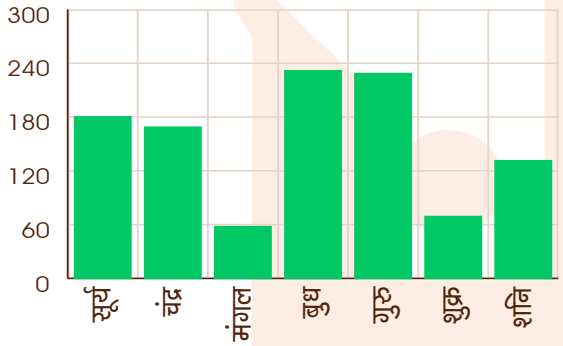

चेष्टाबल

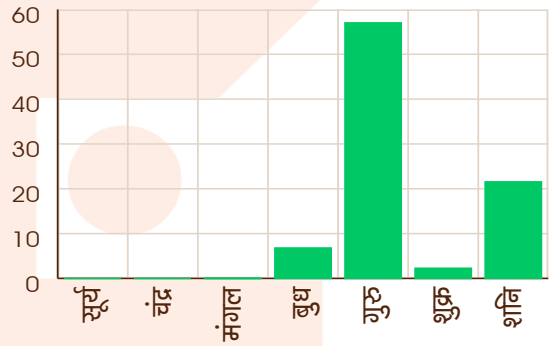

नैसर्गिक बल

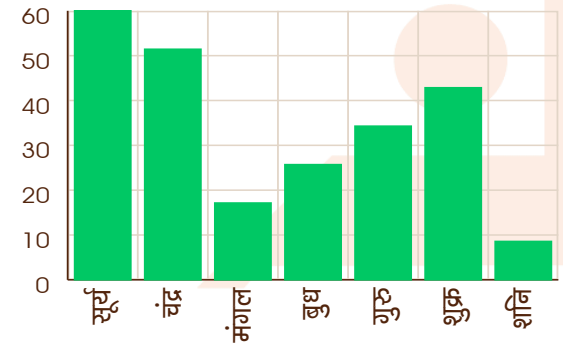

दृग्बल

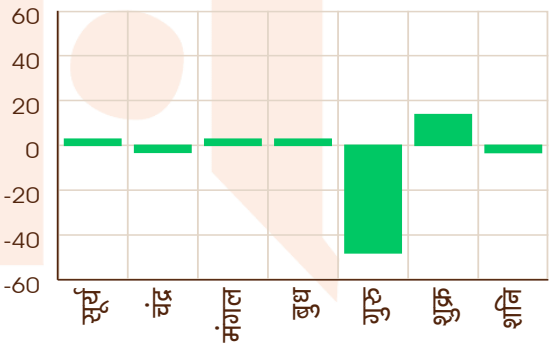

रूप षट्बल

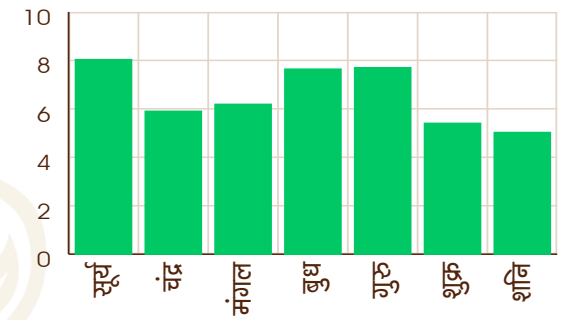

न्यूनतम षट्बल

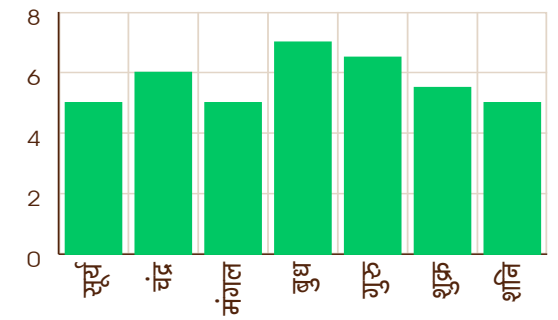

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

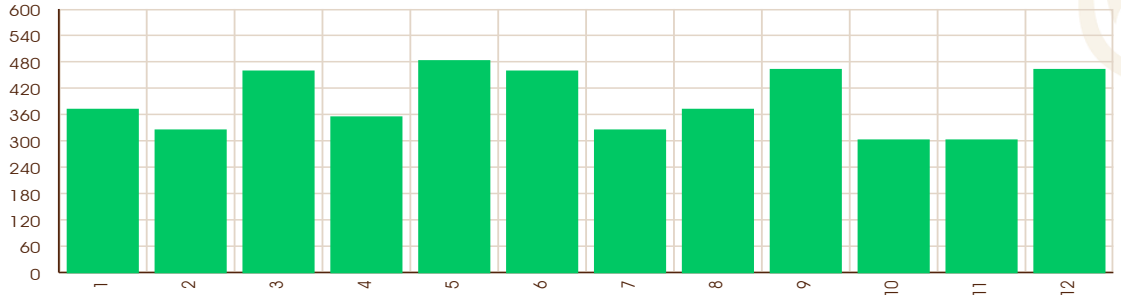

भावदिग्बल

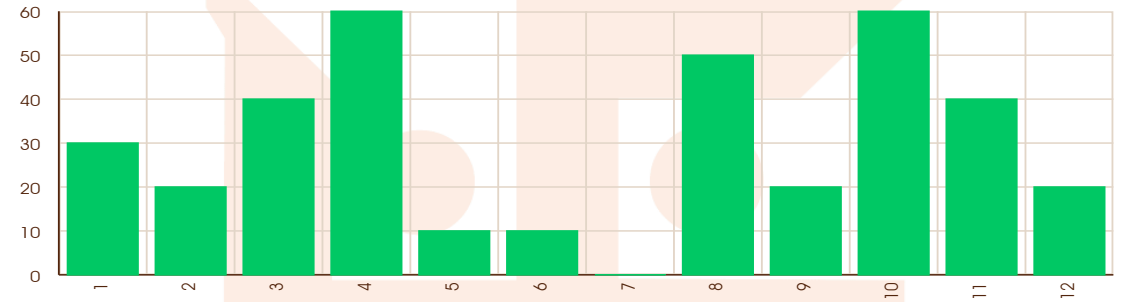

भावदृष्टि बल

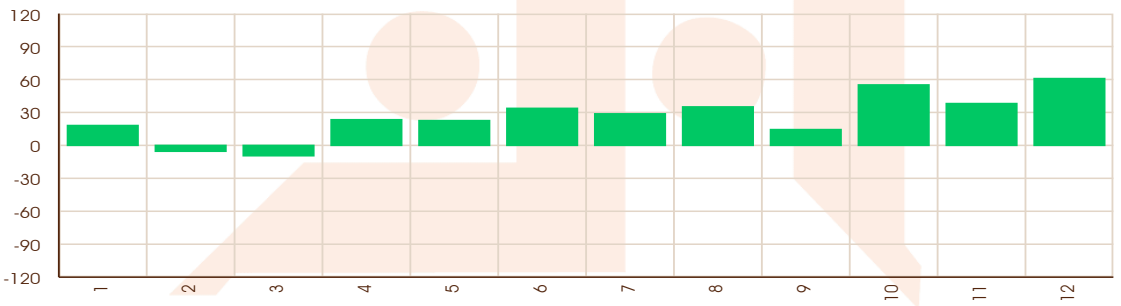

भाव बल

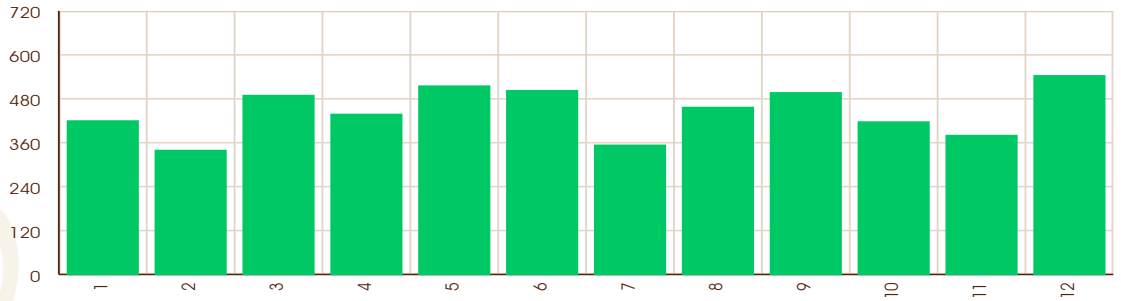

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

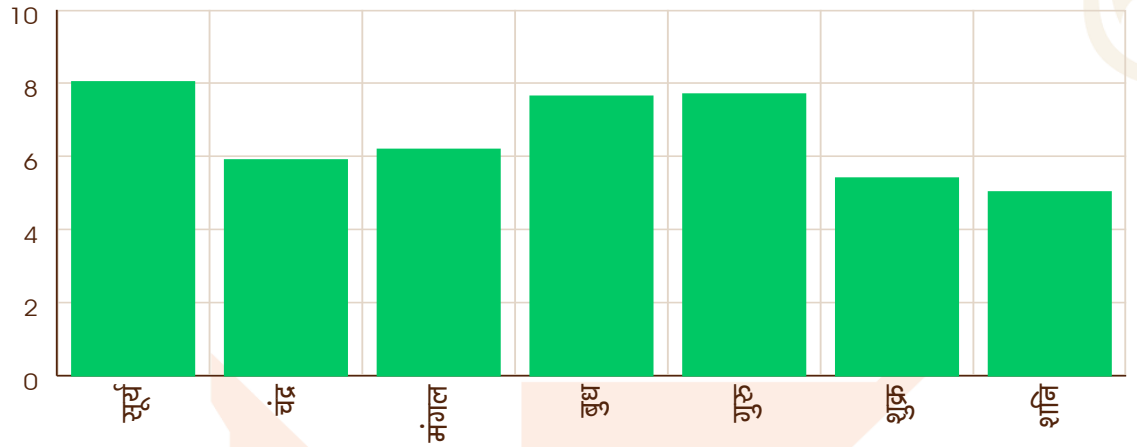

इष्ट – कष्ट फल

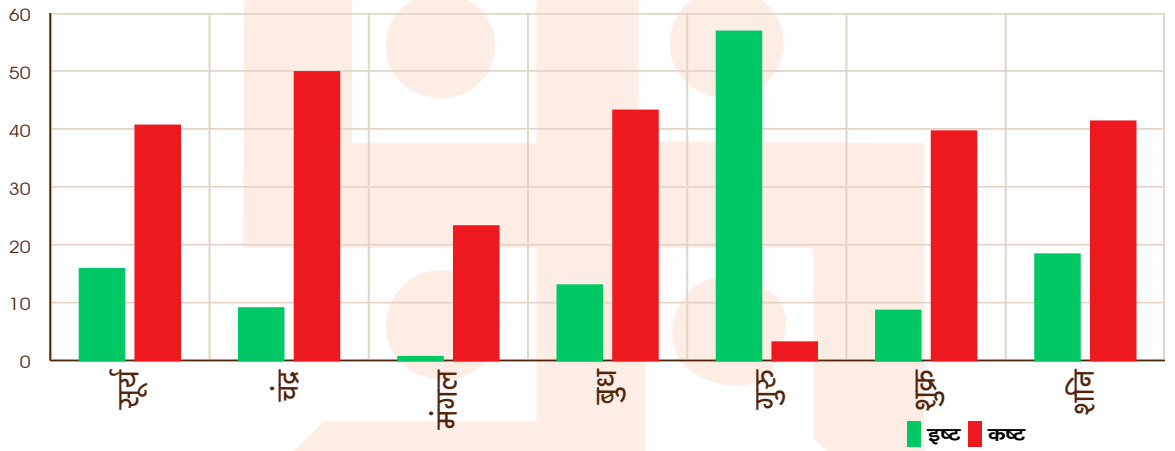

रूप भाव बल

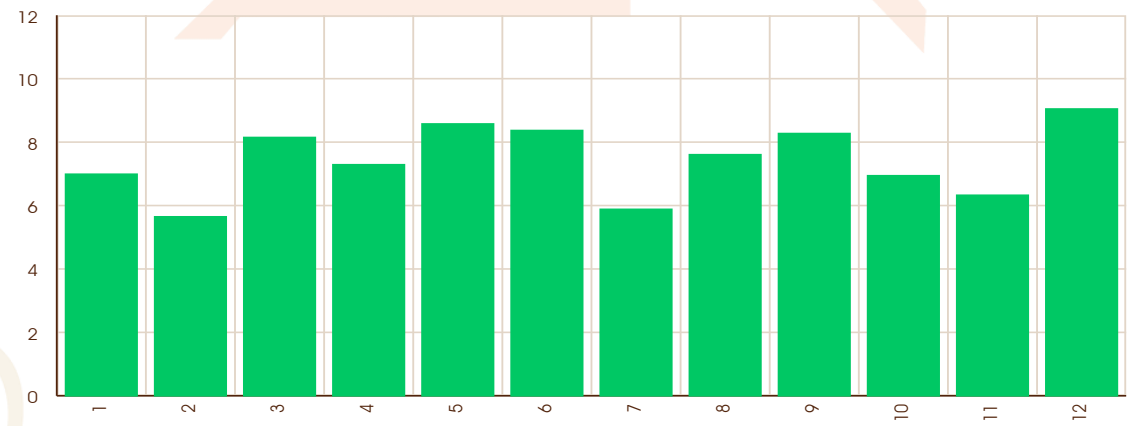

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मेष	18:09:39	--	--	भरणी	2	2
गुलिक	गु	मक	24:37:48	--	--	धनिष्ठा	1	23
काल	का	कुंभ	21:03:06	--	--	पू०भाद्रपद	1	25
मृत्यु	मृ	मेष	15:46:01	--	--	भरणी	1	2
यमघंटक	यम	वृष	29:08:19	--	--	मृगशिरा	2	5
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृष	08:53:10	--	--	कृतिका	4	3
धूम	धू	वृष	16:17:05	--	--	रोहिणी	2	4
व्यतिपात	व्य	कुंभ	13:42:55	--	--	शतभिषा	3	24
परिवेश	परि	सिंह	13:42:55	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	16:17:05	--	--	अनुराधा	4	17
उपकेतु	उप	धनु	02:57:05	--	--	मूल	1	19

प्राणपद	:	कर्क	02:52:52	कारकाँश लग्न	:	वृष	14:35:39
भाव लग्न	:	मीन	23:56:52	होरा लग्न	:	मिथु	14:56:40
घटी लग्न	:	कुंभ	17:56:02	वर्णद लग्न	:	धनु	26:53:41

उपग्रह कुंडली

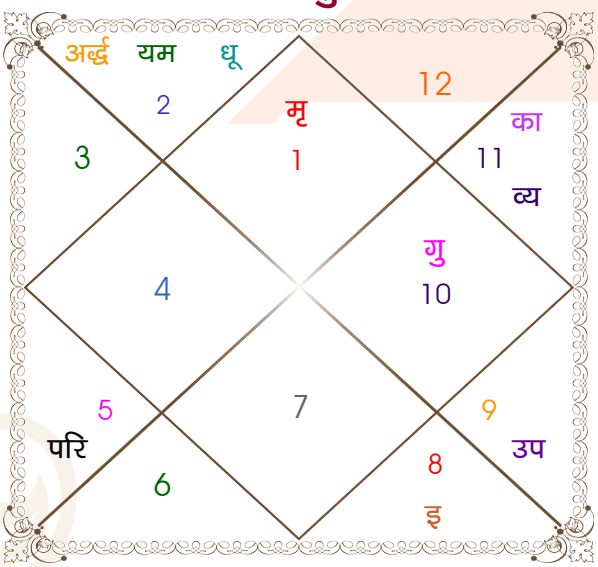

आरूढ़ कुंडली

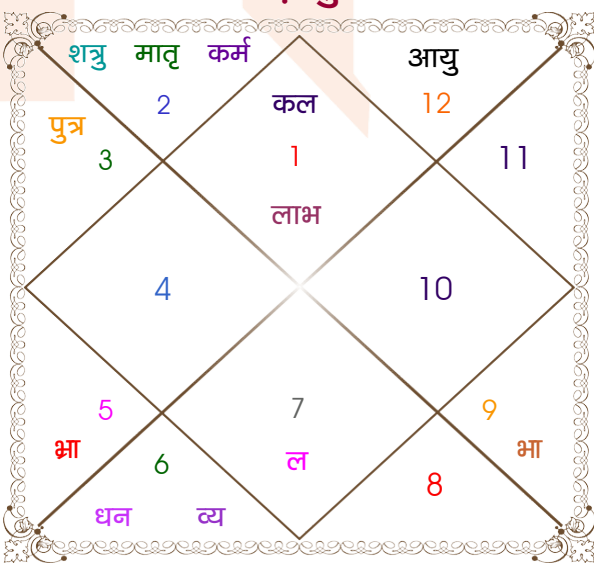

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

षन्नाडी चक्र

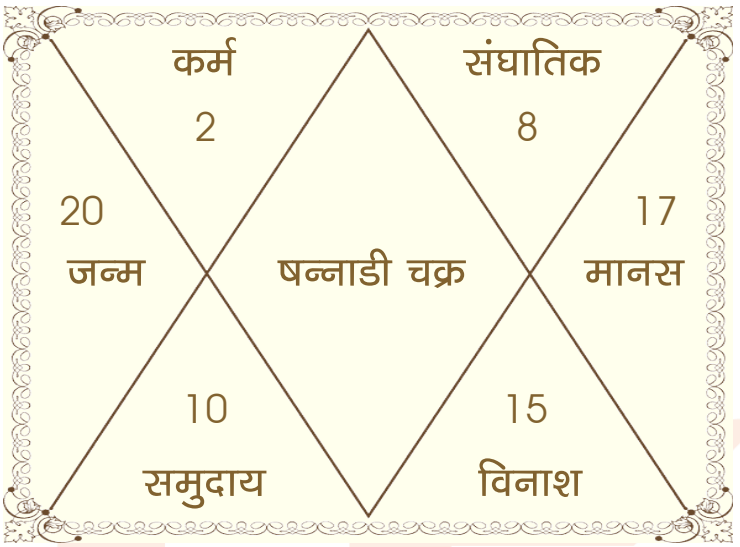

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	4	5	3	4	2	4	4	2	6	6	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
कुल	2	4	3	5	3	5	5	5	4	4	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	3	3	4	3	4	5	1	2	2	4	6	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	7	3	4	5	6	3	3	2	7	4	7	3	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	4	5	6	5	6	4	2	6	6	2	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	4	4	5	5	4	4	3	4	3	4	7	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	1	3	4	4	3	3	2	5	5	3	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	6	1	3	4	5	5	3	5	5	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	4	4	3	3	2	5	5	3	3	3	1	39
गुरु	6	4	4	5	6	5	6	4	2	6	6	2	56
मंगल	3	4	5	1	2	2	4	6	2	3	3	4	39
सूर्य	4	2	4	4	2	6	6	5	3	4	5	3	48
शुक्र	5	4	4	3	4	3	4	7	5	4	4	5	52
बुध	5	6	3	3	2	7	4	7	3	7	3	4	54
चंद्र	3	5	5	5	4	4	5	4	2	4	3	5	49
बिन्दु	29	29	29	24	23	29	34	38	20	31	27	24	337
रेखा	27	27	27	32	33	27	22	18	36	25	29	32	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	1	2	0	0	2	4	0	1	0	0	12
गुरु	4	0	0	3	4	1	2	2	0	2	2	0	20
मंगल	1	2	2	0	0	0	1	5	0	1	0	3	15
सूर्य	2	0	0	1	0	4	2	2	1	2	1	0	15
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	4	1	1	0	2	10
बुध	3	0	0	0	0	1	1	4	1	1	0	1	12
चंद्र	1	1	2	1	2	0	2	0	0	0	0	1	10
रेखा	12	6	5	7	6	6	10	21	3	8	3	7	94

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	2	0	0	0	4	0	1	0	0	8
गुरु	2	0	0	3	4	1	2	2	0	2	0	0	16
मंगल	1	1	2	0	0	0	1	4	0	1	0	3	13
सूर्य	0	0	0	1	0	4	2	0	1	2	0	0	10
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	3	1	1	0	2	9
बुध	3	0	0	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
चंद्र	1	1	2	1	2	0	1	0	0	0	0	1	9
रेखा	8	3	5	7	6	6	7	14	3	8	0	7	74

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	57	76	113	67	111	79	53
ग्रह पिंड	55	25	60	35	50	40	35
शोध्य पिंड	112	101	173	102	161	119	88

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

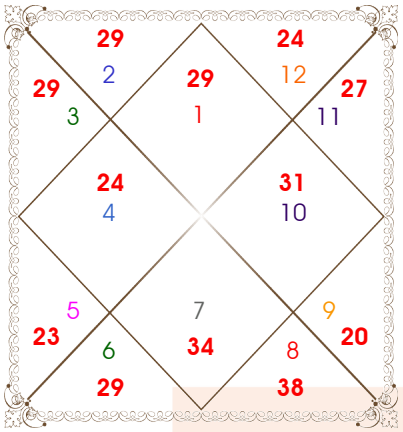

सूर्य का अष्टकवर्ग

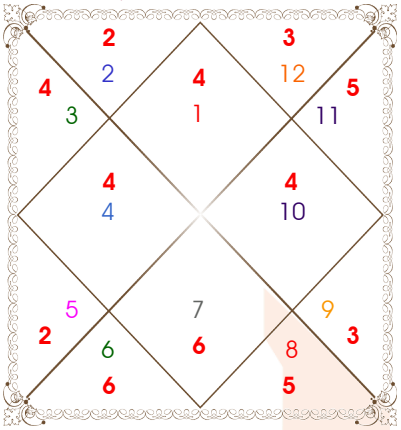

चंद्र का अष्टकवर्ग

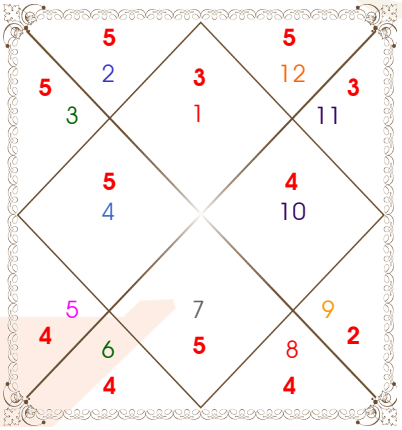

मंगल का अष्टकवर्ग

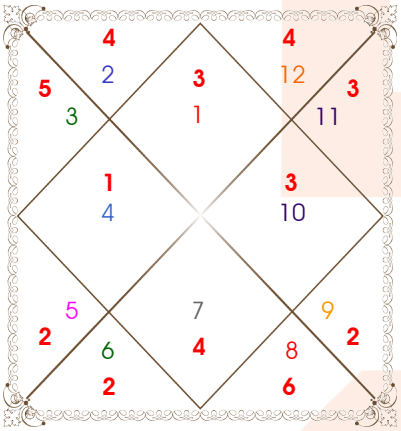

बुध का अष्टकवर्ग

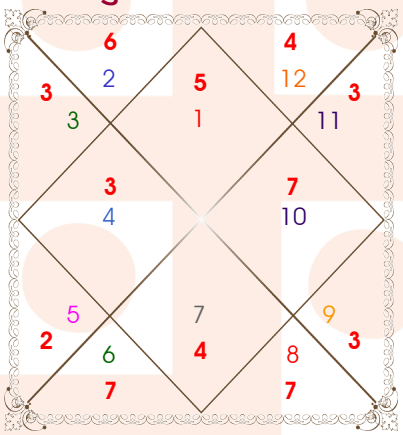

गुरू का अष्टकवर्ग

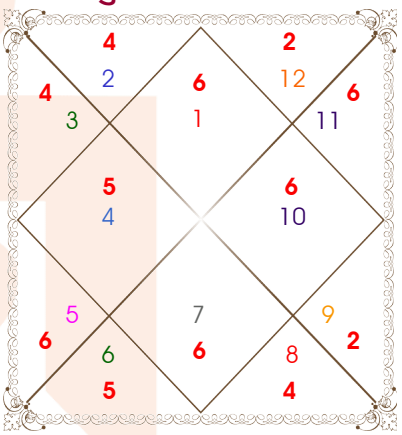

शुक्र का अष्टकवर्ग

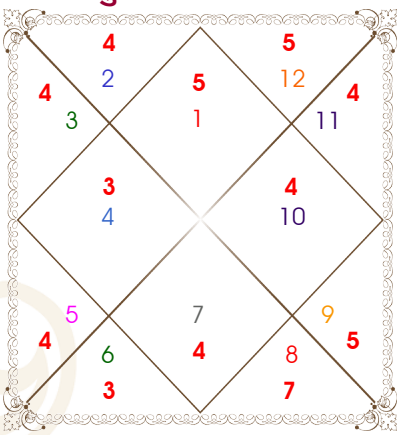

शनि का अष्टकवर्ग

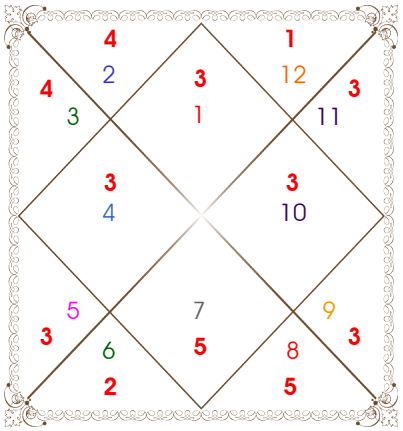

लग्न का अष्टकवर्ग

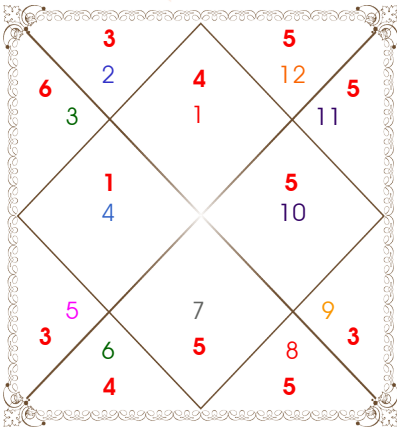

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

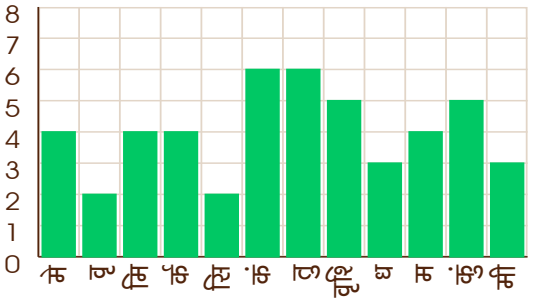

चन्द्र

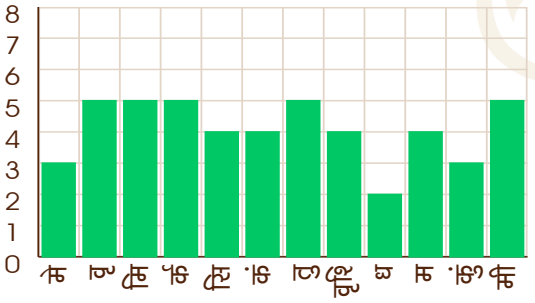

मंगल

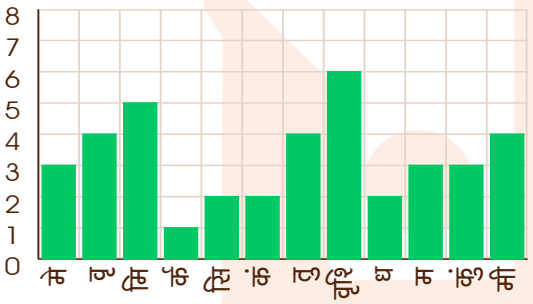

बुध

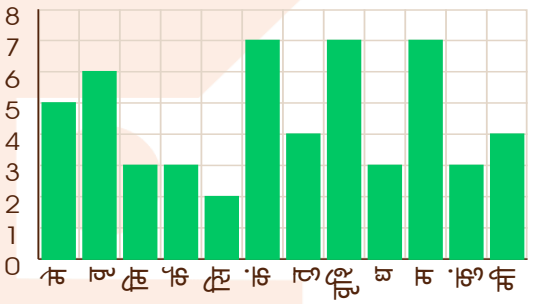

गुरु

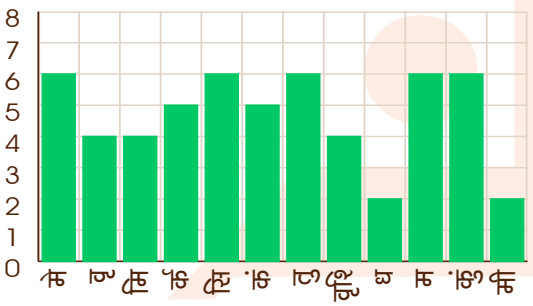

शुक्र

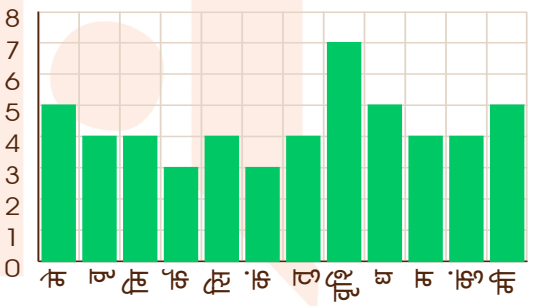

शनि

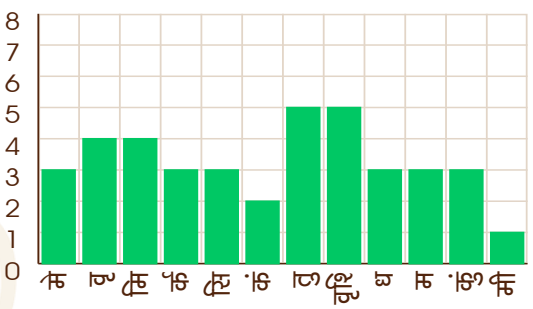

लग्न

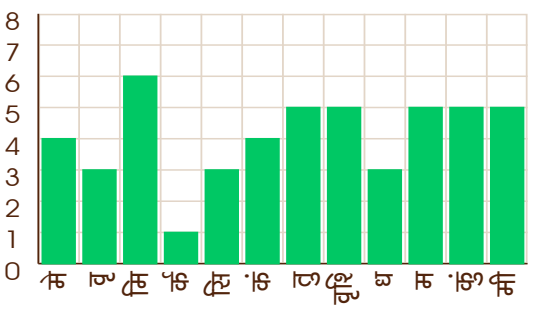

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

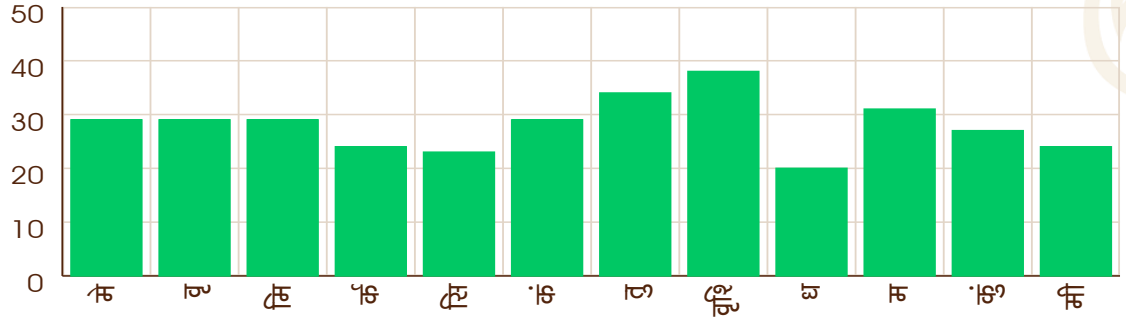

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

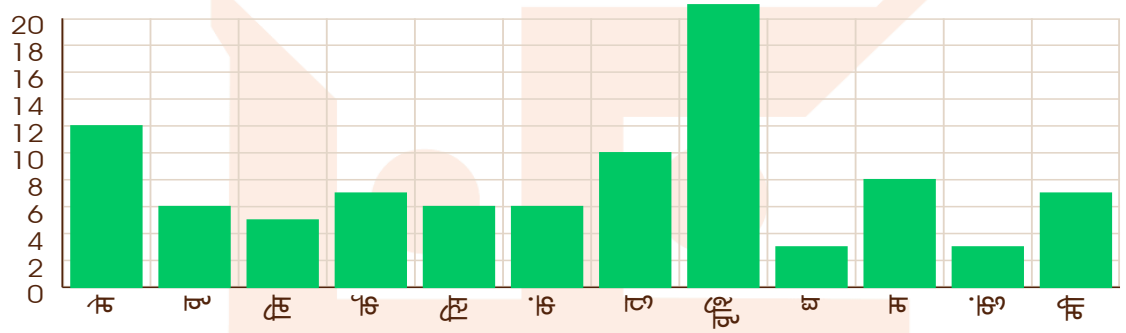

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

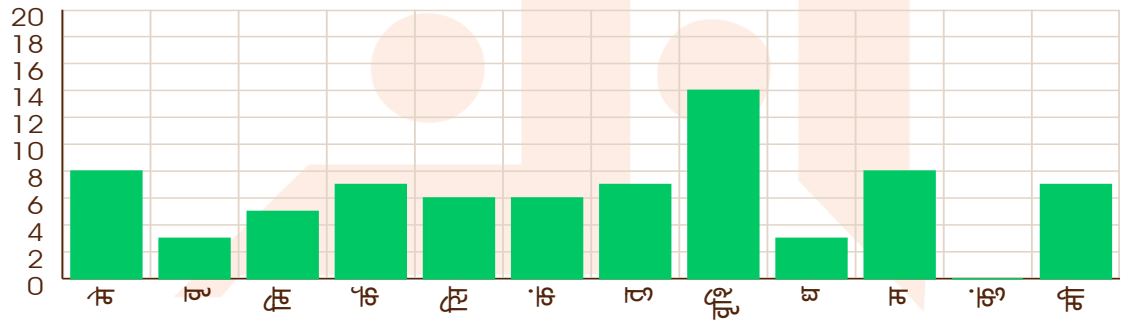

शोध्य पिंड

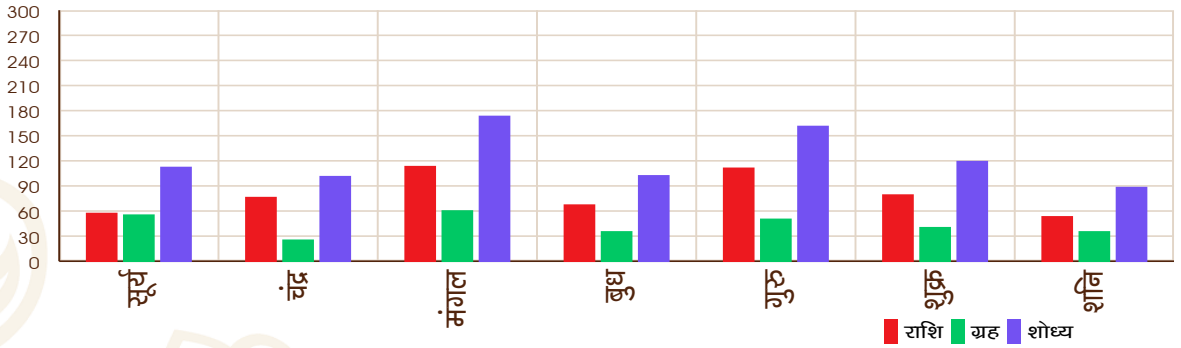

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 16 वर्ष 7 मास 7 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
17/01/2026		26/08/2042		25/08/2048		26/08/2058		26/08/2065	
26/08/2042		25/08/2048		26/08/2058		26/08/2065		26/08/2083	
	17/01/2026	सूर्य	14/12/2042	चंद्र	26/06/2049	मंगल	22/01/2059	राहु	08/05/2068
सूर्य	26/12/2026	चंद्र	14/06/2043	मंगल	25/01/2050	राहु	10/02/2060	गुरु	02/10/2070
चंद्र	25/08/2028	मंगल	20/10/2043	राहु	27/07/2051	गुरु	16/01/2061	शनि	07/08/2073
मंगल	26/10/2029	राहु	13/09/2044	गुरु	25/11/2052	शनि	24/02/2062	बुध	25/02/2076
राहु	25/10/2032	गुरु	02/07/2045	शनि	26/06/2054	बुध	22/02/2063	केतु	14/03/2077
गुरु	26/06/2035	शनि	14/06/2046	बुध	26/11/2055	केतु	21/07/2063	शुक्र	14/03/2080
शनि	26/08/2038	बुध	20/04/2047	केतु	26/06/2056	शुक्र	19/09/2064	सूर्य	06/02/2081
बुध	26/06/2041	केतु	26/08/2047	शुक्र	24/02/2058	सूर्य	25/01/2065	चंद्र	08/08/2082
केतु	26/08/2042	शुक्र	25/08/2048	सूर्य	26/08/2058	चंद्र	26/08/2065	मंगल	26/08/2083

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
26/08/2083		26/08/2099		27/08/2118		27/08/2135		27/08/2142	
26/08/2099		27/08/2118		27/08/2135		27/08/2142		00/00/0000	
गुरु	13/10/2085	शनि	30/08/2102	बुध	23/01/2121	केतु	23/01/2136	शुक्र	26/12/2145
शनि	26/04/2088	बुध	09/05/2105	केतु	20/01/2122	शुक्र	25/03/2137	सूर्य	18/01/2146
बुध	02/08/2090	केतु	18/06/2106	शुक्र	20/11/2124	सूर्य	30/07/2137		00/00/0000
केतु	09/07/2091	शुक्र	18/08/2109	सूर्य	26/09/2125	चंद्र	28/02/2138		00/00/0000
शुक्र	09/03/2094	सूर्य	31/07/2110	चंद्र	26/02/2127	मंगल	28/07/2138		00/00/0000
सूर्य	26/12/2094	चंद्र	29/02/2112	मंगल	23/02/2128	राहु	15/08/2139		00/00/0000
चंद्र	26/04/2096	मंगल	09/04/2113	राहु	11/09/2130	गुरु	21/07/2140		00/00/0000
मंगल	02/04/2097	राहु	14/02/2116	गुरु	17/12/2132	शनि	30/08/2141		00/00/0000
राहु	26/08/2099	गुरु	27/08/2118	शनि	27/08/2135	बुध	27/08/2142		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 16 वर्ष 7 मा 0 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
17/01/2026		26/12/2026		25/08/2028		26/10/2029		25/10/2032	
26/12/2026		25/08/2028		26/10/2029		25/10/2032		26/06/2035	
	17/01/2026	चंद्र	14/02/2027	मंगल	19/09/2028	राहु	08/04/2030	गुरु	04/03/2033
चंद्र	12/02/2026	मंगल	22/03/2027	राहु	22/11/2028	गुरु	01/09/2030	शनि	05/08/2033
मंगल	05/03/2026	राहु	21/06/2027	गुरु	18/01/2029	शनि	22/02/2031	बुध	21/12/2033
राहु	29/04/2026	गुरु	10/09/2027	शनि	27/03/2029	बुध	27/07/2031	केतु	16/02/2034
गुरु	17/06/2026	शनि	16/12/2027	बुध	26/05/2029	केतु	29/09/2031	शुक्र	29/07/2034
शनि	14/08/2026	बुध	11/03/2028	केतु	20/06/2029	शुक्र	29/03/2032	सूर्य	15/09/2034
बुध	05/10/2026	केतु	16/04/2028	शुक्र	30/08/2029	सूर्य	23/05/2032	चंद्र	05/12/2034
केतु	26/10/2026	शुक्र	26/07/2028	सूर्य	20/09/2029	चंद्र	22/08/2032	मंगल	31/01/2035
शुक्र	26/12/2026	सूर्य	25/08/2028	चंद्र	26/10/2029	मंगल	25/10/2032	राहु	26/06/2035

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
26/06/2035		26/08/2038		26/06/2041		26/08/2042		14/12/2042	
26/08/2038		26/06/2041		26/08/2042		14/12/2042		14/06/2043	
शनि	27/12/2035	बुध	20/01/2039	केतु	21/07/2041	सूर्य	31/08/2042	चंद्र	29/12/2042
बुध	07/06/2036	केतु	21/03/2039	शुक्र	30/09/2041	चंद्र	10/09/2042	मंगल	08/01/2043
केतु	14/08/2036	शुक्र	09/09/2039	सूर्य	21/10/2041	मंगल	16/09/2042	राहु	05/02/2043
शुक्र	23/02/2037	सूर्य	31/10/2039	चंद्र	26/11/2041	राहु	02/10/2042	गुरु	01/03/2043
सूर्य	21/04/2037	चंद्र	25/01/2040	मंगल	20/12/2041	गुरु	17/10/2042	शनि	30/03/2043
चंद्र	27/07/2037	मंगल	26/03/2040	राहु	22/02/2042	शनि	03/11/2042	बुध	25/04/2043
मंगल	02/10/2037	राहु	28/08/2040	गुरु	20/04/2042	बुध	19/11/2042	केतु	06/05/2043
राहु	25/03/2038	गुरु	13/01/2041	शनि	27/06/2042	केतु	25/11/2042	शुक्र	05/06/2043
गुरु	26/08/2038	शनि	26/06/2041	बुध	26/08/2042	शुक्र	14/12/2042	सूर्य	14/06/2043

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
14/06/2043		20/10/2043		13/09/2044		02/07/2045		14/06/2046	
20/10/2043		13/09/2044		02/07/2045		14/06/2046		20/04/2047	
मंगल	22/06/2043	राहु	08/12/2043	गुरु	22/10/2044	शनि	26/08/2045	बुध	28/07/2046
राहु	11/07/2043	गुरु	21/01/2044	शनि	07/12/2044	बुध	14/10/2045	केतु	15/08/2046
गुरु	28/07/2043	शनि	13/03/2044	बुध	17/01/2045	केतु	03/11/2045	शुक्र	06/10/2046
शनि	17/08/2043	बुध	29/04/2044	केतु	03/02/2045	शुक्र	31/12/2045	सूर्य	21/10/2046
बुध	04/09/2043	केतु	18/05/2044	शुक्र	24/03/2045	सूर्य	17/01/2046	चंद्र	16/11/2046
केतु	12/09/2043	शुक्र	12/07/2044	सूर्य	08/04/2045	चंद्र	15/02/2046	मंगल	04/12/2046
शुक्र	03/10/2043	सूर्य	28/07/2044	चंद्र	02/05/2045	मंगल	08/03/2046	राहु	20/01/2047
सूर्य	09/10/2043	चंद्र	25/08/2044	मंगल	19/05/2045	राहु	29/04/2046	गुरु	02/03/2047
चंद्र	20/10/2043	मंगल	13/09/2044	राहु	02/07/2045	गुरु	14/06/2046	शनि	20/04/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
20/04/2047		26/08/2047		25/08/2048		26/06/2049		25/01/2050	
26/08/2047		25/08/2048		26/06/2049		25/01/2050		27/07/2051	
केतु	28/04/2047	शुक्र	26/10/2047	चंद्र	20/09/2048	मंगल	08/07/2049	राहु	17/04/2050
शुक्र	19/05/2047	सूर्य	13/11/2047	मंगल	08/10/2048	राहु	09/08/2049	गुरु	29/06/2050
सूर्य	26/05/2047	चंद्र	14/12/2047	राहु	22/11/2048	गुरु	07/09/2049	शनि	24/09/2050
चंद्र	05/06/2047	मंगल	04/01/2048	गुरु	02/01/2049	शनि	10/10/2049	बुध	11/12/2050
मंगल	13/06/2047	राहु	28/02/2048	शनि	19/02/2049	बुध	10/11/2049	केतु	11/01/2051
राहु	02/07/2047	गुरु	17/04/2048	बुध	03/04/2049	केतु	22/11/2049	शुक्र	13/04/2051
गुरु	19/07/2047	शनि	13/06/2048	केतु	21/04/2049	शुक्र	28/12/2049	सूर्य	10/05/2051
शनि	08/08/2047	बुध	04/08/2048	शुक्र	11/06/2049	सूर्य	07/01/2050	चंद्र	25/06/2051
बुध	26/08/2047	केतु	25/08/2048	सूर्य	26/06/2049	चंद्र	25/01/2050	मंगल	27/07/2051

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
27/07/2051		25/11/2052		26/06/2054		26/11/2055		26/06/2056	
25/11/2052		26/06/2054		26/11/2055		26/06/2056		24/02/2058	
गुरु	30/09/2051	शनि	24/02/2053	बुध	07/09/2054	केतु	08/12/2055	शुक्र	05/10/2056
शनि	16/12/2051	बुध	17/05/2053	केतु	08/10/2054	शुक्र	12/01/2056	सूर्य	05/11/2056
बुध	23/02/2052	केतु	20/06/2053	शुक्र	02/01/2055	सूर्य	23/01/2056	चंद्र	25/12/2056
केतु	22/03/2052	शुक्र	24/09/2053	सूर्य	28/01/2055	चंद्र	10/02/2056	मंगल	30/01/2057
शुक्र	11/06/2052	सूर्य	23/10/2053	चंद्र	12/03/2055	मंगल	22/02/2056	राहु	01/05/2057
सूर्य	06/07/2052	चंद्र	11/12/2053	मंगल	11/04/2055	राहु	25/03/2056	गुरु	21/07/2057
चंद्र	15/08/2052	मंगल	13/01/2054	राहु	28/06/2055	गुरु	23/04/2056	शनि	26/10/2057
मंगल	13/09/2052	राहु	10/04/2054	गुरु	05/09/2055	शनि	26/05/2056	बुध	20/01/2058
राहु	25/11/2052	गुरु	26/06/2054	शनि	26/11/2055	बुध	26/06/2056	केतु	24/02/2058

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
24/02/2058		26/08/2058		22/01/2059		10/02/2060		16/01/2061	
26/08/2058		22/01/2059		10/02/2060		16/01/2061		24/02/2062	
सूर्य	05/03/2058	मंगल	04/09/2058	राहु	21/03/2059	गुरु	26/03/2060	शनि	21/03/2061
चंद्र	21/03/2058	राहु	26/09/2058	गुरु	11/05/2059	शनि	19/05/2060	बुध	17/05/2061
मंगल	31/03/2058	गुरु	16/10/2058	शनि	11/07/2059	बुध	06/07/2060	केतु	10/06/2061
राहु	28/04/2058	शनि	09/11/2058	बुध	03/09/2059	केतु	26/07/2060	शुक्र	16/08/2061
गुरु	22/05/2058	बुध	30/11/2058	केतु	25/09/2059	शुक्र	21/09/2060	सूर्य	05/09/2061
शनि	20/06/2058	केतु	08/12/2058	शुक्र	28/11/2059	सूर्य	08/10/2060	चंद्र	09/10/2061
बुध	16/07/2058	शुक्र	02/01/2059	सूर्य	17/12/2059	चंद्र	06/11/2060	मंगल	02/11/2061
केतु	27/07/2058	सूर्य	10/01/2059	चंद्र	18/01/2060	मंगल	25/11/2060	राहु	01/01/2062
शुक्र	26/08/2058	चंद्र	22/01/2059	मंगल	10/02/2060	राहु	16/01/2061	गुरु	24/02/2062

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
24/02/2062		22/02/2063		21/07/2063		19/09/2064		25/01/2065	
22/02/2063		21/07/2063		19/09/2064		25/01/2065		26/08/2065	
बुध	17/04/2062	केतु	02/03/2063	शुक्र	30/09/2063	सूर्य	25/09/2064	चंद्र	11/02/2065
केतु	08/05/2062	शुक्र	27/03/2063	सूर्य	21/10/2063	चंद्र	06/10/2064	मंगल	24/02/2065
शुक्र	07/07/2062	सूर्य	04/04/2063	चंद्र	26/11/2063	मंगल	13/10/2064	राहु	28/03/2065
सूर्य	25/07/2062	चंद्र	16/04/2063	मंगल	20/12/2063	राहु	02/11/2064	गुरु	25/04/2065
चंद्र	24/08/2062	मंगल	25/04/2063	राहु	22/02/2064	गुरु	19/11/2064	शनि	29/05/2065
मंगल	15/09/2062	राहु	17/05/2063	गुरु	19/04/2064	शनि	09/12/2064	बुध	28/06/2065
राहु	08/11/2062	गुरु	06/06/2063	शनि	26/06/2064	बुध	27/12/2064	केतु	11/07/2065
गुरु	26/12/2062	शनि	30/06/2063	बुध	25/08/2064	केतु	03/01/2065	शुक्र	15/08/2065
शनि	22/02/2063	बुध	21/07/2063	केतु	19/09/2064	शुक्र	25/01/2065	सूर्य	26/08/2065

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
26/08/2065		08/05/2068		02/10/2070		07/08/2073		25/02/2076	
08/05/2068		02/10/2070		07/08/2073		25/02/2076		14/03/2077	
राहु	21/01/2066	गुरु	02/09/2068	शनि	15/03/2071	बुध	17/12/2073	केतु	18/03/2076
गुरु	01/06/2066	शनि	19/01/2069	बुध	10/08/2071	केतु	10/02/2074	शुक्र	21/05/2076
शनि	04/11/2066	बुध	23/05/2069	केतु	10/10/2071	शुक्र	15/07/2074	सूर्य	09/06/2076
बुध	24/03/2067	केतु	13/07/2069	शुक्र	31/03/2072	सूर्य	31/08/2074	चंद्र	11/07/2076
केतु	21/05/2067	शुक्र	06/12/2069	सूर्य	22/05/2072	चंद्र	16/11/2074	मंगल	03/08/2076
शुक्र	01/11/2067	सूर्य	19/01/2070	चंद्र	17/08/2072	मंगल	10/01/2075	राहु	29/09/2076
सूर्य	20/12/2067	चंद्र	02/04/2070	मंगल	17/10/2072	राहु	29/05/2075	गुरु	19/11/2076
चंद्र	11/03/2068	मंगल	23/05/2070	राहु	22/03/2073	गुरु	30/09/2075	शनि	19/01/2077
मंगल	08/05/2068	राहु	02/10/2070	गुरु	07/08/2073	शनि	25/02/2076	बुध	14/03/2077

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
14/03/2077		14/03/2080		06/02/2081		08/08/2082		26/08/2083	
14/03/2080		06/02/2081		08/08/2082		26/08/2083		13/10/2085	
शुक्र	13/09/2077	सूर्य	31/03/2080	चंद्र	24/03/2081	मंगल	30/08/2082	गुरु	08/12/2083
सूर्य	07/11/2077	चंद्र	27/04/2080	मंगल	24/04/2081	राहु	27/10/2082	शनि	10/04/2084
चंद्र	06/02/2078	मंगल	16/05/2080	राहु	16/07/2081	गुरु	17/12/2082	बुध	29/07/2084
मंगल	11/04/2078	राहु	04/07/2080	गुरु	27/09/2081	शनि	15/02/2083	केतु	12/09/2084
राहु	22/09/2078	गुरु	17/08/2080	शनि	22/12/2081	बुध	11/04/2083	शुक्र	20/01/2085
गुरु	15/02/2079	शनि	08/10/2080	बुध	10/03/2082	केतु	03/05/2083	सूर्य	28/02/2085
शनि	08/08/2079	बुध	24/11/2080	केतु	11/04/2082	शुक्र	06/07/2083	चंद्र	04/05/2085
बुध	10/01/2080	केतु	13/12/2080	शुक्र	11/07/2082	सूर्य	25/07/2083	मंगल	19/06/2085
केतु	14/03/2080	शुक्र	06/02/2081	सूर्य	08/08/2082	चंद्र	26/08/2083	राहु	13/10/2085

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
13/10/2085		26/04/2088		02/08/2090		09/07/2091		09/03/2094	
26/04/2088		02/08/2090		09/07/2091		09/03/2094		26/12/2094	
शनि	09/03/2086	बुध	21/08/2088	केतु	22/08/2090	शुक्र	18/12/2091	सूर्य	23/03/2094
बुध	18/07/2086	केतु	08/10/2088	शुक्र	17/10/2090	सूर्य	05/02/2092	चंद्र	17/04/2094
केतु	10/09/2086	शुक्र	23/02/2089	सूर्य	03/11/2090	चंद्र	26/04/2092	मंगल	04/05/2094
शुक्र	11/02/2087	सूर्य	06/04/2089	चंद्र	02/12/2090	मंगल	22/06/2092	राहु	16/06/2094
सूर्य	29/03/2087	चंद्र	14/06/2089	मंगल	22/12/2090	राहु	15/11/2092	गुरु	25/07/2094
चंद्र	15/06/2087	मंगल	01/08/2089	राहु	11/02/2091	गुरु	25/03/2093	शनि	10/09/2094
मंगल	08/08/2087	राहु	03/12/2089	गुरु	28/03/2091	शनि	26/08/2093	बुध	21/10/2094
राहु	24/12/2087	गुरु	24/03/2090	शनि	21/05/2091	बुध	11/01/2094	केतु	07/11/2094
गुरु	26/04/2088	शनि	02/08/2090	बुध	09/07/2091	केतु	09/03/2094	शुक्र	26/12/2094

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
26/12/2094		26/04/2096		02/04/2097		26/08/2099		30/08/2102	
26/04/2096		02/04/2097		26/08/2099		30/08/2102		09/05/2105	
चंद्र	04/02/2095	मंगल	16/05/2096	राहु	11/08/2097	शनि	16/02/2100	बुध	16/01/2103
मंगल	05/03/2095	राहु	06/07/2096	गुरु	06/12/2097	बुध	22/07/2100	केतु	15/03/2103
राहु	17/05/2095	गुरु	20/08/2096	शनि	24/04/2098	केतु	24/09/2100	शुक्र	26/08/2103
गुरु	21/07/2095	शनि	13/10/2096	बुध	26/08/2098	शुक्र	26/03/2101	सूर्य	14/10/2103
शनि	06/10/2095	बुध	30/11/2096	केतु	16/10/2098	सूर्य	20/05/2101	चंद्र	04/01/2104
बुध	14/12/2095	केतु	20/12/2096	शुक्र	11/03/2099	चंद्र	20/08/2101	मंगल	01/03/2104
केतु	11/01/2096	शुक्र	15/02/2097	सूर्य	24/04/2099	मंगल	23/10/2101	राहु	26/07/2104
शुक्र	01/04/2096	सूर्य	04/03/2097	चंद्र	06/07/2099	राहु	06/04/2102	गुरु	05/12/2104
सूर्य	26/04/2096	चंद्र	02/04/2097	मंगल	26/08/2099	गुरु	30/08/2102	शनि	09/05/2105

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
09/05/2105		18/06/2106		18/08/2109		31/07/2110		29/02/2112	
18/06/2106		18/08/2109		31/07/2110		29/02/2112		09/04/2113	
केतु	02/06/2105	शुक्र	28/12/2106	सूर्य	04/09/2109	चंद्र	17/09/2110	मंगल	24/03/2112
शुक्र	08/08/2105	सूर्य	24/02/2107	चंद्र	03/10/2109	मंगल	21/10/2110	राहु	23/05/2112
सूर्य	28/08/2105	चंद्र	31/05/2107	मंगल	23/10/2109	राहु	15/01/2111	गुरु	16/07/2112
चंद्र	01/10/2105	मंगल	06/08/2107	राहु	14/12/2109	गुरु	02/04/2111	शनि	18/09/2112
मंगल	25/10/2105	राहु	27/01/2108	गुरु	29/01/2110	शनि	03/07/2111	बुध	15/11/2112
राहु	25/12/2105	गुरु	29/06/2108	शनि	25/03/2110	बुध	23/09/2111	केतु	08/12/2112
गुरु	17/02/2106	शनि	29/12/2108	बुध	14/05/2110	केतु	27/10/2111	शुक्र	14/02/2113
शनि	22/04/2106	बुध	11/06/2109	केतु	03/06/2110	शुक्र	31/01/2112	सूर्य	06/03/2113
बुध	18/06/2106	केतु	18/08/2109	शुक्र	31/07/2110	सूर्य	29/02/2112	चंद्र	09/04/2113

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
09/04/2113		14/02/2116		27/08/2118		23/01/2121		20/01/2122	
14/02/2116		27/08/2118		23/01/2121		20/01/2122		20/11/2124	
राहु	12/09/2113	गुरु	16/06/2116	बुध	30/12/2118	केतु	13/02/2121	शुक्र	11/07/2122
गुरु	29/01/2114	शनि	10/11/2116	केतु	19/02/2119	शुक्र	14/04/2121	सूर्य	01/09/2122
शनि	12/07/2114	बुध	21/03/2117	शुक्र	16/07/2119	सूर्य	02/05/2121	चंद्र	26/11/2122
बुध	07/12/2114	केतु	14/05/2117	सूर्य	29/08/2119	चंद्र	01/06/2121	मंगल	26/01/2123
केतु	06/02/2115	शुक्र	15/10/2117	चंद्र	10/11/2119	मंगल	23/06/2121	राहु	30/06/2123
शुक्र	29/07/2115	सूर्य	30/11/2117	मंगल	31/12/2119	राहु	16/08/2121	गुरु	15/11/2123
सूर्य	19/09/2115	चंद्र	15/02/2118	राहु	11/05/2120	गुरु	03/10/2121	शनि	27/04/2124
चंद्र	15/12/2115	मंगल	10/04/2118	गुरु	05/09/2120	शनि	30/11/2121	बुध	20/09/2124
मंगल	14/02/2116	राहु	27/08/2118	शनि	23/01/2121	बुध	20/01/2122	केतु	20/11/2124

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
20/11/2124		26/09/2125		26/02/2127		23/02/2128		11/09/2130	
26/09/2125		26/02/2127		23/02/2128		11/09/2130		17/12/2132	
सूर्य	05/12/2124	चंद्र	08/11/2125	मंगल	19/03/2127	राहु	12/07/2128	गुरु	31/12/2130
चंद्र	31/12/2124	मंगल	08/12/2125	राहु	12/05/2127	गुरु	13/11/2128	शनि	11/05/2131
मंगल	18/01/2125	राहु	24/02/2126	गुरु	29/06/2127	शनि	09/04/2129	बुध	05/09/2131
राहु	06/03/2125	गुरु	04/05/2126	शनि	26/08/2127	बुध	19/08/2129	केतु	23/10/2131
गुरु	16/04/2125	शनि	25/07/2126	बुध	16/10/2127	केतु	12/10/2129	शुक्र	09/03/2132
शनि	04/06/2125	बुध	06/10/2126	केतु	06/11/2127	शुक्र	17/03/2130	सूर्य	20/04/2132
बुध	18/07/2125	केतु	06/11/2126	शुक्र	06/01/2128	सूर्य	02/05/2130	चंद्र	28/06/2132
केतु	05/08/2125	शुक्र	31/01/2127	सूर्य	24/01/2128	चंद्र	19/07/2130	मंगल	15/08/2132
शुक्र	26/09/2125	सूर्य	26/02/2127	चंद्र	23/02/2128	मंगल	11/09/2130	राहु	17/12/2132

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
17/12/2132		27/08/2135		23/01/2136		25/03/2137		30/07/2137	
27/08/2135		23/01/2136		25/03/2137		30/07/2137		28/02/2138	
शनि	22/05/2133	केतु	05/09/2135	शुक्र	03/04/2136	सूर्य	31/03/2137	चंद्र	17/08/2137
बुध	08/10/2133	शुक्र	30/09/2135	सूर्य	25/04/2136	चंद्र	11/04/2137	मंगल	30/08/2137
केतु	04/12/2133	सूर्य	07/10/2135	चंद्र	30/05/2136	मंगल	18/04/2137	राहु	30/09/2137
शुक्र	17/05/2134	चंद्र	20/10/2135	मंगल	24/06/2136	राहु	07/05/2137	गुरु	29/10/2137
सूर्य	05/07/2134	मंगल	28/10/2135	राहु	27/08/2136	गुरु	24/05/2137	शनि	02/12/2137
चंद्र	25/09/2134	राहु	20/11/2135	गुरु	23/10/2136	शनि	13/06/2137	बुध	01/01/2138
मंगल	22/11/2134	गुरु	10/12/2135	शनि	29/12/2136	बुध	02/07/2137	केतु	13/01/2138
राहु	18/04/2135	शनि	02/01/2136	बुध	28/02/2137	केतु	09/07/2137	शुक्र	18/02/2138
गुरु	27/08/2135	बुध	23/01/2136	केतु	25/03/2137	शुक्र	30/07/2137	सूर्य	28/02/2138

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - सूर्य - चंद्र	
17/01/2026 12:39	
12/02/2026 16:38	
	17/01/2026 12:39
	17/01/2026 13:37
राहु	22/01/2026 03:12
गुरु	26/01/2026 04:36
शनि	31/01/2026 00:15
बुध	04/02/2026 07:45
केतु	06/02/2026 02:21
शुक्र	11/02/2026 04:06
सूर्य	12/02/2026 16:38

शुक्र - सूर्य - मंगल	
12/02/2026 16:38	
05/03/2026 23:59	
मंगल	13/02/2026 22:28
राहु	17/02/2026 03:10
गुरु	19/02/2026 23:21
शनि	23/02/2026 08:18
बुध	26/02/2026 08:45
केतु	27/02/2026 14:35
शुक्र	03/03/2026 03:48
सूर्य	04/03/2026 05:22
चंद्र	05/03/2026 23:59

शुक्र - सूर्य - राहु	
05/03/2026 23:59	
29/04/2026 18:53	
राहु	14/03/2026 05:13
गुरु	21/03/2026 12:32
शनि	30/03/2026 04:44
बुध	06/04/2026 23:00
केतु	10/04/2026 03:43
शुक्र	19/04/2026 06:52
सूर्य	22/04/2026 00:36
चंद्र	26/04/2026 14:11
मंगल	29/04/2026 18:53

शुक्र - सूर्य - गुरु	
29/04/2026 18:53	
17/06/2026 11:41	
गुरु	06/05/2026 06:43
शनि	13/05/2026 23:47
बुध	20/05/2026 21:22
केतु	23/05/2026 17:33
शुक्र	31/05/2026 20:21
सूर्य	03/06/2026 06:47
चंद्र	07/06/2026 08:11
मंगल	10/06/2026 04:22
राहु	17/06/2026 11:41

शुक्र - सूर्य - शनि	
17/06/2026 11:41	
14/08/2026 07:38	
शनि	26/06/2026 15:26
बुध	04/07/2026 20:04
केतु	08/07/2026 05:02
शुक्र	17/07/2026 20:21
सूर्य	20/07/2026 17:45
चंद्र	25/07/2026 13:25
मंगल	28/07/2026 22:23
राहु	06/08/2026 14:34
गुरु	14/08/2026 07:38

शुक्र - सूर्य - बुध	
14/08/2026 07:38	
05/10/2026 01:29	
बुध	21/08/2026 15:34
केतु	24/08/2026 16:00
शुक्र	02/09/2026 06:59
सूर्य	04/09/2026 21:04
चंद्र	09/09/2026 04:33
मंगल	12/09/2026 05:00
राहु	19/09/2026 23:17
गुरु	26/09/2026 20:51
शनि	05/10/2026 01:29

शुक्र - सूर्य - केतु	
05/10/2026 01:29	
26/10/2026 08:50	
केतु	06/10/2026 07:19
शुक्र	09/10/2026 20:32
सूर्य	10/10/2026 22:06
चंद्र	12/10/2026 16:43
मंगल	13/10/2026 22:33
राहु	17/10/2026 03:15
गुरु	19/10/2026 23:26
शनि	23/10/2026 08:23
बुध	26/10/2026 08:50

शुक्र - सूर्य - शुक्र	
26/10/2026 08:50	
26/12/2026 05:50	
शुक्र	05/11/2026 12:20
सूर्य	08/11/2026 13:23
चंद्र	13/11/2026 15:08
मंगल	17/11/2026 04:21
राहु	26/11/2026 07:30
गुरु	04/12/2026 10:18
शनि	14/12/2026 01:38
बुध	22/12/2026 16:36
केतु	26/12/2026 05:50

शुक्र - चंद्र - चंद्र	
26/12/2026 05:50	
14/02/2027 23:20	
चंद्र	30/12/2026 11:17
मंगल	02/01/2027 10:19
राहु	10/01/2027 00:56
गुरु	16/01/2027 19:16
शनि	24/01/2027 20:02
बुध	01/02/2027 00:31
केतु	03/02/2027 23:32
शुक्र	12/02/2027 10:27
सूर्य	14/02/2027 23:20

शुक्र - चंद्र - मंगल	
14/02/2027 23:20	
22/03/2027 11:35	
मंगल	17/02/2027 01:03
राहु	22/02/2027 08:53
गुरु	27/02/2027 02:31
शनि	04/03/2027 17:27
बुध	09/03/2027 18:12
केतु	11/03/2027 19:54
शुक्र	17/03/2027 17:57
सूर्य	19/03/2027 12:34
चंद्र	22/03/2027 11:35

शुक्र - चंद्र - राहु	
22/03/2027 11:35	
21/06/2027 19:05	
राहु	05/04/2027 04:18
गुरु	17/04/2027 08:30
शनि	01/05/2027 19:30
बुध	14/05/2027 17:57
केतु	20/05/2027 01:48
शुक्र	04/06/2027 07:03
सूर्य	08/06/2027 20:37
चंद्र	16/06/2027 11:15
मंगल	21/06/2027 19:05

शुक्र - चंद्र - गुरु	
21/06/2027 19:05	
10/09/2027 23:05	
गुरु	02/07/2027 14:49
शनि	15/07/2027 11:15
बुध	26/07/2027 23:13
केतु	31/07/2027 16:51
शुक्र	14/08/2027 05:31
सूर्य	18/08/2027 06:55
चंद्र	25/08/2027 01:15
मंगल	29/08/2027 18:53
राहु	10/09/2027 23:05

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - चंद्र - शनि		शुक्र - चंद्र - बुध		शुक्र - चंद्र - केतु		शुक्र - चंद्र - शुक्र	
10/09/2027 23:05		16/12/2027 08:20		11/03/2028 14:05		16/04/2028 02:20	
16/12/2027 08:20		11/03/2028 14:05		16/04/2028 02:20		26/07/2028 13:20	
शनि	26/09/2027 05:21	बुध	28/12/2027 13:33	केतु	13/03/2028 15:48	शुक्र	03/05/2028 00:10
बुध	09/10/2027 21:03	केतु	02/01/2028 14:17	शुक्र	19/03/2028 13:50	सूर्य	08/05/2028 01:55
केतु	15/10/2027 12:00	शुक्र	16/01/2028 23:14	सूर्य	21/03/2028 08:27	चंद्र	16/05/2028 12:50
शुक्र	31/10/2027 13:32	सूर्य	21/01/2028 06:44	चंद्र	24/03/2028 07:28	मंगल	22/05/2028 10:52
सूर्य	05/11/2027 09:12	चंद्र	28/01/2028 11:12	मंगल	26/03/2028 09:11	राहु	06/06/2028 16:07
चंद्र	13/11/2027 09:58	मंगल	02/02/2028 11:57	राहु	31/03/2028 17:01	गुरु	20/06/2028 04:47
मंगल	19/11/2027 00:55	राहु	15/02/2028 10:24	गुरु	05/04/2028 10:39	शनि	06/07/2028 06:20
राहु	03/12/2027 11:54	गुरु	26/02/2028 22:22	शनि	11/04/2028 01:36	बुध	20/07/2028 15:17
गुरु	16/12/2027 08:20	शनि	11/03/2028 14:05	बुध	16/04/2028 02:20	केतु	26/07/2028 13:20

शुक्र - चंद्र - सूर्य		शुक्र - मंगल - मंगल		शुक्र - मंगल - राहु		शुक्र - मंगल - गुरु	
26/07/2028 13:20		25/08/2028 23:50		19/09/2028 20:24		22/11/2028 18:27	
25/08/2028 23:50		19/09/2028 20:24		22/11/2028 18:27		18/01/2029 14:03	
सूर्य	28/07/2028 01:51	मंगल	27/08/2028 10:38	राहु	29/09/2028 10:31	गुरु	30/11/2028 08:16
चंद्र	30/07/2028 14:44	राहु	31/08/2028 04:07	गुरु	07/10/2028 23:03	शनि	09/12/2028 08:10
मंगल	01/08/2028 09:21	गुरु	03/09/2028 11:40	शनि	18/10/2028 01:57	बुध	17/12/2028 09:21
राहु	05/08/2028 22:55	शनि	07/09/2028 10:07	बुध	27/10/2028 03:16	केतु	20/12/2028 16:54
गुरु	10/08/2028 00:19	बुध	10/09/2028 22:38	केतु	30/10/2028 20:45	शुक्र	30/12/2028 04:10
शनि	14/08/2028 19:59	केतु	12/09/2028 09:26	शुक्र	10/11/2028 12:26	सूर्य	02/01/2029 00:20
बुध	19/08/2028 03:28	शुक्र	16/09/2028 12:52	सूर्य	13/11/2028 17:08	चंद्र	06/01/2029 17:58
केतु	20/08/2028 22:05	सूर्य	17/09/2028 18:42	चंद्र	19/11/2028 00:58	मंगल	10/01/2029 01:31
शुक्र	25/08/2028 23:50	चंद्र	19/09/2028 20:24	मंगल	22/11/2028 18:27	राहु	18/01/2029 14:03

शुक्र - मंगल - शनि		शुक्र - मंगल - बुध		शुक्र - मंगल - केतु		शुक्र - मंगल - शुक्र	
18/01/2029 14:03		27/03/2029 01:20		26/05/2029 10:09		20/06/2029 06:44	
27/03/2029 01:20		26/05/2029 10:09		20/06/2029 06:44		30/08/2029 07:14	
शनि	29/01/2029 06:27	बुध	04/04/2029 14:35	केतु	27/05/2029 20:57	शुक्र	02/07/2029 02:49
बुध	07/02/2029 19:50	केतु	08/04/2029 03:06	शुक्र	01/06/2029 00:23	सूर्य	05/07/2029 16:02
केतु	11/02/2029 18:18	शुक्र	18/04/2029 04:34	सूर्य	02/06/2029 06:13	चंद्र	11/07/2029 14:05
शुक्र	23/02/2029 00:11	सूर्य	21/04/2029 05:01	चंद्र	04/06/2029 07:56	मंगल	15/07/2029 17:31
सूर्य	26/02/2029 09:08	चंद्र	26/04/2029 05:45	मंगल	05/06/2029 18:44	राहु	26/07/2029 09:11
चंद्र	04/03/2029 00:05	मंगल	29/04/2029 18:16	राहु	09/06/2029 12:13	गुरु	04/08/2029 20:27
मंगल	07/03/2029 22:32	राहु	08/05/2029 19:35	गुरु	12/06/2029 19:46	शनि	16/08/2029 02:20
राहु	18/03/2029 01:26	गुरु	16/05/2029 20:46	शनि	16/06/2029 18:13	बुध	26/08/2029 03:48
गुरु	27/03/2029 01:20	शनि	26/05/2029 10:09	बुध	20/06/2029 06:44	केतु	30/08/2029 07:14

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - मंगल - सूर्य	
30/08/2029 07:14	
20/09/2029 14:35	
सूर्य	31/08/2029 08:48
चंद्र	02/09/2029 03:25
मंगल	03/09/2029 09:14
राहु	06/09/2029 13:57
गुरु	09/09/2029 10:07
शनि	12/09/2029 19:05
बुध	15/09/2029 19:32
केतु	17/09/2029 01:21
शुक्र	20/09/2029 14:35

शुक्र - मंगल - चंद्र	
20/09/2029 14:35	
26/10/2029 02:50	
चंद्र	23/09/2029 13:36
मंगल	25/09/2029 15:19
राहु	30/09/2029 23:09
गुरु	05/10/2029 16:47
शनि	11/10/2029 07:44
बुध	16/10/2029 08:28
केतु	18/10/2029 10:11
शुक्र	24/10/2029 08:13
सूर्य	26/10/2029 02:50

शुक्र - राहु - राहु	
26/10/2029 02:50	
08/04/2030 11:32	
राहु	19/11/2029 18:32
गुरु	11/12/2029 16:30
शनि	06/01/2030 17:05
बुध	29/01/2030 23:54
केतु	08/02/2030 14:01
शुक्र	07/03/2030 23:28
सूर्य	16/03/2030 04:42
चंद्र	29/03/2030 21:26
मंगल	08/04/2030 11:32

शुक्र - राहु - गुरु	
08/04/2030 11:32	
01/09/2030 13:56	
गुरु	27/04/2030 23:03
शनि	21/05/2030 02:14
बुध	10/06/2030 18:58
केतु	19/06/2030 07:31
शुक्र	13/07/2030 15:55
सूर्य	20/07/2030 23:14
चंद्र	02/08/2030 03:26
मंगल	10/08/2030 15:58
राहु	01/09/2030 13:56

शुक्र - राहु - शनि	
01/09/2030 13:56	
22/02/2031 01:47	
शनि	29/09/2030 01:13
बुध	23/10/2030 15:05
केतु	02/11/2030 17:59
शुक्र	01/12/2030 15:57
सूर्य	10/12/2030 08:09
चंद्र	24/12/2030 19:08
मंगल	03/01/2031 22:02
राहु	29/01/2031 22:36
गुरु	22/02/2031 01:47

शुक्र - राहु - बुध	
22/02/2031 01:47	
27/07/2031 07:20	
बुध	16/03/2031 01:34
केतु	25/03/2031 02:54
शुक्र	19/04/2031 23:49
सूर्य	27/04/2031 18:06
चंद्र	10/05/2031 16:33
मंगल	19/05/2031 17:53
राहु	12/06/2031 00:43
गुरु	02/07/2031 17:27
शनि	27/07/2031 07:20

शुक्र - राहु - केतु	
27/07/2031 07:20	
29/09/2031 05:23	
केतु	31/07/2031 00:49
शुक्र	10/08/2031 16:30
सूर्य	13/08/2031 21:12
चंद्र	19/08/2031 05:02
मंगल	22/08/2031 22:31
राहु	01/09/2031 12:38
गुरु	10/09/2031 01:10
शनि	20/09/2031 04:04
बुध	29/09/2031 05:23

शुक्र - राहु - शुक्र	
29/09/2031 05:23	
29/03/2032 20:23	
शुक्र	29/10/2031 15:53
सूर्य	07/11/2031 19:02
चंद्र	23/11/2031 00:17
मंगल	03/12/2031 15:57
राहु	31/12/2031 01:24
गुरु	24/01/2032 09:48
शनि	22/02/2032 07:47
बुध	19/03/2032 04:42
केतु	29/03/2032 20:23

शुक्र - राहु - सूर्य	
29/03/2032 20:23	
23/05/2032 15:17	
सूर्य	01/04/2032 14:08
चंद्र	06/04/2032 03:42
मंगल	09/04/2032 08:24
राहु	17/04/2032 13:38
गुरु	24/04/2032 20:58
शनि	03/05/2032 13:09
बुध	11/05/2032 07:26
केतु	14/05/2032 12:08
शुक्र	23/05/2032 15:17

शुक्र - राहु - चंद्र	
23/05/2032 15:17	
22/08/2032 22:47	
चंद्र	31/05/2032 05:54
मंगल	05/06/2032 13:45
राहु	19/06/2032 06:28
गुरु	01/07/2032 10:40
शनि	15/07/2032 21:39
बुध	28/07/2032 20:07
केतु	03/08/2032 03:57
शुक्र	18/08/2032 09:12
सूर्य	22/08/2032 22:47

शुक्र - राहु - मंगल	
22/08/2032 22:47	
25/10/2032 20:50	
मंगल	26/08/2032 16:16
राहु	05/09/2032 06:23
गुरु	13/09/2032 18:55
शनि	23/09/2032 21:48
बुध	02/10/2032 23:08
केतु	06/10/2032 16:37
शुक्र	17/10/2032 08:18
सूर्य	20/10/2032 13:00
चंद्र	25/10/2032 20:50

शुक्र - गुरु - गुरु	
25/10/2032 20:50	
04/03/2033 17:38	
गुरु	12/11/2032 04:24
शनि	02/12/2032 17:54
बुध	21/12/2032 03:27
केतु	28/12/2032 17:16
शुक्र	19/01/2033 08:44
सूर्य	25/01/2033 20:34
चंद्र	05/02/2033 16:18
मंगल	13/02/2033 06:07
राहु	04/03/2033 17:38

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - गुरु - शनि		शुक्र - गुरु - बुध		शुक्र - गुरु - केतु		शुक्र - गुरु - शुक्र	
04/03/2033 17:38		05/08/2033 22:50		21/12/2033 22:26		16/02/2034 18:02	
05/08/2033 22:50		21/12/2033 22:26		16/02/2034 18:02		29/07/2034 02:02	
शनि	29/03/2033 03:39	बुध	25/08/2033 11:59	केतु	25/12/2033 05:59	शुक्र	15/03/2034 19:22
बुध	19/04/2033 24:00	केतु	02/09/2033 13:09	शुक्र	03/01/2034 17:15	सूर्य	23/03/2034 22:10
केतु	28/04/2033 23:54	शुक्र	25/09/2033 13:05	सूर्य	06/01/2034 13:25	चंद्र	06/04/2034 10:50
शुक्र	24/05/2033 16:46	सूर्य	02/10/2033 10:40	चंद्र	11/01/2034 07:03	मंगल	15/04/2034 22:06
सूर्य	01/06/2033 09:49	चंद्र	13/10/2033 22:38	मंगल	14/01/2034 14:36	राहु	10/05/2034 06:30
चंद्र	14/06/2033 06:15	मंगल	21/10/2033 23:49	राहु	23/01/2034 03:08	गुरु	31/05/2034 21:58
मंगल	23/06/2033 06:10	राहु	11/11/2033 16:33	गुरु	30/01/2034 16:57	शनि	26/06/2034 14:50
राहु	16/07/2033 09:20	गुरु	30/11/2033 02:06	शनि	08/02/2034 16:51	बुध	19/07/2034 14:46
गुरु	05/08/2033 22:50	शनि	21/12/2033 22:26	बुध	16/02/2034 18:02	केतु	29/07/2034 02:02

शुक्र - गुरु - सूर्य		शुक्र - गुरु - चंद्र		शुक्र - गुरु - मंगल		शुक्र - गुरु - राहु	
29/07/2034 02:02		15/09/2034 18:50		05/12/2034 22:50		31/01/2035 18:26	
15/09/2034 18:50		05/12/2034 22:50		31/01/2035 18:26		26/06/2035 20:50	
सूर्य	31/07/2034 12:28	चंद्र	22/09/2034 13:10	मंगल	09/12/2034 06:23	राहु	22/02/2035 16:24
चंद्र	04/08/2034 13:52	मंगल	27/09/2034 06:48	राहु	17/12/2034 18:55	गुरु	14/03/2035 03:55
मंगल	07/08/2034 10:03	राहु	09/10/2034 11:00	गुरु	25/12/2034 08:44	शनि	06/04/2035 07:06
राहु	14/08/2034 17:22	गुरु	20/10/2034 06:44	शनि	03/01/2035 08:38	बुध	26/04/2035 23:50
गुरु	21/08/2034 05:13	शनि	02/11/2034 03:10	बुध	11/01/2035 09:49	केतु	05/05/2035 12:22
शनि	28/08/2034 22:16	बुध	13/11/2034 15:08	केतु	14/01/2035 17:21	शुक्र	29/05/2035 20:46
बुध	04/09/2034 19:51	केतु	18/11/2034 08:46	शुक्र	24/01/2035 04:37	सूर्य	06/06/2035 04:06
केतु	07/09/2034 16:02	शुक्र	01/12/2034 21:26	सूर्य	27/01/2035 00:48	चंद्र	18/06/2035 08:18
शुक्र	15/09/2034 18:50	सूर्य	05/12/2034 22:50	चंद्र	31/01/2035 18:26	मंगल	26/06/2035 20:50

शुक्र - शनि - शनि		शुक्र - शनि - बुध		शुक्र - शनि - केतु		शुक्र - शनि - शुक्र	
26/06/2035 20:50		27/12/2035 00:00		07/06/2036 20:32		14/08/2036 07:48	
27/12/2035 00:00		07/06/2036 20:32		14/08/2036 07:48		23/02/2037 02:18	
शनि	25/07/2035 20:44	बुध	19/01/2036 05:07	केतु	11/06/2036 18:59	शुक्र	15/09/2036 10:53
बुध	20/08/2035 19:23	केतु	28/01/2036 18:31	शुक्र	23/06/2036 00:52	सूर्य	25/09/2036 02:13
केतु	31/08/2035 11:46	शुक्र	25/02/2036 01:56	सूर्य	26/06/2036 09:50	चंद्र	11/10/2036 03:45
शुक्र	01/10/2035 00:18	सूर्य	04/03/2036 06:34	चंद्र	02/07/2036 00:46	मंगल	22/10/2036 09:38
सूर्य	10/10/2035 04:04	चंद्र	17/03/2036 22:16	मंगल	05/07/2036 23:14	राहु	20/11/2036 07:37
चंद्र	25/10/2035 10:19	मंगल	27/03/2036 11:40	राहु	16/07/2036 02:07	गुरु	16/12/2036 00:29
मंगल	05/11/2035 02:42	राहु	21/04/2036 01:33	गुरु	25/07/2036 02:02	शनि	15/01/2037 13:00
राहु	02/12/2035 13:59	गुरु	12/05/2036 21:53	शनि	04/08/2036 18:25	बुध	11/02/2037 20:26
गुरु	27/12/2035 00:00	शनि	07/06/2036 20:32	बुध	14/08/2036 07:48	केतु	23/02/2037 02:18

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - सूर्य - चंद्र - मंगल		शुक्र - सूर्य - चंद्र - राहु		शुक्र - सूर्य - चंद्र - गुरु		शुक्र - सूर्य - चंद्र - शनि	
17/01/2026 12:39		17/01/2026 13:37		22/01/2026 03:12		26/01/2026 04:36	
17/01/2026 13:37		22/01/2026 03:12		26/01/2026 04:36		31/01/2026 00:15	
	00/00/0000 00:00	राहु	18/01/2026 06:03	गुरु	22/01/2026 16:11	शनि	26/01/2026 22:55
	00/00/0000 00:00	गुरु	18/01/2026 20:40	शनि	23/01/2026 07:36	बुध	27/01/2026 15:18
	00/00/0000 00:00	शनि	19/01/2026 14:01	बुध	23/01/2026 21:24	केतु	27/01/2026 22:02
	00/00/0000 00:00	बुध	20/01/2026 05:32	केतु	24/01/2026 03:05	शुक्र	28/01/2026 17:19
	00/00/0000 00:00	केतु	20/01/2026 11:56	शुक्र	24/01/2026 19:19	सूर्य	28/01/2026 23:06
	00/00/0000 00:00	शुक्र	21/01/2026 06:12	सूर्य	25/01/2026 00:11	चंद्र	29/01/2026 08:44
	00/00/0000 00:00	सूर्य	21/01/2026 11:40	चंद्र	25/01/2026 08:18	मंगल	29/01/2026 15:29
	17/01/2026 12:39	चंद्र	21/01/2026 20:48	मंगल	25/01/2026 13:59	राहु	30/01/2026 08:50
	17/01/2026 13:37	मंगल	22/01/2026 03:12	राहु	26/01/2026 04:36	गुरु	31/01/2026 00:15

शुक्र - सूर्य - चंद्र - बुध		शुक्र - सूर्य - चंद्र - केतु		शुक्र - सूर्य - चंद्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य - चंद्र - सूर्य	
31/01/2026 00:15		04/02/2026 07:45		06/02/2026 02:21		11/02/2026 04:06	
04/02/2026 07:45		06/02/2026 02:21		11/02/2026 04:06		12/02/2026 16:38	
बुध	31/01/2026 14:55	केतु	04/02/2026 10:14	शुक्र	06/02/2026 22:39	सूर्य	11/02/2026 05:56
केतु	31/01/2026 20:57	शुक्र	04/02/2026 17:20	सूर्य	07/02/2026 04:44	चंद्र	11/02/2026 08:59
शुक्र	01/02/2026 14:12	सूर्य	04/02/2026 19:28	चंद्र	07/02/2026 14:53	मंगल	11/02/2026 11:07
सूर्य	01/02/2026 19:23	चंद्र	04/02/2026 23:01	मंगल	07/02/2026 21:59	राहु	11/02/2026 16:35
चंद्र	02/02/2026 04:00	मंगल	05/02/2026 01:30	राहु	08/02/2026 16:15	गुरु	11/02/2026 21:27
मंगल	02/02/2026 10:02	राहु	05/02/2026 07:54	गुरु	09/02/2026 08:29	शनि	12/02/2026 03:14
राहु	03/02/2026 01:34	गुरु	05/02/2026 13:34	शनि	10/02/2026 03:45	बुध	12/02/2026 08:25
गुरु	03/02/2026 15:22	शनि	05/02/2026 20:19	बुध	10/02/2026 21:00	केतु	12/02/2026 10:33
शनि	04/02/2026 07:45	बुध	06/02/2026 02:21	केतु	11/02/2026 04:06	शुक्र	12/02/2026 16:38

शुक्र - सूर्य - मंगल - मंगल		शुक्र - सूर्य - मंगल - राहु		शुक्र - सूर्य - मंगल - गुरु		शुक्र - सूर्य - मंगल - शनि	
12/02/2026 16:38		13/02/2026 22:28		17/02/2026 03:10		19/02/2026 23:21	
13/02/2026 22:28		17/02/2026 03:10		19/02/2026 23:21		23/02/2026 08:18	
मंगल	12/02/2026 18:22	राहु	14/02/2026 09:58	गुरु	17/02/2026 12:15	शनि	20/02/2026 12:10
राहु	12/02/2026 22:51	गुरु	14/02/2026 20:12	शनि	17/02/2026 23:03	बुध	20/02/2026 23:38
गुरु	13/02/2026 02:49	शनि	15/02/2026 08:20	बुध	18/02/2026 08:43	केतु	21/02/2026 04:21
शनि	13/02/2026 07:33	बुध	15/02/2026 19:12	केतु	18/02/2026 12:41	शुक्र	21/02/2026 17:51
बुध	13/02/2026 11:46	केतु	15/02/2026 23:41	शुक्र	19/02/2026 00:03	सूर्य	21/02/2026 21:54
केतु	13/02/2026 13:31	शुक्र	16/02/2026 12:28	सूर्य	19/02/2026 03:27	चंद्र	22/02/2026 04:39
शुक्र	13/02/2026 18:29	सूर्य	16/02/2026 16:18	चंद्र	19/02/2026 09:08	मंगल	22/02/2026 09:22
सूर्य	13/02/2026 19:59	चंद्र	16/02/2026 22:41	मंगल	19/02/2026 13:07	राहु	22/02/2026 21:31
चंद्र	13/02/2026 22:28	मंगल	17/02/2026 03:10	राहु	19/02/2026 23:21	गुरु	23/02/2026 08:18

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - सूर्य - मंगल - बुध	
23/02/2026 08:18	
26/02/2026 08:45	
बुध	23/02/2026 18:34
केतु	23/02/2026 22:48
शुक्र	24/02/2026 10:52
सूर्य	24/02/2026 14:30
चंद्र	24/02/2026 20:32
मंगल	25/02/2026 00:45
राहु	25/02/2026 11:37
गुरु	25/02/2026 21:17
शनि	26/02/2026 08:45

शुक्र - सूर्य - मंगल - केतु	
26/02/2026 08:45	
27/02/2026 14:35	
केतु	26/02/2026 10:29
शुक्र	26/02/2026 15:28
सूर्य	26/02/2026 16:57
चंद्र	26/02/2026 19:26
मंगल	26/02/2026 21:11
राहु	27/02/2026 01:39
गुरु	27/02/2026 05:38
शनि	27/02/2026 10:21
बुध	27/02/2026 14:35

शुक्र - सूर्य - मंगल - शुक्र	
27/02/2026 14:35	
03/03/2026 03:48	
शुक्र	28/02/2026 04:47
सूर्य	28/02/2026 09:03
चंद्र	28/02/2026 16:09
मंगल	28/02/2026 21:07
राहु	01/03/2026 09:54
गुरु	01/03/2026 21:16
शनि	02/03/2026 10:45
बुध	02/03/2026 22:50
केतु	03/03/2026 03:48

शुक्र - सूर्य - मंगल - सूर्य	
03/03/2026 03:48	
04/03/2026 05:22	
सूर्य	03/03/2026 05:05
चंद्र	03/03/2026 07:13
मंगल	03/03/2026 08:42
राहु	03/03/2026 12:32
गुरु	03/03/2026 15:57
शनि	03/03/2026 20:00
बुध	03/03/2026 23:37
केतु	04/03/2026 01:07
शुक्र	04/03/2026 05:22

शुक्र - सूर्य - मंगल - चंद्र	
04/03/2026 05:22	
05/03/2026 23:59	
चंद्र	04/03/2026 08:55
मंगल	04/03/2026 11:24
राहु	04/03/2026 17:48
गुरु	04/03/2026 23:29
शनि	05/03/2026 06:14
बुध	05/03/2026 12:16
केतु	05/03/2026 14:45
शुक्र	05/03/2026 21:51
सूर्य	05/03/2026 23:59

शुक्र - सूर्य - राहु - राहु	
05/03/2026 23:59	
14/03/2026 05:13	
राहु	07/03/2026 05:34
गुरु	08/03/2026 07:52
शनि	09/03/2026 15:06
बुध	10/03/2026 19:02
केतु	11/03/2026 06:33
शुक्र	12/03/2026 15:25
सूर्य	13/03/2026 01:17
चंद्र	13/03/2026 17:43
मंगल	14/03/2026 05:13

शुक्र - सूर्य - राहु - गुरु	
14/03/2026 05:13	
21/03/2026 12:32	
गुरु	15/03/2026 04:36
शनि	16/03/2026 08:21
बुध	17/03/2026 09:11
केतु	17/03/2026 19:25
शुक्र	19/03/2026 00:38
सूर्य	19/03/2026 09:24
चंद्र	20/03/2026 00:01
मंगल	20/03/2026 10:14
राहु	21/03/2026 12:32

शुक्र - सूर्य - राहु - शनि	
21/03/2026 12:32	
30/03/2026 04:44	
शनि	22/03/2026 21:30
बुध	24/03/2026 03:00
केतु	24/03/2026 15:08
शुक्र	26/03/2026 01:50
सूर्य	26/03/2026 12:15
चंद्र	27/03/2026 05:36
मंगल	27/03/2026 17:45
राहु	29/03/2026 00:58
गुरु	30/03/2026 04:44

शुक्र - सूर्य - राहु - बुध	
30/03/2026 04:44	
06/04/2026 23:00	
बुध	31/03/2026 07:07
केतु	31/03/2026 17:59
शुक्र	02/04/2026 01:02
सूर्य	02/04/2026 10:21
चंद्र	03/04/2026 01:52
मंगल	03/04/2026 12:44
राहु	04/04/2026 16:41
गुरु	05/04/2026 17:31
शनि	06/04/2026 23:00

शुक्र - सूर्य - राहु - केतु	
06/04/2026 23:00	
10/04/2026 03:43	
केतु	07/04/2026 03:29
शुक्र	07/04/2026 16:16
सूर्य	07/04/2026 20:06
चंद्र	08/04/2026 02:30
मंगल	08/04/2026 06:58
राहु	08/04/2026 18:28
गुरु	09/04/2026 04:42
शनि	09/04/2026 16:51
बुध	10/04/2026 03:43

शुक्र - सूर्य - राहु - शुक्र	
10/04/2026 03:43	
19/04/2026 06:52	
शुक्र	11/04/2026 16:14
सूर्य	12/04/2026 03:12
चंद्र	12/04/2026 21:27
मंगल	13/04/2026 10:14
राहु	14/04/2026 19:07
गुरु	16/04/2026 00:20
शनि	17/04/2026 11:02
बुध	18/04/2026 18:05
केतु	19/04/2026 06:52

शुक्र - सूर्य - राहु - सूर्य	
19/04/2026 06:52	
22/04/2026 00:36	
सूर्य	19/04/2026 10:09
चंद्र	19/04/2026 15:38
मंगल	19/04/2026 19:28
राहु	20/04/2026 05:19
गुरु	20/04/2026 14:05
शनि	21/04/2026 00:30
बुध	21/04/2026 09:49
केतु	21/04/2026 13:39
शुक्र	22/04/2026 00:36

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 12 वर्ष 5 मास 13 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
17/01/2026		02/07/2038		02/07/2054		02/07/2071		02/07/2089	
02/07/2038		02/07/2054		02/07/2071		02/07/2089		02/07/2100	
	17/01/2026	चंद्र	15/09/2040	बुध	28/12/2056	शुक्र	17/04/2074	सूर्य	17/07/2090
चंद्र	05/07/2027	बुध	19/01/2043	शुक्र	18/08/2059	सूर्य	01/01/2076	मंगल	06/09/2091
बुध	15/09/2029	शुक्र	14/07/2045	सूर्य	29/03/2061	मंगल	11/11/2077	गुरु	29/11/2092
शुक्र	13/01/2032	सूर्य	19/01/2047	मंगल	31/12/2062	गुरु	18/11/2079	शनि	29/03/2094
सूर्य	16/06/2033	मंगल	15/09/2048	गुरु	26/11/2064	शनि	19/01/2082	केतु	31/08/2095
मंगल	04/01/2035	गुरु	02/07/2050	शनि	16/12/2066	केतु	18/05/2084	चंद्र	07/03/2097
गुरु	09/09/2036	शनि	06/06/2052	केतु	26/02/2069	चंद्र	11/11/2086	बुध	17/10/2098
शनि	02/07/2038	केतु	02/07/2054	चंद्र	02/07/2071	बुध	02/07/2089	शुक्र	02/07/2100

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
02/07/2100		02/07/2112		03/07/2125		03/07/2139	
02/07/2112		03/07/2125		03/07/2139		00/00/0000	
मंगल	29/09/2101	गुरु	16/12/2113	शनि	12/03/2127	केतु	10/06/2141
गुरु	02/02/2103	शनि	12/07/2115	केतु	01/01/2129	चंद्र	18/01/2142
शनि	15/07/2104	केतु	17/03/2117	चंद्र	07/12/2130		00/00/0000
केतु	02/02/2106	चंद्र	01/01/2119	बुध	26/12/2132		00/00/0000
चंद्र	29/09/2107	बुध	27/11/2120	शुक्र	27/02/2135		00/00/0000
बुध	03/07/2109	शुक्र	04/12/2122	सूर्य	26/06/2136		00/00/0000
शुक्र	14/05/2111	सूर्य	27/02/2124	मंगल	07/12/2137		00/00/0000
सूर्य	02/07/2112	मंगल	03/07/2125	गुरु	03/07/2139		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल	
17/01/2026		05/07/2027		15/09/2029		13/01/2032		16/06/2033	
05/07/2027		15/09/2029		13/01/2032		16/06/2033		04/01/2035	
	00/00/0000	बुध	31/10/2027	शुक्र	25/01/2030	सूर्य	02/03/2032	मंगल	13/08/2033
	17/01/2026	शुक्र	03/03/2028	सूर्य	16/04/2030	मंगल	25/04/2032	गुरु	16/10/2033
शुक्र	08/05/2026	सूर्य	19/05/2028	मंगल	13/07/2030	गुरु	22/06/2032	शनि	23/12/2033
सूर्य	18/07/2026	मंगल	10/08/2028	गुरु	16/10/2030	शनि	24/08/2032	केतु	07/03/2034
मंगल	05/10/2026	गुरु	08/11/2028	शनि	26/01/2031	केतु	30/10/2032	चंद्र	24/05/2034
गुरु	28/12/2026	शनि	12/02/2029	केतु	16/05/2031	चंद्र	10/01/2033	बुध	15/08/2034
शनि	29/03/2027	केतु	27/05/2029	चंद्र	11/09/2031	बुध	27/03/2033	शुक्र	11/11/2034
केतु	05/07/2027	चंद्र	15/09/2029	बुध	13/01/2032	शुक्र	16/06/2033	सूर्य	04/01/2035

केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र	
04/01/2035		09/09/2036		02/07/2038		15/09/2040		19/01/2043	
09/09/2036		02/07/2038		15/09/2040		19/01/2043		14/07/2045	
गुरु	13/03/2035	शनि	27/11/2036	चंद्र	21/10/2038	बुध	18/01/2041	शुक्र	09/06/2043
शनि	26/05/2035	केतु	21/02/2037	बुध	16/02/2039	शुक्र	31/05/2041	सूर्य	03/09/2043
केतु	14/08/2035	चंद्र	23/05/2037	शुक्र	21/06/2039	सूर्य	20/08/2041	मंगल	06/12/2043
चंद्र	07/11/2035	बुध	28/08/2037	सूर्य	06/09/2039	मंगल	17/11/2041	गुरु	16/03/2044
बुध	05/02/2036	शुक्र	09/12/2037	मंगल	28/11/2039	गुरु	21/02/2042	शनि	04/07/2044
शुक्र	10/05/2036	सूर्य	09/02/2038	गुरु	26/02/2040	शनि	04/06/2042	केतु	29/10/2044
सूर्य	07/07/2036	मंगल	19/04/2038	शनि	03/06/2040	केतु	23/09/2042	चंद्र	03/03/2045
मंगल	09/09/2036	गुरु	02/07/2038	केतु	15/09/2040	चंद्र	19/01/2043	बुध	14/07/2045

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
14/07/2045		19/01/2047		15/09/2048		02/07/2050		06/06/2052	
19/01/2047		15/09/2048		02/07/2050		06/06/2052		02/07/2054	
सूर्य	05/09/2045	मंगल	23/03/2047	गुरु	27/11/2048	शनि	25/09/2050	केतु	12/09/2052
मंगल	01/11/2045	गुरु	30/05/2047	शनि	14/02/2049	केतु	25/12/2050	चंद्र	25/12/2052
गुरु	02/01/2046	शनि	11/08/2047	केतु	10/05/2049	चंद्र	01/04/2051	बुध	15/04/2053
शनि	10/03/2046	केतु	28/10/2047	चंद्र	08/08/2049	बुध	14/07/2051	शुक्र	10/08/2053
केतु	21/05/2046	चंद्र	19/01/2048	बुध	12/11/2049	शुक्र	31/10/2051	सूर्य	21/10/2053
चंद्र	05/08/2046	बुध	17/04/2048	शुक्र	22/02/2050	सूर्य	06/01/2052	मंगल	07/01/2054
बुध	25/10/2046	शुक्र	19/07/2048	सूर्य	25/04/2050	मंगल	19/03/2052	गुरु	02/04/2054
शुक्र	19/01/2047	सूर्य	15/09/2048	मंगल	02/07/2050	गुरु	06/06/2052	शनि	02/07/2054

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
02/07/2054		28/12/2056		18/08/2059		29/03/2061		31/12/2062	
28/12/2056		18/08/2059		29/03/2061		31/12/2062		26/11/2064	
बुध	12/11/2054	शुक्र	26/05/2057	सूर्य	13/10/2059	मंगल	03/06/2061	गुरु	19/03/2063
शुक्र	02/04/2055	सूर्य	26/08/2057	मंगल	13/12/2059	गुरु	14/08/2061	शनि	11/06/2063
सूर्य	28/06/2055	मंगल	03/12/2057	गुरु	17/02/2060	शनि	31/10/2061	केतु	09/09/2063
मंगल	30/09/2055	गुरु	21/03/2058	शनि	28/04/2060	केतु	22/01/2062	चंद्र	14/12/2063
गुरु	10/01/2056	शनि	16/07/2058	केतु	13/07/2060	चंद्र	21/04/2062	बुध	25/03/2064
शनि	29/04/2056	केतु	17/11/2058	चंद्र	02/10/2060	बुध	24/07/2062	शुक्र	11/07/2064
केतु	24/08/2056	चंद्र	30/03/2059	बुध	28/12/2060	शुक्र	31/10/2062	सूर्य	15/09/2064
चंद्र	28/12/2056	बुध	18/08/2059	शुक्र	29/03/2061	सूर्य	31/12/2062	मंगल	26/11/2064

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
26/11/2064		16/12/2066		26/02/2069		02/07/2071		17/04/2074	
16/12/2066		26/02/2069		02/07/2071		17/04/2074		01/01/2076	
शनि	25/02/2065	केतु	29/03/2067	चंद्र	24/06/2069	शुक्र	07/12/2071	सूर्य	15/06/2074
केतु	02/06/2065	चंद्र	18/07/2067	बुध	27/10/2069	सूर्य	13/03/2072	मंगल	19/08/2074
चंद्र	13/09/2065	बुध	13/11/2067	शुक्र	09/03/2070	मंगल	27/06/2072	गुरु	28/10/2074
बुध	01/01/2066	शुक्र	16/03/2068	सूर्य	29/05/2070	गुरु	19/10/2072	शनि	11/01/2075
शुक्र	27/04/2066	सूर्य	01/06/2068	मंगल	26/08/2070	शनि	19/02/2073	केतु	02/04/2075
सूर्य	07/07/2066	मंगल	23/08/2068	गुरु	30/11/2070	केतु	01/07/2073	चंद्र	27/06/2075
मंगल	23/09/2066	गुरु	21/11/2068	शनि	13/03/2071	चंद्र	19/11/2073	बुध	26/09/2075
गुरु	16/12/2066	शनि	26/02/2069	केतु	02/07/2071	बुध	17/04/2074	शुक्र	01/01/2076

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
01/01/2076		11/11/2077		18/11/2079		19/01/2082		18/05/2084	
11/11/2077		18/11/2079		19/01/2082		18/05/2084		11/11/2086	
मंगल	11/03/2076	गुरु	01/02/2078	शनि	21/02/2080	केतु	09/05/2082	चंद्र	20/09/2084
गुरु	26/05/2076	शनि	01/05/2078	केतु	03/06/2080	चंद्र	03/09/2082	बुध	31/01/2085
शनि	16/08/2076	केतु	05/08/2078	चंद्र	20/09/2080	बुध	06/01/2083	शुक्र	21/06/2085
केतु	12/11/2076	चंद्र	14/11/2078	बुध	15/01/2081	शुक्र	18/05/2083	सूर्य	15/09/2085
चंद्र	14/02/2077	बुध	02/03/2079	शुक्र	18/05/2081	सूर्य	06/08/2083	मंगल	18/12/2085
बुध	25/05/2077	शुक्र	24/06/2079	सूर्य	01/08/2081	मंगल	02/11/2083	गुरु	29/03/2086
शुक्र	07/09/2077	सूर्य	02/09/2079	मंगल	22/10/2081	गुरु	06/02/2084	शनि	17/07/2086
सूर्य	11/11/2077	मंगल	18/11/2079	गुरु	19/01/2082	शनि	18/05/2084	केतु	11/11/2086

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध	
11/11/2086	
02/07/2089	
बुध	01/04/2087
शुक्र	29/08/2087
सूर्य	28/11/2087
मंगल	07/03/2088
गुरु	23/06/2088
शनि	17/10/2088
केतु	19/02/2089
चंद्र	02/07/2089

सूर्य - सूर्य	
02/07/2089	
17/07/2090	
सूर्य	07/08/2089
मंगल	15/09/2089
गुरु	28/10/2089
शनि	13/12/2089
केतु	31/01/2090
चंद्र	25/03/2090
बुध	19/05/2090
शुक्र	17/07/2090

सूर्य - मंगल	
17/07/2090	
06/09/2091	
मंगल	29/08/2090
गुरु	15/10/2090
शनि	04/12/2090
केतु	27/01/2091
चंद्र	25/03/2091
बुध	25/05/2091
शुक्र	29/07/2091
सूर्य	06/09/2091

सूर्य - गुरु	
06/09/2091	
29/11/2092	
गुरु	27/10/2091
शनि	20/12/2091
केतु	16/02/2092
चंद्र	18/04/2092
बुध	23/06/2092
शुक्र	01/09/2092
सूर्य	14/10/2092
मंगल	29/11/2092

सूर्य - शनि	
29/11/2092	
29/03/2094	
शनि	27/01/2093
केतु	31/03/2093
चंद्र	05/06/2093
बुध	16/08/2093
शुक्र	30/10/2093
सूर्य	15/12/2093
मंगल	03/02/2094
गुरु	29/03/2094

सूर्य - केतु	
29/03/2094	
31/08/2095	
केतु	04/06/2094
चंद्र	15/08/2094
बुध	30/10/2094
शुक्र	19/01/2095
सूर्य	09/03/2095
मंगल	02/05/2095
गुरु	29/06/2095
शनि	31/08/2095

सूर्य - चंद्र	
31/08/2095	
07/03/2097	
चंद्र	15/11/2095
बुध	04/02/2096
शुक्र	30/04/2096
सूर्य	22/06/2096
मंगल	18/08/2096
गुरु	19/10/2096
शनि	25/12/2096
केतु	07/03/2097

सूर्य - बुध	
07/03/2097	
17/10/2098	
बुध	01/06/2097
शुक्र	01/09/2097
सूर्य	26/10/2097
मंगल	26/12/2097
गुरु	02/03/2098
शनि	12/05/2098
केतु	28/07/2098
चंद्र	17/10/2098

सूर्य - शुक्र	
17/10/2098	
02/07/2100	
शुक्र	22/01/2099
सूर्य	22/03/2099
मंगल	25/05/2099
गुरु	03/08/2099
शनि	17/10/2099
केतु	06/01/2100
चंद्र	02/04/2100
बुध	02/07/2100

मंगल - मंगल	
02/07/2100	
29/09/2101	
मंगल	18/08/2100
गुरु	08/10/2100
शनि	02/12/2100
केतु	29/01/2101
चंद्र	02/04/2101
बुध	07/06/2101
शुक्र	17/08/2101
सूर्य	29/09/2101

मंगल - गुरु	
29/09/2101	
02/02/2103	
गुरु	23/11/2101
शनि	21/01/2102
केतु	26/03/2102
चंद्र	01/06/2102
बुध	12/08/2102
शुक्र	27/10/2102
सूर्य	13/12/2102
मंगल	02/02/2103

मंगल - शनि	
02/02/2103	
15/07/2104	
शनि	07/04/2103
केतु	14/06/2103
चंद्र	26/08/2103
बुध	12/11/2103
शुक्र	02/02/2104
सूर्य	23/03/2104
मंगल	17/05/2104
गुरु	15/07/2104

मंगल - केतु	
15/07/2104	
02/02/2106	
केतु	26/09/2104
चंद्र	13/12/2104
बुध	06/03/2105
शुक्र	02/06/2105
सूर्य	26/07/2105
मंगल	23/09/2105
गुरु	25/11/2105
शनि	02/02/2106

मंगल - चंद्र	
02/02/2106	
29/09/2107	
चंद्र	26/04/2106
बुध	24/07/2106
शुक्र	25/10/2106
सूर्य	22/12/2106
मंगल	22/02/2107
गुरु	01/05/2107
शनि	13/07/2107
केतु	29/09/2107

मंगल - बुध	
29/09/2107	
03/07/2109	
बुध	01/01/2108
शुक्र	10/04/2108
सूर्य	10/06/2108
मंगल	15/08/2108
गुरु	26/10/2108
शनि	12/01/2109
केतु	05/04/2109
चंद्र	03/07/2109

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
03/07/2109		14/05/2111		02/07/2112		16/12/2113		12/07/2115	
14/05/2111		02/07/2112		16/12/2113		12/07/2115		17/03/2117	
शुक्र	16/10/2109	सूर्य	22/06/2111	गुरु	31/08/2112	शनि	24/02/2114	केतु	30/09/2115
सूर्य	20/12/2109	मंगल	04/08/2111	शनि	03/11/2112	केतु	09/05/2114	चंद्र	24/12/2115
मंगल	28/02/2110	गुरु	20/09/2111	केतु	11/01/2113	चंद्र	27/07/2114	बुध	23/03/2116
गुरु	15/05/2110	शनि	09/11/2111	चंद्र	25/03/2113	बुध	19/10/2114	शुक्र	26/06/2116
शनि	05/08/2110	केतु	02/01/2112	बुध	11/06/2113	शुक्र	16/01/2115	सूर्य	23/08/2116
केतु	01/11/2110	चंद्र	28/02/2112	शुक्र	02/09/2113	सूर्य	11/03/2115	मंगल	26/10/2116
चंद्र	03/02/2111	बुध	29/04/2112	सूर्य	22/10/2113	मंगल	09/05/2115	गुरु	02/01/2117
बुध	14/05/2111	शुक्र	02/07/2112	मंगल	16/12/2113	गुरु	12/07/2115	शनि	17/03/2117

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
17/03/2117		01/01/2119		27/11/2120		04/12/2122		27/02/2124	
01/01/2119		27/11/2120		04/12/2122		27/02/2124		03/07/2125	
चंद्र	16/06/2117	बुध	13/04/2119	शुक्र	22/03/2121	सूर्य	16/01/2123	मंगल	18/04/2124
बुध	20/09/2117	शुक्र	30/07/2119	सूर्य	30/05/2121	मंगल	03/03/2123	गुरु	12/06/2124
शुक्र	30/12/2117	सूर्य	04/10/2119	मंगल	15/08/2121	गुरु	23/04/2123	शनि	10/08/2124
सूर्य	02/03/2118	मंगल	15/12/2119	गुरु	05/11/2121	शनि	16/06/2123	केतु	13/10/2124
मंगल	09/05/2118	गुरु	02/03/2120	शनि	02/02/2122	केतु	13/08/2123	चंद्र	20/12/2124
गुरु	22/07/2118	शनि	25/05/2120	केतु	08/05/2122	चंद्र	14/10/2123	बुध	02/03/2125
शनि	09/10/2118	केतु	23/08/2120	चंद्र	18/08/2122	बुध	19/12/2123	शुक्र	17/05/2125
केतु	01/01/2119	चंद्र	27/11/2120	बुध	04/12/2122	शुक्र	27/02/2124	सूर्य	03/07/2125

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
03/07/2125		12/03/2127		01/01/2129		07/12/2130		26/12/2132	
12/03/2127		01/01/2129		07/12/2130		26/12/2132		27/02/2135	
शनि	15/09/2125	केतु	05/06/2127	चंद्र	08/04/2129	बुध	27/03/2131	शुक्र	28/04/2133
केतु	04/12/2125	चंद्र	04/09/2127	बुध	21/07/2129	शुक्र	21/07/2131	सूर्य	12/07/2133
चंद्र	27/02/2126	बुध	10/12/2127	शुक्र	07/11/2129	सूर्य	30/09/2131	मंगल	02/10/2133
बुध	28/05/2126	शुक्र	22/03/2128	सूर्य	13/01/2130	मंगल	17/12/2131	गुरु	30/12/2133
शुक्र	01/09/2126	सूर्य	24/05/2128	मंगल	27/03/2130	गुरु	10/03/2132	शनि	05/04/2134
सूर्य	30/10/2126	मंगल	31/07/2128	गुरु	14/06/2130	शनि	08/06/2132	केतु	16/07/2134
मंगल	01/01/2127	गुरु	13/10/2128	शनि	07/09/2130	केतु	13/09/2132	चंद्र	03/11/2134
गुरु	12/03/2127	शनि	01/01/2129	केतु	07/12/2130	चंद्र	26/12/2132	बुध	27/02/2135

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 0 मास 25 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
17/01/2026		11/02/2037		11/02/2041		13/10/2047		13/06/2052	
11/02/2037		11/02/2041		13/10/2047		13/06/2052		13/06/2064	
	17/01/2026	सूर्य	25/04/2037	चंद्र	02/09/2041	मंगल	21/01/2048	राहु	01/04/2054
सूर्य	03/09/2026	चंद्र	25/08/2037	मंगल	22/01/2042	राहु	02/10/2048	गुरु	07/11/2055
चंद्र	13/10/2027	मंगल	18/11/2037	राहु	23/01/2043	गुरु	18/05/2049	शनि	01/10/2057
मंगल	23/07/2028	राहु	26/06/2038	गुरु	13/12/2043	शनि	12/02/2050	बुध	14/06/2059
राहु	24/07/2030	गुरु	06/01/2039	शनि	02/01/2045	बुध	11/10/2050	केतु	24/02/2060
गुरु	03/05/2032	शनि	26/08/2039	बुध	13/12/2045	केतु	18/01/2051	शुक्र	24/02/2062
शनि	13/06/2034	बुध	20/03/2040	केतु	04/05/2046	शुक्र	30/10/2051	सूर्य	01/10/2062
बुध	03/05/2036	केतु	13/06/2040	शुक्र	14/06/2047	सूर्य	23/01/2052	चंद्र	01/10/2063
केतु	11/02/2037	शुक्र	11/02/2041	सूर्य	13/10/2047	चंद्र	13/06/2052	मंगल	13/06/2064

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
13/06/2064		12/02/2075		13/10/2087		12/02/2099		14/10/2103	
12/02/2075		13/10/2087		12/02/2099		14/10/2103		00/00/0000	
गुरु	14/11/2065	शनि	13/02/2077	बुध	22/05/2089	केतु	22/05/2099	शुक्र	03/01/2106
शनि	24/07/2067	बुध	01/12/2078	केतु	18/01/2090	शुक्र	02/03/2100	सूर्य	18/01/2106
बुध	26/01/2069	केतु	28/08/2079	शुक्र	09/12/2091	सूर्य	27/05/2100		00/00/0000
केतु	10/09/2069	शुक्र	07/10/2081	सूर्य	03/07/2092	चंद्र	16/10/2100		00/00/0000
शुक्र	22/06/2071	सूर्य	26/05/2082	चंद्र	13/06/2093	मंगल	23/01/2101		00/00/0000
सूर्य	03/01/2072	चंद्र	16/06/2083	मंगल	10/02/2094	राहु	06/10/2101		00/00/0000
चंद्र	22/11/2072	मंगल	11/03/2084	राहु	23/10/2095	गुरु	21/05/2102		00/00/0000
मंगल	07/07/2073	राहु	03/02/2086	गुरु	27/04/2097	शनि	15/02/2103		00/00/0000
राहु	12/02/2075	गुरु	13/10/2087	शनि	12/02/2099	बुध	14/10/2103		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
17/01/2026		03/09/2026		13/10/2027		23/07/2028		24/07/2030	
03/09/2026		13/10/2027		23/07/2028		24/07/2030		03/05/2032	
	17/01/2026	चंद्र	06/10/2026	मंगल	30/10/2027	राहु	10/11/2028	गुरु	18/10/2030
चंद्र	03/02/2026	मंगल	30/10/2026	राहु	12/12/2027	गुरु	15/02/2029	शनि	29/01/2031
मंगल	18/02/2026	राहु	30/12/2026	गुरु	18/01/2028	शनि	11/06/2029	बुध	01/05/2031
राहु	26/03/2026	गुरु	22/02/2027	शनि	03/03/2028	बुध	23/09/2029	केतु	08/06/2031
गुरु	28/04/2026	शनि	27/04/2027	बुध	13/04/2028	केतु	04/11/2029	शुक्र	24/09/2031
शनि	05/06/2026	बुध	24/06/2027	केतु	29/04/2028	शुक्र	06/03/2030	सूर्य	27/10/2031
बुध	10/07/2026	केतु	17/07/2027	शुक्र	16/06/2028	सूर्य	11/04/2030	चंद्र	20/12/2031
केतु	24/07/2026	शुक्र	23/09/2027	सूर्य	30/06/2028	चंद्र	11/06/2030	मंगल	27/01/2032
शुक्र	03/09/2026	सूर्य	13/10/2027	चंद्र	23/07/2028	मंगल	24/07/2030	राहु	03/05/2032

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
03/05/2032		13/06/2034		03/05/2036		11/02/2037		25/04/2037	
13/06/2034		03/05/2036		11/02/2037		25/04/2037		25/08/2037	
शनि	02/09/2032	बुध	19/09/2034	केतु	20/05/2036	सूर्य	15/02/2037	चंद्र	06/05/2037
बुध	21/12/2032	केतु	29/10/2034	शुक्र	06/07/2036	चंद्र	21/02/2037	मंगल	13/05/2037
केतु	04/02/2033	शुक्र	21/02/2035	सूर्य	20/07/2036	मंगल	25/02/2037	राहु	31/05/2037
शुक्र	12/06/2033	सूर्य	28/03/2035	चंद्र	13/08/2036	राहु	08/03/2037	गुरु	16/06/2037
सूर्य	21/07/2033	चंद्र	24/05/2035	मंगल	30/08/2036	गुरु	18/03/2037	शनि	05/07/2037
चंद्र	23/09/2033	मंगल	04/07/2035	राहु	11/10/2036	शनि	30/03/2037	बुध	23/07/2037
मंगल	07/11/2033	राहु	15/10/2035	गुरु	18/11/2036	बुध	09/04/2037	केतु	30/07/2037
राहु	03/03/2034	गुरु	15/01/2036	शनि	02/01/2037	केतु	13/04/2037	शुक्र	19/08/2037
गुरु	13/06/2034	शनि	03/05/2036	बुध	11/02/2037	शुक्र	25/04/2037	सूर्य	25/08/2037

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
25/08/2037		18/11/2037		26/06/2038		06/01/2039		26/08/2039	
18/11/2037		26/06/2038		06/01/2039		26/08/2039		20/03/2040	
मंगल	30/08/2037	राहु	21/12/2037	गुरु	21/07/2038	शनि	12/02/2039	बुध	24/09/2039
राहु	12/09/2037	गुरु	19/01/2038	शनि	21/08/2038	बुध	17/03/2039	केतु	06/10/2039
गुरु	23/09/2037	शनि	23/02/2038	बुध	18/09/2038	केतु	30/03/2039	शुक्र	10/11/2039
शनि	07/10/2037	बुध	26/03/2038	केतु	29/09/2038	शुक्र	08/05/2039	सूर्य	20/11/2039
बुध	19/10/2037	केतु	08/04/2038	शुक्र	01/11/2038	सूर्य	19/05/2039	चंद्र	07/12/2039
केतु	24/10/2037	शुक्र	15/05/2038	सूर्य	10/11/2038	चंद्र	08/06/2039	मंगल	19/12/2039
शुक्र	07/11/2037	सूर्य	25/05/2038	चंद्र	27/11/2038	मंगल	21/06/2039	राहु	19/01/2040
सूर्य	11/11/2037	चंद्र	13/06/2038	मंगल	08/12/2038	राहु	26/07/2039	गुरु	16/02/2040
चंद्र	18/11/2037	मंगल	26/06/2038	राहु	06/01/2039	गुरु	26/08/2039	शनि	20/03/2040

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
20/03/2040		13/06/2040		11/02/2041		02/09/2041		22/01/2042	
13/06/2040		11/02/2041		02/09/2041		22/01/2042		23/01/2043	
केतु	25/03/2040	शुक्र	23/07/2040	चंद्र	28/02/2041	मंगल	11/09/2041	राहु	18/03/2042
शुक्र	08/04/2040	सूर्य	05/08/2040	मंगल	12/03/2041	राहु	02/10/2041	गुरु	06/05/2042
सूर्य	12/04/2040	चंद्र	25/08/2040	राहु	12/04/2041	गुरु	21/10/2041	शनि	03/07/2042
चंद्र	19/04/2040	मंगल	08/09/2040	गुरु	09/05/2041	शनि	12/11/2041	बुध	23/08/2042
मंगल	24/04/2040	राहु	15/10/2040	शनि	10/06/2041	बुध	02/12/2041	केतु	14/09/2042
राहु	07/05/2040	गुरु	16/11/2040	बुध	08/07/2041	केतु	11/12/2041	शुक्र	14/11/2042
गुरु	18/05/2040	शनि	25/12/2040	केतु	20/07/2041	शुक्र	03/01/2042	सूर्य	02/12/2042
शनि	01/06/2040	बुध	28/01/2041	शुक्र	23/08/2041	सूर्य	10/01/2042	चंद्र	01/01/2043
बुध	13/06/2040	केतु	11/02/2041	सूर्य	02/09/2041	चंद्र	22/01/2042	मंगल	23/01/2043

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
23/01/2043		13/12/2043		02/01/2045		13/12/2045		04/05/2046	
13/12/2043		02/01/2045		13/12/2045		04/05/2046		14/06/2047	
गुरु	07/03/2043	शनि	12/02/2044	बुध	20/02/2045	केतु	21/12/2045	शुक्र	10/07/2046
शनि	27/04/2043	बुध	07/04/2044	केतु	12/03/2045	शुक्र	14/01/2046	सूर्य	31/07/2046
बुध	12/06/2043	केतु	29/04/2044	शुक्र	08/05/2045	सूर्य	21/01/2046	चंद्र	03/09/2046
केतु	01/07/2043	शुक्र	03/07/2044	सूर्य	25/05/2045	चंद्र	02/02/2046	मंगल	26/09/2046
शुक्र	24/08/2043	सूर्य	22/07/2044	चंद्र	23/06/2045	मंगल	10/02/2046	राहु	26/11/2046
सूर्य	10/09/2043	चंद्र	23/08/2044	मंगल	13/07/2045	राहु	03/03/2046	गुरु	19/01/2047
चंद्र	07/10/2043	मंगल	15/09/2044	राहु	03/09/2045	गुरु	22/03/2046	शनि	24/03/2047
मंगल	26/10/2043	राहु	11/11/2044	गुरु	19/10/2045	शनि	14/04/2046	बुध	21/05/2047
राहु	13/12/2043	गुरु	02/01/2045	शनि	13/12/2045	बुध	04/05/2046	केतु	14/06/2047

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
14/06/2047		13/10/2047		21/01/2048		02/10/2048		18/05/2049	
13/10/2047		21/01/2048		02/10/2048		18/05/2049		12/02/2050	
सूर्य	20/06/2047	मंगल	19/10/2047	राहु	28/02/2048	गुरु	02/11/2048	शनि	29/06/2049
चंद्र	30/06/2047	राहु	03/11/2047	गुरु	02/04/2048	शनि	08/12/2048	बुध	07/08/2049
मंगल	07/07/2047	गुरु	16/11/2047	शनि	13/05/2048	बुध	09/01/2049	केतु	22/08/2049
राहु	25/07/2047	शनि	02/12/2047	बुध	18/06/2048	केतु	22/01/2049	शुक्र	06/10/2049
गुरु	10/08/2047	बुध	16/12/2047	केतु	03/07/2048	शुक्र	01/03/2049	सूर्य	20/10/2049
शनि	30/08/2047	केतु	22/12/2047	शुक्र	14/08/2048	सूर्य	12/03/2049	चंद्र	11/11/2049
बुध	16/09/2047	शुक्र	08/01/2048	सूर्य	27/08/2048	चंद्र	31/03/2049	मंगल	27/11/2049
केतु	23/09/2047	सूर्य	12/01/2048	चंद्र	18/09/2048	मंगल	14/04/2049	राहु	07/01/2050
शुक्र	13/10/2047	चंद्र	21/01/2048	मंगल	02/10/2048	राहु	18/05/2049	गुरु	12/02/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
12/02/2050		11/10/2050		18/01/2051		30/10/2051		23/01/2052	
11/10/2050		18/01/2051		30/10/2051		23/01/2052		13/06/2052	
बुध	18/03/2050	केतु	17/10/2050	शुक्र	07/03/2051	सूर्य	03/11/2051	चंद्र	04/02/2052
केतु	01/04/2050	शुक्र	02/11/2050	सूर्य	21/03/2051	चंद्र	10/11/2051	मंगल	12/02/2052
शुक्र	11/05/2050	सूर्य	07/11/2050	चंद्र	14/04/2051	मंगल	15/11/2051	राहु	04/03/2052
सूर्य	23/05/2050	चंद्र	16/11/2050	मंगल	30/04/2051	राहु	28/11/2051	गुरु	23/03/2052
चंद्र	12/06/2050	मंगल	21/11/2050	राहु	12/06/2051	गुरु	09/12/2051	शनि	15/04/2052
मंगल	26/06/2050	राहु	06/12/2050	गुरु	20/07/2051	शनि	23/12/2051	बुध	05/05/2052
राहु	02/08/2050	गुरु	20/12/2050	शनि	03/09/2051	बुध	04/01/2052	केतु	13/05/2052
गुरु	03/09/2050	शनि	04/01/2051	बुध	13/10/2051	केतु	09/01/2052	शुक्र	06/06/2052
शनि	11/10/2050	बुध	18/01/2051	केतु	30/10/2051	शुक्र	23/01/2052	सूर्य	13/06/2052

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
13/06/2052		01/04/2054		07/11/2055		01/10/2057		14/06/2059	
01/04/2054		07/11/2055		01/10/2057		14/06/2059		24/02/2060	
राहु	19/09/2052	गुरु	18/06/2054	शनि	25/02/2056	बुध	28/12/2057	केतु	29/06/2059
गुरु	16/12/2052	शनि	19/09/2054	बुध	02/06/2056	केतु	02/02/2058	शुक्र	10/08/2059
शनि	30/03/2053	बुध	11/12/2054	केतु	12/07/2056	शुक्र	16/05/2058	सूर्य	23/08/2059
बुध	01/07/2053	केतु	14/01/2055	शुक्र	05/11/2056	सूर्य	16/06/2058	चंद्र	13/09/2059
केतु	09/08/2053	शुक्र	21/04/2055	सूर्य	10/12/2056	चंद्र	07/08/2058	मंगल	28/09/2059
शुक्र	26/11/2053	सूर्य	20/05/2055	चंद्र	06/02/2057	मंगल	12/09/2058	राहु	05/11/2059
सूर्य	29/12/2053	चंद्र	08/07/2055	मंगल	18/03/2057	राहु	14/12/2058	गुरु	10/12/2059
चंद्र	22/02/2054	मंगल	11/08/2055	राहु	30/06/2057	गुरु	07/03/2059	शनि	19/01/2060
मंगल	01/04/2054	राहु	07/11/2055	गुरु	01/10/2057	शनि	14/06/2059	बुध	24/02/2060

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
24/02/2060		24/02/2062		01/10/2062		01/10/2063		13/06/2064	
24/02/2062		01/10/2062		01/10/2063		13/06/2064		14/11/2065	
शुक्र	25/06/2060	सूर्य	07/03/2062	चंद्र	31/10/2062	मंगल	16/10/2063	गुरु	21/08/2064
सूर्य	01/08/2060	चंद्र	25/03/2062	मंगल	22/11/2062	राहु	23/11/2063	शनि	11/11/2064
चंद्र	30/09/2060	मंगल	07/04/2062	राहु	15/01/2063	गुरु	28/12/2063	बुध	24/01/2065
मंगल	12/11/2060	राहु	10/05/2062	गुरु	05/03/2063	शनि	06/02/2064	केतु	23/02/2065
राहु	02/03/2061	गुरु	08/06/2062	शनि	02/05/2063	बुध	13/03/2064	शुक्र	21/05/2065
गुरु	07/06/2061	शनि	13/07/2062	बुध	23/06/2063	केतु	28/03/2064	सूर्य	16/06/2065
शनि	01/10/2061	बुध	13/08/2062	केतु	14/07/2063	शुक्र	10/05/2064	चंद्र	29/07/2065
बुध	12/01/2062	केतु	25/08/2062	शुक्र	13/09/2063	सूर्य	23/05/2064	मंगल	28/08/2065
केतु	24/02/2062	शुक्र	01/10/2062	सूर्य	01/10/2063	चंद्र	13/06/2064	राहु	14/11/2065

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
14/11/2065		24/07/2067		26/01/2069		10/09/2069		22/06/2071	
24/07/2067		26/01/2069		10/09/2069		22/06/2071		03/01/2072	
शनि	20/02/2066	बुध	10/10/2067	केतु	08/02/2069	शुक्र	28/12/2069	सूर्य	01/07/2071
बुध	18/05/2066	केतु	12/11/2067	शुक्र	18/03/2069	सूर्य	29/01/2070	चंद्र	18/07/2071
केतु	23/06/2066	शुक्र	12/02/2068	सूर्य	30/03/2069	चंद्र	24/03/2070	मंगल	29/07/2071
शुक्र	04/10/2066	सूर्य	10/03/2068	चंद्र	18/04/2069	मंगल	01/05/2070	राहु	27/08/2071
सूर्य	04/11/2066	चंद्र	25/04/2068	मंगल	01/05/2069	राहु	06/08/2070	गुरु	22/09/2071
चंद्र	25/12/2066	मंगल	27/05/2068	राहु	04/06/2069	गुरु	01/11/2070	शनि	23/10/2071
मंगल	30/01/2067	राहु	18/08/2068	गुरु	04/07/2069	शनि	12/02/2071	बुध	20/11/2071
राहु	03/05/2067	गुरु	31/10/2068	शनि	09/08/2069	बुध	15/05/2071	केतु	01/12/2071
गुरु	24/07/2067	शनि	26/01/2069	बुध	10/09/2069	केतु	22/06/2071	शुक्र	03/01/2072

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
03/01/2072		22/11/2072		07/07/2073		12/02/2075		13/02/2077	
22/11/2072		07/07/2073		12/02/2075		13/02/2077		01/12/2078	
चंद्र	30/01/2072	मंगल	05/12/2072	राहु	03/10/2073	शनि	08/06/2075	बुध	17/05/2077
मंगल	17/02/2072	राहु	09/01/2073	गुरु	20/12/2073	बुध	20/09/2075	केतु	24/06/2077
राहु	06/04/2072	गुरु	08/02/2073	शनि	23/03/2074	केतु	01/11/2075	शुक्र	12/10/2077
गुरु	19/05/2072	शनि	16/03/2073	बुध	13/06/2074	शुक्र	02/03/2076	सूर्य	13/11/2077
शनि	10/07/2072	बुध	17/04/2073	केतु	17/07/2074	सूर्य	08/04/2076	चंद्र	07/01/2078
बुध	25/08/2072	केतु	30/04/2073	शुक्र	23/10/2074	चंद्र	08/06/2076	मंगल	14/02/2078
केतु	13/09/2072	शुक्र	07/06/2073	सूर्य	21/11/2074	मंगल	21/07/2076	राहु	24/05/2078
शुक्र	06/11/2072	सूर्य	18/06/2073	चंद्र	09/01/2075	राहु	08/11/2076	गुरु	19/08/2078
सूर्य	22/11/2072	चंद्र	07/07/2073	मंगल	12/02/2075	गुरु	13/02/2077	शनि	01/12/2078

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
01/12/2078		28/08/2079		07/10/2081		26/05/2082		16/06/2083	
28/08/2079		07/10/2081		26/05/2082		16/06/2083		11/03/2084	
केतु	17/12/2078	शुक्र	03/01/2080	सूर्य	18/10/2081	चंद्र	27/06/2082	मंगल	01/07/2083
शुक्र	31/01/2079	सूर्य	11/02/2080	चंद्र	07/11/2081	मंगल	20/07/2082	राहु	11/08/2083
सूर्य	13/02/2079	चंद्र	15/04/2080	मंगल	20/11/2081	राहु	16/09/2082	गुरु	16/09/2083
चंद्र	07/03/2079	मंगल	30/05/2080	राहु	25/12/2081	गुरु	06/11/2082	शनि	29/10/2083
मंगल	23/03/2079	राहु	23/09/2080	गुरु	25/01/2082	शनि	06/01/2083	बुध	06/12/2083
राहु	03/05/2079	गुरु	03/01/2081	शनि	02/03/2082	बुध	02/03/2083	केतु	22/12/2083
गुरु	08/06/2079	शनि	06/05/2081	बुध	04/04/2082	केतु	24/03/2083	शुक्र	05/02/2084
शनि	20/07/2079	बुध	23/08/2081	केतु	18/04/2082	शुक्र	27/05/2083	सूर्य	18/02/2084
बुध	28/08/2079	केतु	07/10/2081	शुक्र	26/05/2082	सूर्य	16/06/2083	चंद्र	11/03/2084

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
11/03/2084		03/02/2086		13/10/2087		22/05/2089		18/01/2090	
03/02/2086		13/10/2087		22/05/2089		18/01/2090		09/12/2091	
राहु	24/06/2084	गुरु	27/04/2086	बुध	04/01/2088	केतु	05/06/2089	शुक्र	13/05/2090
गुरु	24/09/2084	शनि	02/08/2086	केतु	08/02/2088	शुक्र	15/07/2089	सूर्य	17/06/2090
शनि	12/01/2085	बुध	29/10/2086	शुक्र	15/05/2088	सूर्य	27/07/2089	चंद्र	13/08/2090
बुध	20/04/2085	केतु	04/12/2086	सूर्य	14/06/2088	चंद्र	16/08/2089	मंगल	22/09/2090
केतु	31/05/2085	शुक्र	17/03/2087	चंद्र	02/08/2088	मंगल	30/08/2089	राहु	04/01/2091
शुक्र	23/09/2085	सूर्य	16/04/2087	मंगल	05/09/2088	राहु	06/10/2089	गुरु	06/04/2091
सूर्य	28/10/2085	चंद्र	07/06/2087	राहु	02/12/2088	गुरु	07/11/2089	शनि	24/07/2091
चंद्र	25/12/2085	मंगल	13/07/2087	गुरु	18/02/2089	शनि	15/12/2089	बुध	30/10/2091
मंगल	03/02/2086	राहु	13/10/2087	शनि	22/05/2089	बुध	18/01/2090	केतु	09/12/2091

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
09/12/2091		03/07/2092		13/06/2093		10/02/2094		23/10/2095	
03/07/2092		13/06/2093		10/02/2094		23/10/2095		27/04/2097	
सूर्य	20/12/2091	चंद्र	01/08/2092	मंगल	27/06/2093	राहु	14/05/2094	गुरु	05/01/2096
चंद्र	06/01/2092	मंगल	21/08/2092	राहु	02/08/2093	गुरु	04/08/2094	शनि	01/04/2096
मंगल	18/01/2092	राहु	12/10/2092	गुरु	04/09/2093	शनि	11/11/2094	बुध	19/06/2096
राहु	18/02/2092	गुरु	27/11/2092	शनि	12/10/2093	बुध	07/02/2095	केतु	21/07/2096
गुरु	16/03/2092	शनि	20/01/2093	बुध	15/11/2093	केतु	15/03/2095	शुक्र	21/10/2096
शनि	18/04/2092	बुध	10/03/2093	केतु	29/11/2093	शुक्र	26/06/2095	सूर्य	17/11/2096
बुध	18/05/2092	केतु	30/03/2093	शुक्र	08/01/2094	सूर्य	28/07/2095	चंद्र	02/01/2097
केतु	30/05/2092	शुक्र	27/05/2093	सूर्य	20/01/2094	चंद्र	17/09/2095	मंगल	04/02/2097
शुक्र	03/07/2092	सूर्य	13/06/2093	चंद्र	10/02/2094	मंगल	23/10/2095	राहु	27/04/2097

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
27/04/2097		12/02/2099		22/05/2099		02/03/2100		27/05/2100	
12/02/2099		22/05/2099		02/03/2100		27/05/2100		16/10/2100	
शनि	09/08/2097	केतु	18/02/2099	शुक्र	09/07/2099	सूर्य	07/03/2100	चंद्र	07/06/2100
बुध	10/11/2097	शुक्र	06/03/2099	सूर्य	23/07/2099	चंद्र	14/03/2100	मंगल	16/06/2100
केतु	18/12/2097	सूर्य	11/03/2099	चंद्र	15/08/2099	मंगल	19/03/2100	राहु	07/07/2100
शुक्र	07/04/2098	चंद्र	19/03/2099	मंगल	01/09/2099	राहु	31/03/2100	गुरु	26/07/2100
सूर्य	09/05/2098	मंगल	25/03/2099	राहु	14/10/2099	गुरु	12/04/2100	शनि	17/08/2100
चंद्र	03/07/2098	राहु	09/04/2099	गुरु	21/11/2099	शनि	25/04/2100	बुध	07/09/2100
मंगल	10/08/2098	गुरु	22/04/2099	शनि	05/01/2100	बुध	07/05/2100	केतु	15/09/2100
राहु	16/11/2098	शनि	08/05/2099	बुध	14/02/2100	केतु	12/05/2100	शुक्र	09/10/2100
गुरु	12/02/2099	बुध	22/05/2099	केतु	02/03/2100	शुक्र	27/05/2100	सूर्य	16/10/2100

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 17 वर्ष 11 मास 3 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
17/01/2026		21/12/2043		21/12/2055		20/12/2076		21/12/2082	
21/12/2043		21/12/2055		20/12/2076		21/12/2082		21/12/2097	
गुरु	24/04/2028	राहु	21/04/2045	शुक्र	21/01/2060	सूर्य	21/04/2077	चंद्र	20/01/2085
राहु	04/06/2030	शुक्र	21/08/2047	सूर्य	22/03/2061	चंद्र	19/02/2078	मंगल	02/03/2086
शुक्र	13/02/2034	सूर्य	21/04/2048	चंद्र	20/02/2064	मंगल	01/08/2078	बुध	11/07/2088
सूर्य	05/03/2035	चंद्र	21/12/2049	मंगल	10/09/2065	बुध	12/07/2079	शनि	30/11/2089
चंद्र	24/10/2037	मंगल	10/11/2050	बुध	30/12/2068	शनि	31/01/2080	गुरु	21/07/2092
मंगल	22/03/2039	बुध	30/09/2052	शनि	11/12/2070	गुरु	19/02/2081	राहु	22/03/2094
बुध	19/03/2042	शनि	10/11/2053	गुरु	21/08/2074	राहु	21/10/2081	शुक्र	19/02/2097
शनि	21/12/2043	गुरु	21/12/2055	राहु	20/12/2076	शुक्र	21/12/2082	सूर्य	21/12/2097

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
21/12/2097		22/12/2105		22/12/2122		21/12/2132	
22/12/2105		22/12/2122		21/12/2132		00/00/0000	
मंगल	25/07/2098	बुध	25/08/2108	शनि	25/11/2123	गुरु	18/01/2134
बुध	28/10/2099	शनि	23/03/2110	गुरु	29/08/2125		00/00/0000
शनि	26/07/2100	गुरु	19/03/2113	राहु	08/10/2126		00/00/0000
गुरु	22/12/2101	राहु	07/02/2115	शुक्र	18/09/2128		00/00/0000
राहु	11/11/2102	शुक्र	30/05/2118	सूर्य	09/04/2129		00/00/0000
शुक्र	01/06/2104	सूर्य	10/05/2119	चंद्र	29/08/2130		00/00/0000
सूर्य	11/11/2104	चंद्र	18/09/2121	मंगल	26/05/2131		00/00/0000
चंद्र	22/12/2105	मंगल	22/12/2122	बुध	21/12/2132		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
17/01/2026		24/04/2028		04/06/2030		13/02/2034		05/03/2035	
24/04/2028		04/06/2030		13/02/2034		05/03/2035		24/10/2037	
	00/00/0000	राहु	19/07/2028	शुक्र	22/02/2031	सूर्य	06/03/2034	चंद्र	17/07/2035
	17/01/2026	शुक्र	16/12/2028	सूर्य	08/05/2031	चंद्र	29/04/2034	मंगल	27/09/2035
शुक्र	31/07/2026	सूर्य	28/01/2029	चंद्र	11/11/2031	मंगल	27/05/2034	बुध	25/02/2036
सूर्य	07/10/2026	चंद्र	15/05/2029	मंगल	19/02/2032	बुध	27/07/2034	शनि	24/05/2036
चंद्र	26/03/2027	मंगल	11/07/2029	बुध	18/09/2032	शनि	01/09/2034	गुरु	10/11/2036
मंगल	24/06/2027	बुध	09/11/2029	शनि	21/01/2033	गुरु	07/11/2034	राहु	25/02/2037
बुध	02/01/2028	शनि	20/01/2030	गुरु	16/09/2033	राहु	20/12/2034	शुक्र	01/09/2037
शनि	24/04/2028	गुरु	04/06/2030	राहु	13/02/2034	शुक्र	05/03/2035	सूर्य	24/10/2037

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
24/10/2037		22/03/2039		19/03/2042		21/12/2043		21/04/2045	
22/03/2039		19/03/2042		21/12/2043		21/04/2045		21/08/2047	
मंगल	01/12/2037	बुध	10/09/2039	शनि	17/05/2042	राहु	13/02/2044	शुक्र	04/10/2045
बुध	20/02/2038	शनि	20/12/2039	गुरु	07/09/2042	शुक्र	18/05/2044	सूर्य	20/11/2045
शनि	09/04/2038	गुरु	29/06/2040	राहु	17/11/2042	सूर्य	14/06/2044	चंद्र	19/03/2046
गुरु	08/07/2038	राहु	29/10/2040	शुक्र	22/03/2043	चंद्र	21/08/2044	मंगल	21/05/2046
राहु	03/09/2038	शुक्र	29/05/2041	सूर्य	27/04/2043	मंगल	26/09/2044	बुध	02/10/2046
शुक्र	12/12/2038	सूर्य	29/07/2041	चंद्र	25/07/2043	बुध	11/12/2044	शनि	20/12/2046
सूर्य	10/01/2039	चंद्र	28/12/2041	मंगल	11/09/2043	शनि	25/01/2045	गुरु	19/05/2047
चंद्र	22/03/2039	मंगल	19/03/2042	बुध	21/12/2043	गुरु	21/04/2045	राहु	21/08/2047

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
21/08/2047		21/04/2048		21/12/2049		10/11/2050		30/09/2052	
21/04/2048		21/12/2049		10/11/2050		30/09/2052		10/11/2053	
सूर्य	04/09/2047	चंद्र	14/07/2048	मंगल	14/01/2050	बुध	27/02/2051	शनि	07/11/2052
चंद्र	08/10/2047	मंगल	28/08/2048	बुध	06/03/2050	शनि	02/05/2051	गुरु	17/01/2053
मंगल	26/10/2047	बुध	02/12/2048	शनि	05/04/2050	गुरु	31/08/2051	राहु	03/03/2053
बुध	03/12/2047	शनि	28/01/2049	गुरु	01/06/2050	राहु	16/11/2051	शुक्र	21/05/2053
शनि	26/12/2047	गुरु	15/05/2049	राहु	07/07/2050	शुक्र	29/03/2052	सूर्य	13/06/2053
गुरु	06/02/2048	राहु	21/07/2049	शुक्र	08/09/2050	सूर्य	06/05/2052	चंद्र	08/08/2053
राहु	05/03/2048	शुक्र	17/11/2049	सूर्य	26/09/2050	चंद्र	10/08/2052	मंगल	07/09/2053
शुक्र	21/04/2048	सूर्य	21/12/2049	चंद्र	10/11/2050	मंगल	30/09/2052	बुध	10/11/2053

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु	
10/11/2053	
21/12/2055	
गुरु	26/03/2054
राहु	19/06/2054
शुक्र	16/11/2054
सूर्य	29/12/2054
चंद्र	15/04/2055
मंगल	11/06/2055
बुध	11/10/2055
शनि	21/12/2055

शुक्र - शुक्र	
21/12/2055	
21/01/2060	
शुक्र	06/10/2056
सूर्य	28/12/2056
चंद्र	23/07/2057
मंगल	11/11/2057
बुध	03/07/2058
शनि	18/11/2058
गुरु	08/08/2059
राहु	21/01/2060

शुक्र - सूर्य	
21/01/2060	
22/03/2061	
सूर्य	13/02/2060
चंद्र	12/04/2060
मंगल	14/05/2060
बुध	20/07/2060
शनि	28/08/2060
गुरु	11/11/2060
राहु	29/12/2060
शुक्र	22/03/2061

शुक्र - चंद्र	
22/03/2061	
20/02/2064	
चंद्र	17/08/2061
मंगल	04/11/2061
बुध	20/04/2062
शनि	28/07/2062
गुरु	31/01/2063
राहु	30/05/2063
शुक्र	23/12/2063
सूर्य	20/02/2064

शुक्र - मंगल	
20/02/2064	
10/09/2065	
मंगल	02/04/2064
बुध	30/06/2064
शनि	22/08/2064
गुरु	30/11/2064
राहु	01/02/2065
शुक्र	23/05/2065
सूर्य	23/06/2065
चंद्र	10/09/2065

शुक्र - बुध	
10/09/2065	
30/12/2068	
बुध	19/03/2066
शनि	09/07/2066
गुरु	06/02/2067
राहु	21/06/2067
शुक्र	10/02/2068
सूर्य	17/04/2068
चंद्र	02/10/2068
मंगल	30/12/2068

शुक्र - शनि	
30/12/2068	
11/12/2070	
शनि	06/03/2069
गुरु	09/07/2069
राहु	26/09/2069
शुक्र	11/02/2070
सूर्य	23/03/2070
चंद्र	29/06/2070
मंगल	21/08/2070
बुध	11/12/2070

शुक्र - गुरु	
11/12/2070	
21/08/2074	
गुरु	05/08/2071
राहु	02/01/2072
शुक्र	20/09/2072
सूर्य	04/12/2072
चंद्र	10/06/2073
मंगल	18/09/2073
बुध	18/04/2074
शनि	21/08/2074

शुक्र - राहु	
21/08/2074	
20/12/2076	
राहु	24/11/2074
शुक्र	09/05/2075
सूर्य	25/06/2075
चंद्र	21/10/2075
मंगल	23/12/2075
बुध	06/05/2076
शनि	23/07/2076
गुरु	20/12/2076

सूर्य - सूर्य	
20/12/2076	
21/04/2077	
सूर्य	27/12/2076
चंद्र	13/01/2077
मंगल	22/01/2077
बुध	10/02/2077
शनि	21/02/2077
गुरु	15/03/2077
राहु	28/03/2077
शुक्र	21/04/2077

सूर्य - चंद्र	
21/04/2077	
19/02/2078	
चंद्र	02/06/2077
मंगल	25/06/2077
बुध	12/08/2077
शनि	09/09/2077
गुरु	02/11/2077
राहु	05/12/2077
शुक्र	03/02/2078
सूर्य	19/02/2078

सूर्य - मंगल	
19/02/2078	
01/08/2078	
मंगल	03/03/2078
बुध	29/03/2078
शनि	13/04/2078
गुरु	12/05/2078
राहु	30/05/2078
शुक्र	30/06/2078
सूर्य	09/07/2078
चंद्र	01/08/2078

सूर्य - बुध	
01/08/2078	
12/07/2079	
बुध	24/09/2078
शनि	26/10/2078
गुरु	26/12/2078
राहु	02/02/2079
शुक्र	10/04/2079
सूर्य	29/04/2079
चंद्र	16/06/2079
मंगल	12/07/2079

सूर्य - शनि	
12/07/2079	
31/01/2080	
शनि	31/07/2079
गुरु	04/09/2079
राहु	27/09/2079
शुक्र	05/11/2079
सूर्य	17/11/2079
चंद्र	15/12/2079
मंगल	30/12/2079
बुध	31/01/2080

सूर्य - गुरु	
31/01/2080	
19/02/2081	
गुरु	08/04/2080
राहु	20/05/2080
शुक्र	03/08/2080
सूर्य	25/08/2080
चंद्र	17/10/2080
मंगल	15/11/2080
बुध	15/01/2081
शनि	19/02/2081

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु	
19/02/2081	
21/10/2081	
राहु	18/03/2081
शुक्र	05/05/2081
सूर्य	18/05/2081
चंद्र	21/06/2081
मंगल	09/07/2081
बुध	16/08/2081
शनि	08/09/2081
गुरु	21/10/2081

सूर्य - शुक्र	
21/10/2081	
21/12/2082	
शुक्र	12/01/2082
सूर्य	04/02/2082
चंद्र	04/04/2082
मंगल	06/05/2082
बुध	12/07/2082
शनि	21/08/2082
गुरु	04/11/2082
राहु	21/12/2082

चंद्र - चंद्र	
21/12/2082	
20/01/2085	
चंद्र	06/04/2083
मंगल	01/06/2083
बुध	29/09/2083
शनि	08/12/2083
गुरु	20/04/2084
राहु	14/07/2084
शुक्र	09/12/2084
सूर्य	20/01/2085

चंद्र - मंगल	
20/01/2085	
02/03/2086	
मंगल	19/02/2085
बुध	24/04/2085
शनि	31/05/2085
गुरु	11/08/2085
राहु	25/09/2085
शुक्र	13/12/2085
सूर्य	04/01/2086
चंद्र	02/03/2086

चंद्र - बुध	
02/03/2086	
11/07/2088	
बुध	15/07/2086
शनि	03/10/2086
गुरु	04/03/2087
राहु	08/06/2087
शुक्र	22/11/2087
सूर्य	09/01/2088
चंद्र	08/05/2088
मंगल	11/07/2088

चंद्र - शनि	
11/07/2088	
30/11/2089	
शनि	27/08/2088
गुरु	24/11/2088
राहु	20/01/2089
शुक्र	28/04/2089
सूर्य	26/05/2089
चंद्र	05/08/2089
मंगल	11/09/2089
बुध	30/11/2089

चंद्र - गुरु	
30/11/2089	
21/07/2092	
गुरु	19/05/2090
राहु	03/09/2090
शुक्र	09/03/2091
सूर्य	02/05/2091
चंद्र	13/09/2091
मंगल	23/11/2091
बुध	23/04/2092
शनि	21/07/2092

चंद्र - राहु	
21/07/2092	
22/03/2094	
राहु	27/09/2092
शुक्र	23/01/2093
सूर्य	26/02/2093
चंद्र	22/05/2093
मंगल	06/07/2093
बुध	09/10/2093
शनि	05/12/2093
गुरु	22/03/2094

चंद्र - शुक्र	
22/03/2094	
19/02/2097	
शुक्र	15/10/2094
सूर्य	13/12/2094
चंद्र	10/05/2095
मंगल	28/07/2095
बुध	12/01/2096
शनि	19/04/2096
गुरु	24/10/2096
राहु	19/02/2097

चंद्र - सूर्य	
19/02/2097	
21/12/2097	
सूर्य	08/03/2097
चंद्र	19/04/2097
मंगल	12/05/2097
बुध	29/06/2097
शनि	27/07/2097
गुरु	19/09/2097
राहु	22/10/2097
शुक्र	21/12/2097

मंगल - मंगल	
21/12/2097	
25/07/2098	
मंगल	06/01/2098
बुध	09/02/2098
शनि	01/03/2098
गुरु	08/04/2098
राहु	02/05/2098
शुक्र	13/06/2098
सूर्य	25/06/2098
चंद्र	25/07/2098

मंगल - बुध	
25/07/2098	
28/10/2099	
बुध	05/10/2098
शनि	17/11/2098
गुरु	06/02/2099
राहु	29/03/2099
शुक्र	26/06/2099
सूर्य	22/07/2099
चंद्र	24/09/2099
मंगल	28/10/2099

मंगल - शनि	
28/10/2099	
26/07/2100	
शनि	22/11/2099
गुरु	09/01/2100
राहु	08/02/2100
शुक्र	01/04/2100
सूर्य	16/04/2100
चंद्र	24/05/2100
मंगल	13/06/2100
बुध	26/07/2100

मंगल - गुरु	
26/07/2100	
22/12/2101	
गुरु	24/10/2100
राहु	20/12/2100
शुक्र	30/03/2101
सूर्य	28/04/2101
चंद्र	08/07/2101
मंगल	15/08/2101
बुध	04/11/2101
शनि	22/12/2101

मंगल - राहु	
22/12/2101	
11/11/2102	
राहु	27/01/2102
शुक्र	31/03/2102
सूर्य	18/04/2102
चंद्र	02/06/2102
मंगल	26/06/2102
बुध	16/08/2102
शनि	15/09/2102
गुरु	11/11/2102

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
11/11/2102		01/06/2104		11/11/2104		22/12/2105		25/08/2108	
01/06/2104		11/11/2104		22/12/2105		25/08/2108		23/03/2110	
शुक्र	02/03/2103	सूर्य	10/06/2104	चंद्र	06/01/2105	बुध	24/05/2106	शनि	17/10/2108
सूर्य	02/04/2103	चंद्र	03/07/2104	मंगल	05/02/2105	शनि	23/08/2106	गुरु	26/01/2109
चंद्र	20/06/2103	मंगल	15/07/2104	बुध	10/04/2105	गुरु	11/02/2107	राहु	31/03/2109
मंगल	01/08/2103	बुध	10/08/2104	शनि	18/05/2105	राहु	30/05/2107	शुक्र	21/07/2109
बुध	30/10/2103	शनि	25/08/2104	गुरु	28/07/2105	शुक्र	07/12/2107	सूर्य	22/08/2109
शनि	21/12/2103	गुरु	22/09/2104	राहु	11/09/2105	सूर्य	30/01/2108	चंद्र	10/11/2109
गुरु	30/03/2104	राहु	10/10/2104	शुक्र	29/11/2105	चंद्र	14/06/2108	मंगल	22/12/2109
राहु	01/06/2104	शुक्र	11/11/2104	सूर्य	22/12/2105	मंगल	25/08/2108	बुध	23/03/2110

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
23/03/2110		19/03/2113		07/02/2115		30/05/2118		10/05/2119	
19/03/2113		07/02/2115		30/05/2118		10/05/2119		18/09/2121	
गुरु	01/10/2110	राहु	04/06/2113	शुक्र	30/09/2115	सूर्य	18/06/2118	चंद्र	06/09/2119
राहु	30/01/2111	शुक्र	16/10/2113	सूर्य	06/12/2115	चंद्र	05/08/2118	मंगल	09/11/2119
शुक्र	31/08/2111	सूर्य	23/11/2113	चंद्र	22/05/2116	मंगल	30/08/2118	बुध	24/03/2120
सूर्य	31/10/2111	चंद्र	27/02/2114	मंगल	19/08/2116	बुध	23/10/2118	शनि	12/06/2120
चंद्र	30/03/2112	मंगल	19/04/2114	बुध	25/02/2117	शनि	24/11/2118	गुरु	10/11/2120
मंगल	19/06/2112	बुध	06/08/2114	शनि	17/06/2117	गुरु	24/01/2119	राहु	14/02/2121
बुध	08/12/2112	शनि	09/10/2114	गुरु	15/01/2118	राहु	03/03/2119	शुक्र	01/08/2121
शनि	19/03/2113	गुरु	07/02/2115	राहु	30/05/2118	शुक्र	10/05/2119	सूर्य	18/09/2121

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
18/09/2121		22/12/2122		25/11/2123		29/08/2125		08/10/2126	
22/12/2122		25/11/2123		29/08/2125		08/10/2126		18/09/2128	
मंगल	22/10/2121	शनि	22/01/2123	गुरु	17/03/2124	राहु	13/10/2125	शुक्र	24/02/2127
बुध	02/01/2122	गुरु	23/03/2123	राहु	27/05/2124	शुक्र	31/12/2125	सूर्य	04/04/2127
शनि	14/02/2122	राहु	29/04/2123	शुक्र	29/09/2124	सूर्य	22/01/2126	चंद्र	12/07/2127
गुरु	06/05/2122	शुक्र	04/07/2123	सूर्य	04/11/2124	चंद्र	20/03/2126	मंगल	02/09/2127
राहु	26/06/2122	सूर्य	23/07/2123	चंद्र	01/02/2125	मंगल	19/04/2126	बुध	23/12/2127
शुक्र	23/09/2122	चंद्र	08/09/2123	मंगल	21/03/2125	बुध	21/06/2126	शनि	27/02/2128
सूर्य	19/10/2122	मंगल	03/10/2123	बुध	30/06/2125	शनि	29/07/2126	गुरु	01/07/2128
चंद्र	22/12/2122	बुध	25/11/2123	शनि	29/08/2125	गुरु	08/10/2126	राहु	18/09/2128

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 5 वर्ष 9 मास 22 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
17/01/2026		10/11/2031		10/11/2039		09/11/2040		10/11/2042	
10/11/2031		10/11/2039		09/11/2040		10/11/2042		09/11/2045	
सिद्ध	21/03/2026	संक	20/08/2033	मंग	20/11/2039	पिंग	20/12/2040	धांय	09/02/2043
संक	10/10/2027	मंग	09/11/2033	पिंग	10/12/2039	धांय	18/02/2041	भ्राम	11/06/2043
मंग	20/12/2027	पिंग	21/04/2034	धांय	10/01/2040	भ्राम	11/05/2041	भद्रि	10/11/2043
पिंग	10/05/2028	धांय	20/12/2034	भ्राम	19/02/2040	भद्रि	20/08/2041	उल्क	10/05/2044
धांय	09/12/2028	भ्राम	10/11/2035	भद्रि	10/04/2040	उल्क	20/12/2041	सिद्ध	09/12/2044
भ्राम	20/09/2029	भद्रि	20/12/2036	उल्क	10/06/2040	सिद्ध	11/05/2042	संक	10/08/2045
भद्रि	10/09/2030	उल्क	21/04/2038	सिद्ध	20/08/2040	संक	20/10/2042	मंग	09/09/2045
उल्क	10/11/2031	सिद्ध	10/11/2039	संक	09/11/2040	मंग	10/11/2042	पिंग	09/11/2045

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
09/11/2045		09/11/2049		10/11/2054		09/11/2060		10/11/2067	
09/11/2049		10/11/2054		09/11/2060		10/11/2067		10/11/2075	
भ्राम	21/04/2046	भद्रि	21/07/2050	उल्क	10/11/2055	सिद्ध	21/03/2062	संक	20/08/2069
भद्रि	10/11/2046	उल्क	21/05/2051	सिद्ध	09/01/2057	संक	10/10/2063	मंग	09/11/2069
उल्क	11/07/2047	सिद्ध	10/05/2052	संक	11/05/2058	मंग	20/12/2063	पिंग	21/04/2070
सिद्ध	20/04/2048	संक	20/06/2053	मंग	11/07/2058	पिंग	10/05/2064	धांय	20/12/2070
संक	11/03/2049	मंग	10/08/2053	पिंग	10/11/2058	धांय	09/12/2064	भ्राम	10/11/2071
मंग	20/04/2049	पिंग	19/11/2053	धांय	11/05/2059	भ्राम	20/09/2065	भद्रि	20/12/2072
पिंग	11/07/2049	धांय	21/04/2054	भ्राम	10/01/2060	भद्रि	10/09/2066	उल्क	21/04/2074
धांय	09/11/2049	भ्राम	10/11/2054	भद्रि	09/11/2060	उल्क	10/11/2067	सिद्ध	10/11/2075

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
10/11/2075		09/11/2076		10/11/2078		09/11/2081		09/11/2085	
09/11/2076		10/11/2078		09/11/2081		09/11/2085		10/11/2090	
मंग	20/11/2075	पिंग	20/12/2076	धांय	09/02/2079	भ्राम	21/04/2082	भद्रि	21/07/2086
पिंग	10/12/2075	धांय	18/02/2077	भ्राम	11/06/2079	भद्रि	10/11/2082	उल्क	21/05/2087
धांय	10/01/2076	भ्राम	11/05/2077	भद्रि	10/11/2079	उल्क	11/07/2083	सिद्ध	10/05/2088
भ्राम	19/02/2076	भद्रि	20/08/2077	उल्क	10/05/2080	सिद्ध	20/04/2084	संक	20/06/2089
भद्रि	10/04/2076	उल्क	20/12/2077	सिद्ध	09/12/2080	संक	11/03/2085	मंग	10/08/2089
उल्क	10/06/2076	सिद्ध	11/05/2078	संक	10/08/2081	मंग	20/04/2085	पिंग	19/11/2089
सिद्ध	20/08/2076	संक	20/10/2078	मंग	09/09/2081	पिंग	11/07/2085	धांय	21/04/2090
संक	09/11/2076	मंग	10/11/2078	पिंग	09/11/2081	धांय	09/11/2085	भ्राम	10/11/2090

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
10/11/2090		09/11/2096		11/11/2103		11/11/2111		10/11/2112	
09/11/2096		11/11/2103		11/11/2111		10/11/2112		11/11/2114	
उल्क	10/11/2091	सिद्ध	21/03/2098	संक	21/08/2105	मंग	21/11/2111	पिंग	21/12/2112
सिद्ध	09/01/2093	संक	10/10/2099	मंग	10/11/2105	पिंग	11/12/2111	धांय	19/02/2113
संक	11/05/2094	मंग	20/12/2099	पिंग	22/04/2106	धांय	11/01/2112	भ्राम	12/05/2113
मंग	11/07/2094	पिंग	11/05/2100	धांय	21/12/2106	भ्राम	20/02/2112	भद्रि	21/08/2113
पिंग	10/11/2094	धांय	10/12/2100	भ्राम	11/11/2107	भद्रि	11/04/2112	उल्क	21/12/2113
धांय	11/05/2095	भ्राम	21/09/2101	भद्रि	21/12/2108	उल्क	11/06/2112	सिद्ध	12/05/2114
भ्राम	10/01/2096	भद्रि	11/09/2102	उल्क	22/04/2110	सिद्ध	21/08/2112	संक	21/10/2114
भद्रि	09/11/2096	उल्क	11/11/2103	सिद्ध	11/11/2111	संक	10/11/2112	मंग	11/11/2114

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
11/11/2114		10/11/2117		10/11/2121		11/11/2126		10/11/2132	
10/11/2117		10/11/2121		11/11/2126		10/11/2132		00/00/0000	
धांय	10/02/2115	भ्राम	22/04/2118	भद्रि	22/07/2122	उल्क	11/11/2127	सिद्ध	18/01/2134
भ्राम	12/06/2115	भद्रि	11/11/2118	उल्क	22/05/2123	सिद्ध	10/01/2129		00/00/0000
भद्रि	11/11/2115	उल्क	12/07/2119	सिद्ध	11/05/2124	संक	12/05/2130		00/00/0000
उल्क	11/05/2116	सिद्ध	21/04/2120	संक	21/06/2125	मंग	12/07/2130		00/00/0000
सिद्ध	10/12/2116	संक	12/03/2121	मंग	11/08/2125	पिंग	11/11/2130		00/00/0000
संक	11/08/2117	मंग	21/04/2121	पिंग	20/11/2125	धांय	12/05/2131		00/00/0000
मंग	10/09/2117	पिंग	12/07/2121	धांय	22/04/2126	भ्राम	11/01/2132		00/00/0000
पिंग	10/11/2117	धांय	10/11/2121	भ्राम	11/11/2126	भद्रि	10/11/2132		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
17/01/2026		21/03/2026		10/10/2027		20/12/2027		10/05/2028	
21/03/2026		10/10/2027		20/12/2027		10/05/2028		09/12/2028	
00/00/0000		संक	25/07/2026	मंग	12/10/2027	पिंग	28/12/2027	धांय	28/05/2028
00/00/0000		मंग	10/08/2026	पिंग	16/10/2027	धांय	09/01/2028	भ्राम	21/06/2028
00/00/0000		पिंग	11/09/2026	धांय	22/10/2027	भ्राम	25/01/2028	भद्रि	20/07/2028
00/00/0000		धांय	28/10/2026	भ्राम	30/10/2027	भद्रि	14/02/2028	उल्क	25/08/2028
00/00/0000		भ्राम	30/12/2026	भद्रि	09/11/2027	उल्क	08/03/2028	सिद्ध	05/10/2028
00/00/0000		भद्रि	19/03/2027	उल्क	21/11/2027	सिद्ध	05/04/2028	संक	22/11/2028
17/01/2026		उल्क	22/06/2027	सिद्ध	05/12/2027	संक	06/05/2028	मंग	28/11/2028
उल्क	21/03/2026	सिद्ध	10/10/2027	संक	20/12/2027	मंग	10/05/2028	पिंग	09/12/2028

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
09/12/2028		20/09/2029		10/09/2030		10/11/2031		20/08/2033	
20/09/2029		10/09/2030		10/11/2031		20/08/2033		09/11/2033	
भ्राम	10/01/2029	भद्रि	08/11/2029	उल्क	20/11/2030	संक	02/04/2032	मंग	22/08/2033
भद्रि	18/02/2029	उल्क	06/01/2030	सिद्ध	11/02/2031	मंग	20/04/2032	पिंग	27/08/2033
उल्क	07/04/2029	सिद्ध	16/03/2030	संक	16/05/2031	पिंग	26/05/2032	धांय	03/09/2033
सिद्ध	01/06/2029	संक	03/06/2030	मंग	28/05/2031	धांय	19/07/2032	भ्राम	12/09/2033
संक	03/08/2029	मंग	13/06/2030	पिंग	21/06/2031	भ्राम	29/09/2032	भद्रि	23/09/2033
मंग	11/08/2029	पिंग	03/07/2030	धांय	26/07/2031	भद्रि	29/12/2032	उल्क	06/10/2033
पिंग	27/08/2029	धांय	01/08/2030	भ्राम	12/09/2031	उल्क	16/04/2033	सिद्ध	22/10/2033
धांय	20/09/2029	भ्राम	10/09/2030	भद्रि	10/11/2031	सिद्ध	20/08/2033	संक	09/11/2033

संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क	
09/11/2033		21/04/2034		20/12/2034		10/11/2035		20/12/2036	
21/04/2034		20/12/2034		10/11/2035		20/12/2036		21/04/2038	
पिंग	18/11/2033	धांय	11/05/2034	भ्राम	25/01/2035	भद्रि	05/01/2036	उल्क	11/03/2037
धांय	02/12/2033	भ्राम	07/06/2034	भद्रि	11/03/2035	उल्क	13/03/2036	सिद्ध	13/06/2037
भ्राम	20/12/2033	भद्रि	11/07/2034	उल्क	04/05/2035	सिद्ध	31/05/2036	संक	30/09/2037
भद्रि	11/01/2034	उल्क	20/08/2034	सिद्ध	07/07/2035	संक	29/08/2036	मंग	13/10/2037
उल्क	07/02/2034	सिद्ध	07/10/2034	संक	17/09/2035	मंग	09/09/2036	पिंग	09/11/2037
सिद्ध	11/03/2034	संक	30/11/2034	मंग	26/09/2035	पिंग	02/10/2036	धांय	20/12/2037
संक	16/04/2034	मंग	07/12/2034	पिंग	14/10/2035	धांय	05/11/2036	भ्राम	12/02/2038
मंग	21/04/2034	पिंग	20/12/2034	धांय	10/11/2035	भ्राम	20/12/2036	भद्रि	21/04/2038

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम	
21/04/2038		10/11/2039		20/11/2039		10/12/2039		10/01/2040	
10/11/2039		20/11/2039		10/12/2039		10/01/2040		19/02/2040	
सिद्ध	09/08/2038	मंग	10/11/2039	पिंग	21/11/2039	धांय	13/12/2039	भ्राम	14/01/2040
संक	13/12/2038	पिंग	11/11/2039	धांय	23/11/2039	भ्राम	16/12/2039	भद्रि	20/01/2040
मंग	29/12/2038	धांय	11/11/2039	भ्राम	25/11/2039	भद्रि	20/12/2039	उल्क	27/01/2040
पिंग	30/01/2039	भ्राम	13/11/2039	भद्रि	28/11/2039	उल्क	25/12/2039	सिद्ध	03/02/2040
धांय	18/03/2039	भद्रि	14/11/2039	उल्क	01/12/2039	सिद्ध	31/12/2039	संक	12/02/2040
भ्राम	20/05/2039	उल्क	16/11/2039	सिद्ध	05/12/2039	संक	07/01/2040	मंग	14/02/2040
भद्रि	07/08/2039	सिद्ध	18/11/2039	संक	10/12/2039	मंग	08/01/2040	पिंग	16/02/2040
उल्क	10/11/2039	संक	20/11/2039	मंग	10/12/2039	पिंग	10/01/2040	धांय	19/02/2040

मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग	
19/02/2040		10/04/2040		10/06/2040		20/08/2040		09/11/2040	
10/04/2040		10/06/2040		20/08/2040		09/11/2040		20/12/2040	
भद्रि	26/02/2040	उल्क	20/04/2040	सिद्ध	24/06/2040	संक	07/09/2040	पिंग	11/11/2040
उल्क	06/03/2040	सिद्ध	02/05/2040	संक	09/07/2040	मंग	09/09/2040	धांय	15/11/2040
सिद्ध	16/03/2040	संक	15/05/2040	मंग	11/07/2040	पिंग	14/09/2040	भ्राम	19/11/2040
संक	27/03/2040	मंग	17/05/2040	पिंग	15/07/2040	धांय	20/09/2040	भद्रि	25/11/2040
मंग	28/03/2040	पिंग	21/05/2040	धांय	21/07/2040	भ्राम	29/09/2040	उल्क	02/12/2040
पिंग	31/03/2040	धांय	26/05/2040	भ्राम	29/07/2040	भद्रि	11/10/2040	सिद्ध	09/12/2040
धांय	04/04/2040	भ्राम	01/06/2040	भद्रि	08/08/2040	उल्क	24/10/2040	संक	18/12/2040
भ्राम	10/04/2040	भद्रि	10/06/2040	उल्क	20/08/2040	सिद्ध	09/11/2040	मंग	20/12/2040

पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध	
20/12/2040		18/02/2041		11/05/2041		20/08/2041		20/12/2041	
18/02/2041		11/05/2041		20/08/2041		20/12/2041		11/05/2042	
धांय	25/12/2040	भ्राम	27/02/2041	भद्रि	25/05/2041	उल्क	09/09/2041	सिद्ध	16/01/2042
भ्राम	31/12/2040	भद्रि	11/03/2041	उल्क	11/06/2041	सिद्ध	03/10/2041	संक	17/02/2042
भद्रि	09/01/2041	उल्क	24/03/2041	सिद्ध	30/06/2041	संक	30/10/2041	मंग	21/02/2042
उल्क	19/01/2041	सिद्ध	09/04/2041	संक	23/07/2041	मंग	03/11/2041	पिंग	01/03/2042
सिद्ध	31/01/2041	संक	27/04/2041	मंग	26/07/2041	पिंग	09/11/2041	धांय	13/03/2042
संक	13/02/2041	मंग	29/04/2041	पिंग	31/07/2041	धांय	19/11/2041	भ्राम	28/03/2042
मंग	15/02/2041	पिंग	04/05/2041	धांय	09/08/2041	भ्राम	03/12/2041	भद्रि	17/04/2042
पिंग	18/02/2041	धांय	11/05/2041	भ्राम	20/08/2041	भद्रि	20/12/2041	उल्क	11/05/2042

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 15 वर्ष 1 मास 5 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : पूर्वाषाढ़ा - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
17/01/2026		22/02/2041		23/02/2048		22/02/2058		22/02/2065	
22/02/2041		23/02/2048		22/02/2058		22/02/2065		22/02/2081	
वृष	15/09/2027	मेष	20/08/2041	मीन	22/02/2049	वृश्चि	20/08/2058	तुला	15/09/2067
मेष	28/10/2028	मीन	03/05/2042	वृश्चि	05/11/2049	तुला	03/10/2059	कन्या	22/02/2069
मीन	05/06/2030	वृश्चि	29/10/2042	तुला	12/06/2051	कन्या	21/05/2060	कर्क	03/07/2072
वृश्चि	19/07/2031	तुला	12/12/2043	कन्या	06/05/2052	कर्क	08/11/2061	सिंह	22/04/2073
तुला	08/02/2034	कन्या	29/07/2044	कर्क	12/06/2054	सिंह	16/03/2062	मिथु	29/09/2074
कन्या	19/07/2035	कर्क	17/01/2046	सिंह	12/12/2054	मिथु	01/11/2062	वृष	22/04/2077
कर्क	27/11/2038	सिंह	25/05/2046	मिथु	05/11/2055	वृष	15/12/2063	मेष	05/06/2078
सिंह	15/09/2039	मिथु	10/01/2047	वृष	12/06/2057	मेष	11/06/2064	मीन	10/01/2080
मिथु	22/02/2041	वृष	23/02/2048	मेष	22/02/2058	मीन	22/02/2065	वृश्चि	22/02/2081

कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
22/02/2081		22/02/2090		24/02/2111		24/02/2116		23/02/2125	
22/02/2090		24/02/2111		24/02/2116		23/02/2125		00/00/0000	
कन्या	15/12/2081	कर्क	22/07/2094	सिंह	26/05/2111	मिथु	16/12/2116	वृष	18/01/2126
कर्क	05/11/2083	सिंह	10/08/2095	मिथु	06/11/2111	वृष	26/05/2118		00/00/0000
सिंह	18/04/2084	मिथु	30/06/2097	वृष	24/08/2112	मेष	11/01/2119		00/00/0000
मिथु	07/02/2085	वृष	09/11/2100	मेष	30/12/2112	मीन	05/12/2119		00/00/0000
वृष	18/07/2086	मेष	30/04/2102	मीन	01/07/2113	वृश्चि	23/07/2120		00/00/0000
मेष	06/03/2087	मीन	05/06/2104	वृश्चि	06/11/2113	तुला	31/12/2121		00/00/0000
मीन	28/01/2088	वृश्चि	24/11/2105	तुला	25/08/2114	कन्या	22/10/2122		00/00/0000
वृश्चि	14/09/2088	तुला	04/04/2109	कन्या	05/02/2115	कर्क	12/09/2124		00/00/0000
तुला	22/02/2090	कन्या	24/02/2111	कर्क	24/02/2116	सिंह	23/02/2125		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - वृष		वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - वृश्चि		वृष - तुला	
17/01/2026		15/09/2027		28/10/2028		05/06/2030		19/07/2031	
15/09/2027		28/10/2028		05/06/2030		19/07/2031		08/02/2034	
	00/00/0000	मेष	14/10/2027	मीन	26/12/2028	वृश्चि	03/07/2030	तुला	15/12/2031
	00/00/0000	मीन	24/11/2027	वृश्चि	05/02/2029	तुला	07/09/2030	कन्या	08/03/2032
	17/01/2026	वृश्चि	22/12/2027	तुला	09/05/2029	कन्या	14/10/2030	कर्क	21/09/2032
वृश्चि	03/03/2026	तुला	26/02/2028	कन्या	01/07/2029	कर्क	07/01/2031	सिंह	07/11/2032
तुला	31/07/2026	कन्या	03/04/2028	कर्क	31/10/2029	सिंह	28/01/2031	मिथु	30/01/2033
कन्या	23/10/2026	कर्क	27/06/2028	सिंह	30/11/2029	मिथु	06/03/2031	वृष	28/06/2033
कर्क	07/05/2027	सिंह	18/07/2028	मिथु	21/01/2030	वृष	10/05/2031	मेष	02/09/2033
सिंह	23/06/2027	मिथु	24/08/2028	वृष	25/04/2030	मेष	08/06/2031	मीन	04/12/2033
मिथु	15/09/2027	वृष	28/10/2028	मेष	05/06/2030	मीन	19/07/2031	वृश्चि	08/02/2034

वृष - कन्या		वृष - कर्क		वृष - सिंह		वृष - मिथु		मेष - मेष	
08/02/2034		19/07/2035		27/11/2038		15/09/2039		22/02/2041	
19/07/2035		27/11/2038		15/09/2039		22/02/2041		20/08/2041	
कन्या	27/03/2034	कर्क	01/04/2036	सिंह	12/12/2038	मिथु	01/11/2039	मेष	07/03/2041
कर्क	16/07/2034	सिंह	02/06/2036	मिथु	07/01/2039	वृष	25/01/2040	मीन	25/03/2041
सिंह	11/08/2034	मिथु	20/09/2036	वृष	23/02/2039	मेष	01/03/2040	वृश्चि	06/04/2041
मिथु	27/09/2034	वृष	05/04/2037	मेष	15/03/2039	मीन	23/04/2040	तुला	05/05/2041
वृष	20/12/2034	मेष	29/06/2037	मीन	13/04/2039	वृश्चि	30/05/2040	कन्या	21/05/2041
मेष	26/01/2035	मीन	30/10/2037	वृश्चि	04/05/2039	तुला	22/08/2040	कर्क	27/06/2041
मीन	20/03/2035	वृश्चि	24/01/2038	तुला	19/06/2039	कन्या	08/10/2040	सिंह	06/07/2041
वृश्चि	26/04/2035	तुला	08/08/2038	कन्या	16/07/2039	कर्क	27/01/2041	मिथु	22/07/2041
तुला	19/07/2035	कन्या	27/11/2038	कर्क	15/09/2039	सिंह	22/02/2041	वृष	20/08/2041

मेष - मीन		मेष - वृश्चि		मेष - तुला		मेष - कन्या		मेष - कर्क	
20/08/2041		03/05/2042		29/10/2042		12/12/2043		29/07/2044	
03/05/2042		29/10/2042		12/12/2043		29/07/2044		17/01/2046	
मीन	15/09/2041	वृश्चि	15/05/2042	तुला	02/01/2043	कन्या	02/01/2044	कर्क	19/11/2044
वृश्चि	03/10/2041	तुला	13/06/2042	कन्या	08/02/2043	कर्क	19/02/2044	सिंह	16/12/2044
तुला	12/11/2041	कन्या	29/06/2042	कर्क	05/05/2043	सिंह	01/03/2044	मिथु	02/02/2045
कन्या	05/12/2041	कर्क	06/08/2042	सिंह	25/05/2043	मिथु	22/03/2044	वृष	29/04/2045
कर्क	28/01/2042	सिंह	15/08/2042	मिथु	01/07/2043	वृष	28/04/2044	मेष	05/06/2045
सिंह	10/02/2042	मिथु	31/08/2042	वृष	05/09/2043	मेष	14/05/2044	मीन	29/07/2045
मिथु	05/03/2042	वृष	28/09/2042	मेष	03/10/2043	मीन	06/06/2044	वृश्चि	05/09/2045
वृष	15/04/2042	मेष	11/10/2042	मीन	13/11/2043	वृश्चि	22/06/2044	तुला	29/11/2045
मेष	03/05/2042	मीन	29/10/2042	वृश्चि	12/12/2043	तुला	29/07/2044	कन्या	17/01/2046

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - सिंह		मेष - मिथु		मेष - वृष		मीन - मीन		मीन - वृश्चि	
17/01/2046		25/05/2046		10/01/2047		23/02/2048		22/02/2049	
25/05/2046		10/01/2047		23/02/2048		22/02/2049		05/11/2049	
सिंह	23/01/2046	मिथु	14/06/2046	वृष	16/03/2047	मीन	30/03/2048	वृश्चि	12/03/2049
मिथु	04/02/2046	वृष	21/07/2046	मेष	14/04/2047	वृश्चि	25/04/2048	तुला	22/04/2049
वृष	24/02/2046	मेष	06/08/2046	मीन	25/05/2047	तुला	22/06/2048	कन्या	15/05/2049
मेष	05/03/2046	मीन	29/08/2046	वृश्चि	22/06/2047	कन्या	25/07/2048	कर्क	08/07/2049
मीन	18/03/2046	वृश्चि	14/09/2046	तुला	27/08/2047	कर्क	10/10/2048	सिंह	20/07/2049
वृश्चि	27/03/2046	तुला	21/10/2046	कन्या	03/10/2047	सिंह	28/10/2048	मिथु	12/08/2049
तुला	16/04/2046	कन्या	11/11/2046	कर्क	28/12/2047	मिथु	30/11/2048	वृष	22/09/2049
कन्या	28/04/2046	कर्क	29/12/2046	सिंह	17/01/2048	वृष	28/01/2049	मेष	10/10/2049
कर्क	25/05/2046	सिंह	10/01/2047	मिथु	23/02/2048	मेष	22/02/2049	मीन	05/11/2049

मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - मिथु	
05/11/2049		12/06/2051		06/05/2052		12/06/2054		12/12/2054	
12/06/2051		06/05/2052		12/06/2054		12/12/2054		05/11/2055	
तुला	06/02/2050	कन्या	12/07/2051	कर्क	14/10/2052	सिंह	21/06/2054	मिथु	10/01/2055
कन्या	31/03/2050	कर्क	19/09/2051	सिंह	21/11/2052	मिथु	07/07/2054	वृष	04/03/2055
कर्क	01/08/2050	सिंह	05/10/2051	मिथु	29/01/2053	वृष	06/08/2054	मेष	27/03/2055
सिंह	30/08/2050	मिथु	04/11/2051	वृष	01/06/2053	मेष	18/08/2054	मीन	29/04/2055
मिथु	21/10/2050	वृष	26/12/2051	मेष	25/07/2053	मीन	06/09/2054	वृश्चि	22/05/2055
वृष	23/01/2051	मेष	18/01/2052	मीन	09/10/2053	वृश्चि	19/09/2054	तुला	13/07/2055
मेष	05/03/2051	मीन	20/02/2052	वृश्चि	02/12/2053	तुला	18/10/2054	कन्या	12/08/2055
मीन	02/05/2051	वृश्चि	14/03/2052	तुला	04/04/2054	कन्या	03/11/2054	कर्क	20/10/2055
वृश्चि	12/06/2051	तुला	06/05/2052	कन्या	12/06/2054	कर्क	12/12/2054	सिंह	05/11/2055

मीन - वृष		मीन - मेष		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या	
05/11/2055		12/06/2057		22/02/2058		20/08/2058		03/10/2059	
12/06/2057		22/02/2058		20/08/2058		03/10/2059		21/05/2060	
वृष	07/02/2056	मेष	30/06/2057	वृश्चि	07/03/2058	तुला	25/10/2058	कन्या	24/10/2059
मेष	19/03/2056	मीन	25/07/2057	तुला	05/04/2058	कन्या	01/12/2058	कर्क	11/12/2059
मीन	16/05/2056	वृश्चि	12/08/2057	कन्या	21/04/2058	कर्क	24/02/2059	सिंह	23/12/2059
वृश्चि	26/06/2056	तुला	22/09/2057	कर्क	28/05/2058	सिंह	17/03/2059	मिथु	13/01/2060
तुला	28/09/2056	कन्या	15/10/2057	सिंह	06/06/2058	मिथु	23/04/2059	वृष	18/02/2060
कन्या	19/11/2056	कर्क	08/12/2057	मिथु	22/06/2058	वृष	27/06/2059	मेष	06/03/2060
कर्क	22/03/2057	सिंह	20/12/2057	वृष	21/07/2058	मेष	26/07/2059	मीन	29/03/2060
सिंह	20/04/2057	मिथु	12/01/2058	मेष	02/08/2058	मीन	05/09/2059	वृश्चि	14/04/2060
मिथु	12/06/2057	वृष	22/02/2058	मीन	20/08/2058	वृश्चि	03/10/2059	तुला	21/05/2060

चर दशा

भोग्य दशा काल : मेष 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

मेष 9 वर्ष	
17/01/2026	
17/01/2035	
वृष	18/10/2026
मिथु	19/07/2027
कर्क	18/04/2028
सिंह	17/01/2029
कन्या	18/10/2029
तुला	19/07/2030
वृश्चि	19/04/2031
धनु	18/01/2032
मक	17/10/2032
कुंभ	18/07/2033
मीन	18/04/2034
मेष	17/01/2035

वृष 8 वर्ष	
17/01/2035	
17/01/2043	
मेष	18/09/2035
मीन	18/05/2036
कुंभ	17/01/2037
मक	17/09/2037
धनु	19/05/2038
वृश्चि	17/01/2039
तुला	18/09/2039
कन्या	18/05/2040
सिंह	17/01/2041
कर्क	17/09/2041
मिथु	19/05/2042
वृष	17/01/2043

मिथुन 7 वर्ष	
17/01/2043	
17/01/2050	
वृष	18/08/2043
मेष	18/03/2044
मीन	17/10/2044
कुंभ	19/05/2045
मक	18/12/2045
धनु	19/07/2046
वृश्चि	17/02/2047
तुला	18/09/2047
कन्या	18/04/2048
सिंह	17/11/2048
कर्क	18/06/2049
मिथु	17/01/2050

कर्क 7 वर्ष	
17/01/2050	
17/01/2057	
मिथु	18/08/2050
वृष	19/03/2051
मेष	18/10/2051
मीन	18/05/2052
कुंभ	17/12/2052
मक	18/07/2053
धनु	16/02/2054
वृश्चि	18/09/2054
तुला	19/04/2055
कन्या	18/11/2055
सिंह	18/06/2056
कर्क	17/01/2057

सिंह 7 वर्ष	
17/01/2057	
18/01/2064	
कन्या	18/08/2057
तुला	19/03/2058
वृश्चि	18/10/2058
धनु	19/05/2059
मक	18/12/2059
कुंभ	18/07/2060
मीन	16/02/2061
मेष	17/09/2061
वृष	18/04/2062
मिथु	17/11/2062
कर्क	18/06/2063
सिंह	18/01/2064

कन्या 8 वर्ष	
18/01/2064	
18/01/2072	
तुला	17/09/2064
वृश्चि	19/05/2065
धनु	17/01/2066
मक	18/09/2066
कुंभ	19/05/2067
मीन	18/01/2068
मेष	17/09/2068
वृष	19/05/2069
मिथु	17/01/2070
कर्क	18/09/2070
सिंह	19/05/2071
कन्या	18/01/2072

तुला 3 वर्ष	
18/01/2072	
17/01/2075	
वृश्चि	18/04/2072
धनु	18/07/2072
मक	17/10/2072
कुंभ	17/01/2073
मीन	18/04/2073
मेष	18/07/2073
वृष	18/10/2073
मिथु	17/01/2074
कर्क	18/04/2074
सिंह	19/07/2074
कन्या	18/10/2074
तुला	17/01/2075

वृश्चिक 2 वर्ष	
17/01/2075	
17/01/2077	
तुला	19/03/2075
कन्या	19/05/2075
सिंह	19/07/2075
कर्क	18/09/2075
मिथु	18/11/2075
वृष	18/01/2076
मेष	18/03/2076
मीन	18/05/2076
कुंभ	18/07/2076
मक	17/09/2076
धनु	17/11/2076
वृश्चि	17/01/2077

धनु 6 वर्ष	
17/01/2077	
17/01/2083	
वृश्चि	18/07/2077
तुला	17/01/2078
कन्या	19/07/2078
सिंह	17/01/2079
कर्क	19/07/2079
मिथु	18/01/2080
वृष	18/07/2080
मेष	17/01/2081
मीन	18/07/2081
कुंभ	17/01/2082
मक	19/07/2082
धनु	17/01/2083

मकर 10 वर्ष	
17/01/2083	
17/01/2093	
धनु	18/11/2083
वृश्चि	17/09/2084
तुला	18/07/2085
कन्या	19/05/2086
सिंह	19/03/2087
कर्क	18/01/2088
मिथु	17/11/2088
वृष	17/09/2089
मेष	19/07/2090
मीन	19/05/2091
कुंभ	18/03/2092
मक	17/01/2093

कुम्भ 11 वर्ष	
17/01/2093	
19/01/2104	
मीन	18/12/2093
मेष	17/11/2094
वृष	18/10/2095
मिथु	17/09/2096
कर्क	18/08/2097
सिंह	19/07/2098
कन्या	18/06/2099
तुला	19/05/2100
वृश्चि	19/04/2101
धनु	20/03/2102
मक	18/02/2103
कुंभ	19/01/2104

मीन 9 वर्ष	
19/01/2104	
18/01/2113	
मेष	18/10/2104
वृष	19/07/2105
मिथु	19/04/2106
कर्क	18/01/2107
सिंह	19/10/2107
कन्या	19/07/2108
तुला	19/04/2109
वृश्चि	18/01/2110
धनु	19/10/2110
मक	20/07/2111
कुंभ	19/04/2112
मीन	18/01/2113

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - कन्या	
17/01/2026		18/10/2026		19/07/2027		18/04/2028		17/01/2029	
18/10/2026		19/07/2027		18/04/2028		17/01/2029		18/10/2029	
मेष	09/02/2026	वृष	10/11/2026	मिथु	11/08/2027	कन्या	11/05/2028	तुला	09/02/2029
मीन	04/03/2026	मेष	03/12/2026	वृष	03/09/2027	तुला	02/06/2028	वृश्चि	03/03/2029
कुंभ	27/03/2026	मीन	25/12/2026	मेष	25/09/2027	वृश्चि	25/06/2028	धनु	26/03/2029
मक	18/04/2026	कुंभ	17/01/2027	मीन	18/10/2027	धनु	18/07/2028	मक	18/04/2029
धनु	11/05/2026	मक	09/02/2027	कुंभ	10/11/2027	मक	10/08/2028	कुंभ	11/05/2029
वृश्चि	03/06/2026	धनु	04/03/2027	मक	03/12/2027	कुंभ	02/09/2028	मीन	03/06/2029
तुला	26/06/2026	वृश्चि	27/03/2027	धनु	26/12/2027	मीन	25/09/2028	मेष	26/06/2029
कन्या	19/07/2026	तुला	19/04/2027	वृश्चि	18/01/2028	मेष	17/10/2028	वृष	18/07/2029
सिंह	10/08/2026	कन्या	11/05/2027	तुला	09/02/2028	वृष	09/11/2028	मिथु	10/08/2029
कर्क	02/09/2026	सिंह	03/06/2027	कन्या	03/03/2028	मिथु	02/12/2028	कर्क	02/09/2029
मिथु	25/09/2026	कर्क	26/06/2027	सिंह	26/03/2028	कर्क	25/12/2028	सिंह	25/09/2029
वृष	18/10/2026	मिथु	19/07/2027	कर्क	18/04/2028	सिंह	17/01/2029	कन्या	18/10/2029

मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु		मेष - मक		मेष - कुंभ	
18/10/2029		19/07/2030		19/04/2031		18/01/2032		17/10/2032	
19/07/2030		19/04/2031		18/01/2032		17/10/2032		18/07/2033	
वृश्चि	10/11/2029	तुला	10/08/2030	वृश्चि	11/05/2031	धनु	09/02/2032	मीन	09/11/2032
धनु	02/12/2029	कन्या	02/09/2030	तुला	03/06/2031	वृश्चि	03/03/2032	मेष	02/12/2032
मक	25/12/2029	सिंह	25/09/2030	कन्या	26/06/2031	तुला	26/03/2032	वृष	25/12/2032
कुंभ	17/01/2030	कर्क	18/10/2030	सिंह	19/07/2031	कन्या	18/04/2032	मिथु	17/01/2033
मीन	09/02/2030	मिथु	10/11/2030	कर्क	11/08/2031	सिंह	11/05/2032	कर्क	09/02/2033
मेष	04/03/2030	वृष	03/12/2030	मिथु	03/09/2031	कर्क	02/06/2032	सिंह	03/03/2033
वृष	27/03/2030	मेष	25/12/2030	वृष	25/09/2031	मिथु	25/06/2032	कन्या	26/03/2033
मिथु	18/04/2030	मीन	17/01/2031	मेष	18/10/2031	वृष	18/07/2032	तुला	18/04/2033
कर्क	11/05/2030	कुंभ	09/02/2031	मीन	10/11/2031	मेष	10/08/2032	वृश्चि	11/05/2033
सिंह	03/06/2030	मक	04/03/2031	कुंभ	03/12/2031	मीन	02/09/2032	धनु	03/06/2033
कन्या	26/06/2030	धनु	27/03/2031	मक	26/12/2031	कुंभ	25/09/2032	मक	26/06/2033
तुला	19/07/2030	वृश्चि	19/04/2031	धनु	18/01/2032	मक	17/10/2032	कुंभ	18/07/2033

मेष - मीन		मेष - मेष		वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ	
18/07/2033		18/04/2034		17/01/2035		18/09/2035		18/05/2036	
18/04/2034		17/01/2035		18/09/2035		18/05/2036		17/01/2037	
मेष	10/08/2033	वृष	11/05/2034	वृष	07/02/2035	मेष	08/10/2035	मीन	08/06/2036
वृष	02/09/2033	मिथु	03/06/2034	मिथु	27/02/2035	वृष	28/10/2035	मेष	28/06/2036
मिथु	25/09/2033	कर्क	26/06/2034	कर्क	19/03/2035	मिथु	18/11/2035	वृष	18/07/2036
कर्क	18/10/2033	सिंह	19/07/2034	सिंह	08/04/2035	कर्क	08/12/2035	मिथु	07/08/2036
सिंह	10/11/2033	कन्या	10/08/2034	कन्या	29/04/2035	सिंह	28/12/2035	कर्क	28/08/2036
कन्या	02/12/2033	तुला	02/09/2034	तुला	19/05/2035	कन्या	18/01/2036	सिंह	17/09/2036
तुला	25/12/2033	वृश्चि	25/09/2034	वृश्चि	08/06/2035	तुला	07/02/2036	कन्या	07/10/2036
वृश्चि	17/01/2034	धनु	18/10/2034	धनु	29/06/2035	वृश्चि	27/02/2036	तुला	28/10/2036
धनु	09/02/2034	मक	10/11/2034	मक	19/07/2035	धनु	18/03/2036	वृश्चि	17/11/2036
मक	04/03/2034	कुंभ	03/12/2034	कुंभ	08/08/2035	मक	08/04/2036	धनु	07/12/2036
कुंभ	27/03/2034	मीन	25/12/2034	मीन	28/08/2035	कुंभ	28/04/2036	मक	27/12/2036
मीन	18/04/2034	मेष	17/01/2035	मेष	18/09/2035	मीन	18/05/2036	कुंभ	17/01/2037

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मक	
17/01/2037	
17/09/2037	
धनु	06/02/2037
वृश्चि	26/02/2037
तुला	19/03/2037
कन्या	08/04/2037
सिंह	28/04/2037
कर्क	19/05/2037
मिथु	08/06/2037
वृष	28/06/2037
मेष	18/07/2037
मीन	08/08/2037
कुंभ	28/08/2037
मक	17/09/2037

वृष - धनु	
17/09/2037	
19/05/2038	
वृश्चि	08/10/2037
तुला	28/10/2037
कन्या	17/11/2037
सिंह	07/12/2037
कर्क	28/12/2037
मिथु	17/01/2038
वृष	06/02/2038
मेष	27/02/2038
मीन	19/03/2038
कुंभ	08/04/2038
मक	28/04/2038
धनु	19/05/2038

वृष - वृश्चि	
19/05/2038	
17/01/2039	
तुला	08/06/2038
कन्या	28/06/2038
सिंह	19/07/2038
कर्क	08/08/2038
मिथु	28/08/2038
वृष	18/09/2038
मेष	08/10/2038
मीन	28/10/2038
कुंभ	17/11/2038
मक	08/12/2038
धनु	28/12/2038
वृश्चि	17/01/2039

वृष - तुला	
17/01/2039	
18/09/2039	
वृश्चि	07/02/2039
धनु	27/02/2039
मक	19/03/2039
कुंभ	08/04/2039
मीन	29/04/2039
मेष	19/05/2039
वृष	08/06/2039
मिथु	29/06/2039
कर्क	19/07/2039
सिंह	08/08/2039
कन्या	28/08/2039
तुला	18/09/2039

वृष - कन्या	
18/09/2039	
18/05/2040	
तुला	08/10/2039
वृश्चि	28/10/2039
धनु	18/11/2039
मक	08/12/2039
कुंभ	28/12/2039
मीन	18/01/2040
मेष	07/02/2040
वृष	27/02/2040
मिथु	18/03/2040
कर्क	08/04/2040
सिंह	28/04/2040
कन्या	18/05/2040

वृष - सिंह	
18/05/2040	
17/01/2041	
कन्या	08/06/2040
तुला	28/06/2040
वृश्चि	18/07/2040
धनु	07/08/2040
मक	28/08/2040
कुंभ	17/09/2040
मीन	07/10/2040
मेष	28/10/2040
वृष	17/11/2040
मिथु	07/12/2040
कर्क	27/12/2040
सिंह	17/01/2041

वृष - कर्क	
17/01/2041	
17/09/2041	
मिथु	06/02/2041
वृष	26/02/2041
मेष	19/03/2041
मीन	08/04/2041
कुंभ	28/04/2041
मक	19/05/2041
धनु	08/06/2041
वृश्चि	28/06/2041
तुला	18/07/2041
कन्या	08/08/2041
सिंह	28/08/2041
कर्क	17/09/2041

वृष - मिथु	
17/09/2041	
19/05/2042	
वृष	08/10/2041
मेष	28/10/2041
मीन	17/11/2041
कुंभ	07/12/2041
मक	28/12/2041
धनु	17/01/2042
वृश्चि	06/02/2042
तुला	27/02/2042
कन्या	19/03/2042
सिंह	08/04/2042
कर्क	28/04/2042
मिथु	19/05/2042

वृष - वृष	
19/05/2042	
17/01/2043	
मेष	08/06/2042
मीन	28/06/2042
कुंभ	19/07/2042
मक	08/08/2042
धनु	28/08/2042
वृश्चि	18/09/2042
तुला	08/10/2042
कन्या	28/10/2042
सिंह	17/11/2042
कर्क	08/12/2042
मिथु	28/12/2042
वृष	17/01/2043

मिथु - वृष	
17/01/2043	
18/08/2043	
मेष	04/02/2043
मीन	22/02/2043
कुंभ	12/03/2043
मक	29/03/2043
धनु	16/04/2043
वृश्चि	04/05/2043
तुला	22/05/2043
कन्या	08/06/2043
सिंह	26/06/2043
कर्क	14/07/2043
मिथु	01/08/2043
वृष	18/08/2043

मिथु - मेष	
18/08/2043	
18/03/2044	
वृष	05/09/2043
मिथु	23/09/2043
कर्क	11/10/2043
सिंह	28/10/2043
कन्या	15/11/2043
तुला	03/12/2043
वृश्चि	21/12/2043
धनु	07/01/2044
मक	25/01/2044
कुंभ	12/02/2044
मीन	01/03/2044
मेष	18/03/2044

मिथु - मीन	
18/03/2044	
17/10/2044	
मेष	05/04/2044
वृष	23/04/2044
मिथु	11/05/2044
कर्क	28/05/2044
सिंह	15/06/2044
कन्या	03/07/2044
तुला	21/07/2044
वृश्चि	07/08/2044
धनु	25/08/2044
मक	12/09/2044
कुंभ	30/09/2044
मीन	17/10/2044

मिथु - कुंभ	
17/10/2044	
19/05/2045	
मीन	04/11/2044
मेष	22/11/2044
वृष	10/12/2044
मिथु	27/12/2044
कर्क	14/01/2045
सिंह	01/02/2045
कन्या	19/02/2045
तुला	09/03/2045
वृश्चि	26/03/2045
धनु	13/04/2045
मक	01/05/2045
कुंभ	19/05/2045

मिथु - मक	
19/05/2045	
18/12/2045	
धनु	05/06/2045
वृश्चि	23/06/2045
तुला	11/07/2045
कन्या	29/07/2045
सिंह	15/08/2045
कर्क	02/09/2045
मिथु	20/09/2045
वृष	08/10/2045
मेष	25/10/2045
मीन	12/11/2045
कुंभ	30/11/2045
मक	18/12/2045

मिथु - धनु	
18/12/2045	
19/07/2046	
वृश्चि	04/01/2046
तुला	22/01/2046
कन्या	09/02/2046
सिंह	27/02/2046
कर्क	16/03/2046
मिथु	03/04/2046
वृष	21/04/2046
मेष	09/05/2046
मीन	26/05/2046
कुंभ	13/06/2046
मक	01/07/2046
धनु	19/07/2046

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	80%	भाग्योदय, सुख
मूंगा	मंगल	78%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	64%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, धन, दम्पति
नीलम	शनि	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि, हानि
पन्ना	बुध	41%	व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	41%	हानि, व्यय

रत्न की शुभता

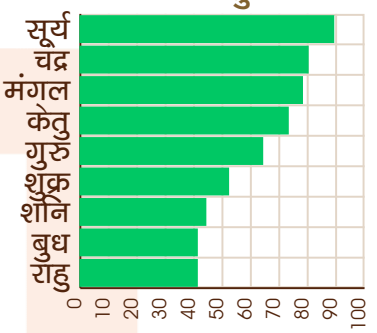

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	26/08/2042	77%	67%	78%	52%	64%	64%	53%	52%	80%
सूर्य	25/08/2048	100%	86%	84%	41%	70%	28%	19%	16%	61%
चंद्र	26/08/2058	95%	92%	78%	52%	64%	52%	44%	16%	61%
मंगल	26/08/2065	95%	86%	91%	16%	70%	52%	44%	16%	80%
राहु	26/08/2083	77%	67%	66%	41%	64%	58%	53%	58%	61%
गुरु	26/08/2099	95%	86%	84%	16%	77%	28%	44%	41%	73%
शनि	27/08/2118	77%	67%	66%	52%	64%	58%	59%	52%	61%
बुध	27/08/2135	95%	67%	78%	58%	64%	58%	44%	41%	73%
केतु	27/08/2142	77%	67%	84%	41%	64%	58%	19%	16%	86%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, मोती व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य व मोती रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, पुखराज एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र

में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र नवम भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। मोती रत्न शुभता से आप विद्वान और साहसी बनेंगे। भाग्य वृद्धि में भी मोती रत्न अनुकूल फल प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आप अपने जीवनकाल में पर्याप्त संपत्ति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपको यात्राओं के माध्यम से भी लाभ प्राप्त हो सकते है। मोती रत्न की शुभता से आपकी धार्मिक विचारधारा प्रबल होगी। धर्म क्रियाओं में पहले से अधिक श्रद्धा और विश्वास बनेगा। मोती रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको विदेश यात्राओं से लाभ देगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मानी, महत्वकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्दिप अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्टमेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते है। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर

पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छ्ल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाईयों से स्नेह दिलायेगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतन्त्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती है। भाग्य और आय क्षेत्र में सफलता प्राप्ति होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भ्राताओं का सुख प्राप्त करायेगा। धन, सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज रत्न शुभदायक रत्न है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते है। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे है तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश का स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बना सकते है। हीरा रत्न धारण करने से आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण हीरा रत्न आपको कुटुम्ब से सुखी और विदेश स्थानों से लाभ दिला सकता है। शुक्र रत्न आपको पारिवारिक सुख के साथ धन संचय का सुख भी दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते

समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम आपको असंतोषी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका व्यक्तिगत विकास बाधित हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर हो सकता है कि आपको जीवन के मूल उद्देश्य की प्राप्ति न हों। इसका एक कारण आपके जीवन उद्देश्यों का अत्यंत दुष्कर होना भी हो सकता है। यह रत्न धारण कर आप वकालत एवं धर्म क्षेत्र में अनुकूल आय एवं सम्मान प्राप्त नहीं कर पायें। रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर और रुखे हो सकते है। नियमों और सिद्धान्तों का सख्ती से पालने कराने के कारण आपका परिवार आपसे कुछ भयभीत भी रहेगा। शनि रत्न नीलम आपको कुंसंगति का शिकार बना सकता है। कुटुंब से आपके संबंध प्रभावित होकर मधुरता में कमी ला सकते है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। शनि आपको शुभ फल देने की स्थिति में नहीं है। अतः इस ग्रह का रत्न धारण करने पर आपकी मान, प्रतिष्ठा, कर्म, पिता, प्रभुता एवं अधिकारों का हनन हो सकता है। यह रत्न आपको व्यापार, हवन, अनुष्ठान, ऐश्वर्य भोग, कीर्तिलाभ, विदेश यात्रा, संपत्ति आदि में कष्ट दे सकता है। नीलम रत्न धारण से आपमें लोभ, स्वार्थ, गुलामी, संतान हीनता, रिश्वतखोरी एवं बेईमानी का भाव जन्म ले सकता है। चाचा, ताऊ, बुआ, बड़े भाईयों आदि विषयों के लिए शनि रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं बनी हुई है। आपके लिए यह रत्न बाधक भावेश का रत्न भी होने के कारण आपकी उन्नति में बाधक का कार्य भी करेगा।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको उत्तम कार्य करने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेगें। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों का साथ न मिल पाने के कारण आपके कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपकी सामाजिक भावना में कमी कर सकता है। आपके अत्यधिक व्यवहारिक होने से आपमें संवेदनशीलता की कमी हो सकती है। धैर्य और विनम्रता की कमी भी आपमें दृष्टिगोचर हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में निर्णय लेने में आप दुविधा की स्थिति का अनुभव हो सकता है। आर्थिक रूप से स्थिरता प्राप्त करने में बौद्धिक योग्यता का सहयोग नहीं मिल पाएगा। परिस्थितियों के अनुसार बातचीत का कौशल आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पन्ना रत्न प्रभाव से मध्यस्थता का कार्य करना आपको दिक्कत दे

सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते है। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आपमें पारिश्रामिक क्षमता की कमी हो सकती है। यह रत्न स्वास्थ्य में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपको विलासी और भावुक स्वभाव अधिक दे सकता है। यह रत्न आपको वाचाल बना सकता है। आप समाज में योग्यतानुसार स्थान प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आपके द्वारा धन लाभ कुछ अनैतिक तरीकों से हो सकते है। धन-लाभ प्राप्ति के लिए आप बुद्धि और चातुर्य का प्रयोग अधिक कर सकते है। आगे बढ़ने के लिए आप आंशिक रूप से स्वाथी भी हो सकते है। यह रत्न दूर स्थानों से आपकी लाभ प्राप्तियों को बाधित कर सकता है। आप कुछ हद तक अभिमानी हो सकते है। आय क्षेत्र के बढ़ते विवाद आपकी ऊर्जा और समय शक्ति का ह्रास कर सकते है।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(17/01/2026 - 26/08/2042)

शुक्र की दशा में आपका लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज, हीरा, नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

सूर्य
(26/08/2042 - 25/08/2048)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं और नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(25/08/2048 - 26/08/2058)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(26/08/2058 - 26/08/2065)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(26/08/2065 - 26/08/2083)

राहु की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में

विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(26/08/2083 - 26/08/2099)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, गोमेद व हीरा रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(26/08/2099 - 27/08/2118)

शनि की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, नीलम, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

बुध
(27/08/2118 - 27/08/2135)

बुध की दशा में आपका माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती, पुखराज, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(27/08/2135 - 27/08/2142)

केतु की दशा में आपका लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 26/08/2042

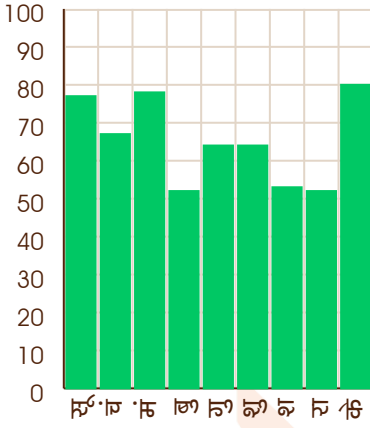

सूर्य - 25/08/2048

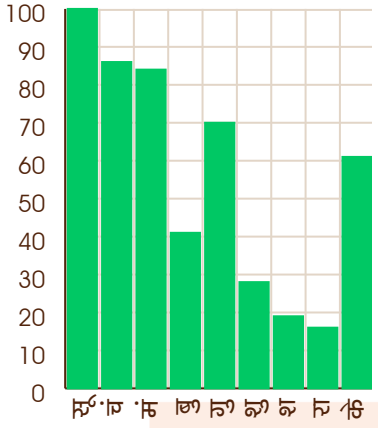

चन्द्र - 26/08/2058

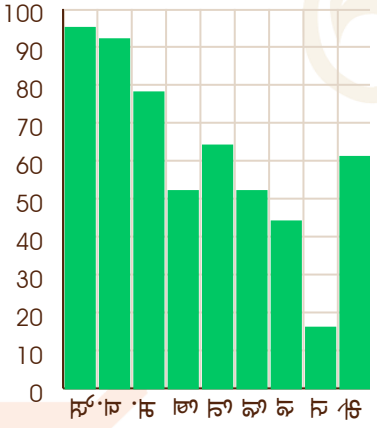

मंगल - 26/08/2065

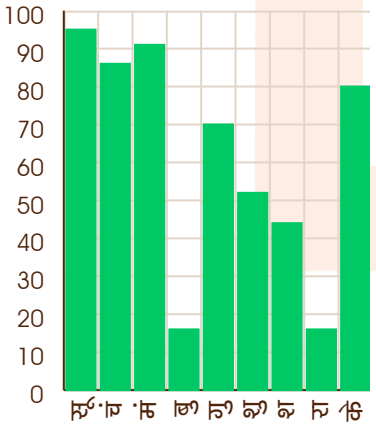

राहु - 26/08/2083

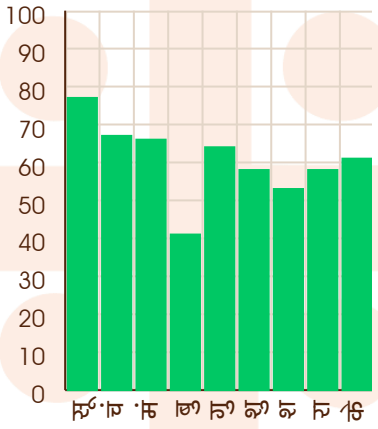

गुरु - 26/08/2099

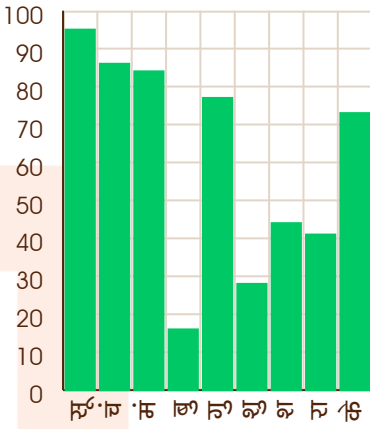

शनि - 27/08/2118

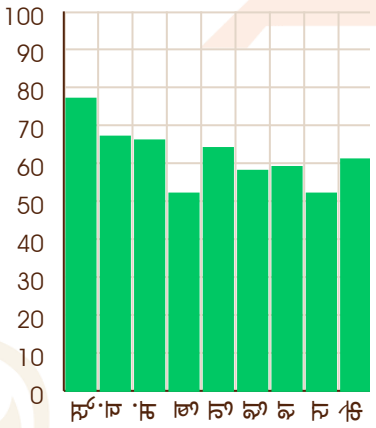

बुध - 27/08/2135

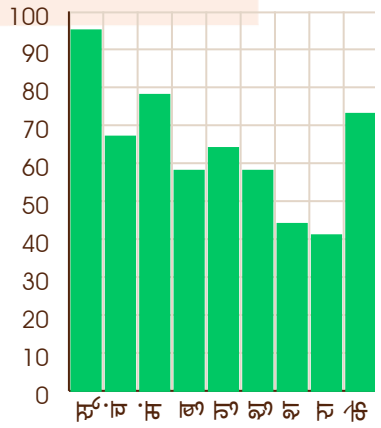

केतु - 27/08/2142

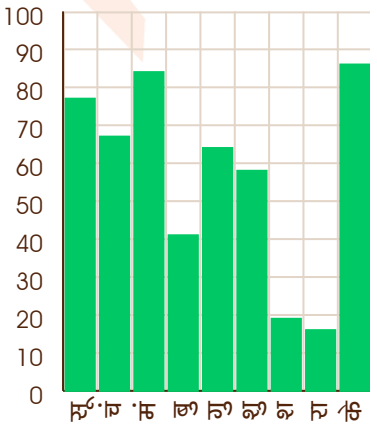

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ऊँ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते है। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरूषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता हैं। इसका स्वामी जिस भाव में जाता हैं उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता हैं। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शात्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान हैं। इस भाव का स्वामी अर्थात अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता हैं। और अशुभ फलों में वृद्धि होती हैं। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव हैं। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग,कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह हैं। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता हैं। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती हैं। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता हैं। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता हैं।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि हैं। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही हैं। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती हैं। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान हैं। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि हैं। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/01/2026-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 17 है। एक एवं सात के योग से आपका मूलांक 8 होता है। आठ मूलांक का स्वामी शनि है। अंक एक का सूर्य तथा सात का भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून है। इन तीनों ग्रहों का प्रभाव आपके जीवन में दृष्टिगोचर होगा। मूलांक 8 के स्वामी शनि प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके जीवन में संघर्ष अधिक रहेंगे एवं प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के बाद अवरोध आयेंगे। जिन्हें आप मेहनत एवं धैर्य से पार कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

निराशा एवं आलस्य दो अवगुण आपकी प्रगति के बाधक रहेंगे। अतः किसी भी कार्य की असफलता से निराश न हों तथा दुबारा प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी। कार्य में कर्म के सिद्धांत को मानते हुये आलस्य से दूर रहना सफलता की कुंजी रहेगा। अंक एक के स्वामी सूर्य एवं सात के केतु या नेपच्यून के प्रभाव से आपकी कल्पना शक्ति, विचार शक्ति अच्छी रहेगी। आप में दूसरों को समझनें की शक्ति अच्छी होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान भी अच्छा रहेगा। सूर्य प्रभाव से आपका नाम स्थायी प्रसिद्धि को प्राप्त करेगा। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपको यश तथा लाभ प्राप्त होगा।

उच्च वर्ग में आप लोकप्रिय होंगे एवं उच्चवर्ग से लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी इच्छा शक्ति दृढ़ रहेगी एवं अपनी बात पर अड़िग रहने की प्रवृत्ति आप में पाई जायेगी। आप थोड़े हठी होंगे। हठ की यह प्रवृत्ति यदाकदा आपको हानि भी पहुँचायेगी। अतः जहाँ तक हो सके आप अपने हठ पर सन्तुलन रखें एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। सूर्य केतु शनि ग्रहों के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल व्यक्ति रहेंगे। आपकी ख्याति अच्छी रहेगी तथा दूसरों के लिये उदाहरण का कार्य करेगी।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 8 है तथा आपका भाग्यांक 1 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा

भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 8 और भाग्यांक 1 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के अच्छे फल प्राप्त होंगे। मूलांक एवं भाग्यांक के प्रभाव से आप अपने रोजगार-व्यापार में अपनी मेहनत के द्वारा उन्नति प्राप्त करेंगे। भाग्यांक स्वामी सूर्य प्रकाश एवं प्रतिभा का दाता है तथा शनि प्रारंभिक श्रम एवं संघर्ष के पश्चात स्थिर सफलता देता है। सूर्य के प्रभाव से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आप प्रतिभासंपन्न एवं शीघ्र सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे। जीवन में आपको उचित मात्रा में धन-संपदा एवं वैभव प्राप्त होंगे। वहीं शनि प्रभाव से आपके बनते हुए कार्यों में अचानक रुकावटें आएंगी, जिनको आप अपनी कड़ी मेहनत एवं बुद्धि-विवेक के द्वारा पार करने में सफल होंगे। शनि अवरोध, आलस्य देता है एवं कार्यों को देरी से संपन करता है। लेकिन ऐसे सभी कार्य दीर्घ काल तक स्थायी रहते हैं, जिनका आपको सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर पूर्ण प्रभाव प्राप्त होगा। जीवन के प्रारंभिक काल की अपेक्षा मध्य अवस्था से आपकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुदृढ़ होती चली जाएगी।

आपका भाग्योदय 28 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 37 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 46 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल तथा अगस्त माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय सभी शुभ रहें।

मूलांक 8 एवं भाग्यांक 1 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र – ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्द्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह ज्ञात हो रहा है कि आपका जन्म मेष लग्न में अर्थात् जब मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न उदित था उस समय भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में कन्या राशि के नवमांश एवं सिंह राशि के द्रेष्काणा में हुआ था। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो रहा है कि आप महान भाग्यशाली हैं। प्रसन्नता का विषय यह है कि जब कभी भी संयोग प्राप्त हो मुख्य रूप से लाटरी के टिकट प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त करें ताकि आप शीघ्र ही धनवान बन सकें। अन्यथा परिणाम स्वरूप आप निर्विध्न आराम देह एवं आनंददायक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रर्याप्त (धन) आय के अतिरिक्त साधन प्राप्त करें ताकि आपका सुखमय जीवन विलास-प्रियता से व्यतीत हो सके।

आप शरीर से दुबले (कृशकाय) कद के मांसल एवं हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले संयमी प्राणी हैं। आपकी उन्नत ललाट, सुंदर और आकर्षक आंखे आपके व्यक्तित्व को अपेक्षाकृत सौंदर्य प्रदान कर रहा हैं। यह संभव है कि आपके मस्तक पर कोई पुराने चोट या घाव के चिह्न हों। आपकी संपूर्ण व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक है, जो मुख्यतः विपरीत योनि के प्रति सुंदरता का केंद्र है। यह संभव है कि आप कामी नारी के आकर्षण में दिशाहीन होकर अपने शयन कक्ष के अतिरिक्त कहीं बाहर कामोत्तक आनंद प्राप्ति का पता लगाकर आनंद ले तो अन्य नारी के साथ संभोग के परिणाम स्वरूप यौन संबंधी रोग अर्थात् यौन रोग का शिकार हों। ऐसी संभावना है।

आप अपनी वाचाल प्रवृत्ति के प्रभाव से किसी भी विषय पर अपना मंतव्य प्रकट कर देते हैं, जो आवश्यक नहीं है। यह प्रवृत्ति आपकी मेधावीपना की औसत से अधिक है। फिर भी सदैव ही आप बात-चीत कर के अपना मुंह बंद नही रखते लगातार बोलते ही रहते हैं, जो आपके संपर्क में आता है। वह आपको अधिक सामान्य व्यक्ति समझता है। आपको पूर्णरूपेण अधिकाधिक मदद करता है। आपकी मित्रमंडली आपके लाभ के लिए धन का भुगतान भी करते हैं। अर्थात् मित्र से आपको आर्थिक लाभ होता है।

आप पूर्ण रूपेण आश्वस्त हैं कि आप में नेतृत्व की क्षमता विद्यमान है तथा आप एक अच्छे नेता के गुणों से पूर्ण हैं। आप अपनी योजना के संबंध में किसी अन्य की विचारों का कोई महत्व नहीं देतें, वास्तव में आप अपने ही विचारों और निर्णयों को सर्वोपरि समझते हैं। परंतु किसी-किसी विषय में आप भ्रमित होकर किसी अन्य उपाय को अपनाते हैं। परंतु आप बिना किसी बड़ी बाधाओं के भी पार कर लेते हैं। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा क्योंकि आप में पूर्ण आत्म शक्ति विद्यमान हैं, जिसके प्रभाव से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परंतु आप जब कोई जोखिम मोल लेंगे तब साधारण रूप से किसी प्रकार से घायल होने के प्रति सर्तकता बरतना होगा। विशेषतया दुर्घटना के कारण सिर में चोट न लगे, इसके लिए आपको पूर्णरूपेण सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि यह दुर्घटना संभाव्य है। यदि आप सतर्क रहें तो संभावित दुर्घटना से सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि आप कम से कम समय बचा कर भी स्वास्थ्य रक्षा के लिए अत्यधिक उत्साहित एवं अभिलाषित रहते हैं। आपकी बुद्धि और शरीर किसी भी दबाव से स्थिर रहता है।

अतएव आपके लिए यह उचित है कि आप अपनी तनाव मुक्ति हेतु यथा संभव विश्राम प्राप्त कर यथेष्ठ शयन करें। अन्यथा आप नस की गडबड़ी अथवा मस्तिष्क संबंधी रोग से ग्रसित हो जाएंगे। आपके लिए यह पूर्व सूचना है कि आप स्वास्थ्य रक्षा के लिए सभी संभव उपाय करे अर्थात् सचेत रहें, तथा समय-समय पर स्वास्थ्य संबंधी सलाह डॉक्टर से प्राप्त कर ही संयमित जीवन बिताएं। सामान्य स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिए आपको मद्य एवं मंसाहार से बच कर रहना चाहिए। आपको शाकाहारी भोजन का सेवन पर्याप्त मात्रा में करनी चाहिए। आप पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्ति संबंधी वार्तालाप करने में विश्वास रखते हैं तथा धन प्राप्ति के सुअवसर प्राप्त करना चाहते हैं। आपको निम्नांकित निर्देशों का पालन करना चाहिए।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली अंक 9 एवं 1 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं 8 अंक से आप आकर्षित हैं। अंक 6 एवं 7 अंक आपके लिए अनुकूल नही है।

आपके लिए लाल, स्वर्णिम एवं पीला रंग भाग्यशाली प्रमाणित होगा।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते है तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगे। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगे। आप एक स्वाभिमानी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे।

मंगल की राशि की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यवक्ता पुरूष होंगे तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आप तेजस्वी एवं साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगे। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगे तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते है क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रूचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरूष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्ठान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु को एक बार देखकर या सुनकर आप चिरकाल तक उसे नहीं भूलेंगे। साथ ही आप शीघ्र ही किसी कार्य प्रणाली को हृदयगम कर सकते है। आप उच्च शिक्षा, नीति, शास्त्र आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा लेखन आदि क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त कर सकते है। आपके भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक सम्पन्न करेंगे। अतः समाज में एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आपकी पहचान बनी रहेगी। आप एक बहादुर एवं साहसी पुरूष होंगे तथा कलम की ताकत भी आपके पास रहेगी। अतः किसी उच्च अधिकारी या नेता के विरूद्ध आप साहस पूर्वक कुछ भी लिख सकते है। आप एक स्पष्टवादी पुरूष होंगे तथा स्पष्ट रूप से अपनी राय अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। संचार के सभी साधनों से आप युक्त रहेंगे तथा सूचना केन्द्रों में आप कार्यरत भी हो सकते है। जैसे डाकखाना, दूर भाष केंद्र , दूर संचार विभाग। आप संगीत प्रिय होंगे तथा वाद्य यंत्रों के उपयोग से आपको आनन्द प्राप्त होगा। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा ऐसी यात्राओं से आपको महत्वपूर्ण स्मृतियां भी प्राप्त हो सकती हैं। कला के क्षेत्र में भी आपकी इच्छा रहेगी परन्तु समाचार पत्र के संपादक या संवाद दाता के रूप में कार्य करना आपके लिए अधिक लाभदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा पत्नी के प्रति आपके मन में निश्चल प्रेमभावना रहेगी। साथ ही हृदय में उदारता रहेगी एवं सत्य का आप पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल में प्रधान रहेंगे तथा सज्जन लोगों से सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थीजिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत मे आप इसे प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जायेंगे।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगे एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः जीवन में हार कम ही मानेंगे। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगे।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्तरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगे तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृति होने के कारण सामन्जस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगे। इससे आपके संबंधो में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुख में अवश्य उनका साथ देंगे। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रूचि अल्प मात्रा में ही रखेंगे फलतः स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पडेगा। आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी रूचि वैदिक, साहित्य एवं दर्शन आदि में अल्प होगी तथा पाश्चात्य साहित्य एवं आधुनिक विषयों के ज्ञानार्जन में विशेष रूचि होगी। आप बौद्धिक कार्यो को करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी प्रवृति यंत्र, तंत्र एवं मंत्र आदि में भी होगी तथा इन विषयों पर न्यूनाधिक मात्रा में शोध आदि कार्य भी सम्पन्न कर सकते है। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी तथा एक विद्वान के रूप में आप स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में केतु के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आपकी अधिक रूचि नहीं होगी तथा यदि कोई प्रसंग चला भी तो उसमें आपको सफलता कम ही मिलेगी चूंकि आप यथार्थवादी मनुष्य है तथा भावुकता के भाव की आप में अल्पता है। अतः प्रेम प्रसंग में सफलता कम ही मिलेगी तथा इनसे अनावश्यक तनाव या परेशानी भी उत्पन्न हो सकती है। अतः प्रेम प्रसंगों की यत्न पूर्वक उपेक्षा ही करें।

केतु के पंचम भाव में स्थिति के फलस्वरूप आपको सन्तति की प्राप्ति में विलंब का सामना करना पड़ सकता है चूंकि केतु योगकारक ग्रह सूर्य की राशि में स्थित है। अतः इसके फलस्वरूप सन्तति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी सन्तति योग्य एवं बुद्धिमान होगी तथा जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के प्रति उनका आदर का भाव होगा तथा पिता की अपेक्षा माता से अधिक लगाव रहेगा। परंतु वे सभी अपनी इच्छा से कार्य करने वाले होंगे तथा माता पिता की आज्ञा या सलाह कम ही मानेंगे। इससे आपको किंचित मानसिक तनाव हो सकता है लेकिन बच्चों के विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्यों वे व्यावहारिक होंगे तथा सन्तोष जनक रूप से जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

बच्चों की शिक्षा के प्रति आप पूर्ण सजग रहेंगे तथा उन्हें उचित एवं आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के लिए यत्नशील होंगे तथा इसमें होने वाले व्यय की कोई चिन्ता नहीं करेंगे परन्तु अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे सामान्य सिद्ध होंगे तथा अन्य क्षेत्र में वे कुशल एवं सक्रिय रहेंगे जिससे वे अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त सन्तति के लिए समाज में अन्य जनो से आपका समय समय पर अनावश्यक विवाद हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति में यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही वृद्धावस्था में बच्चे सेवा भी कम ही करेंगे। अतः उनसे अधिक अपेक्षाएं कम ही रखनी चाहिए।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है चूंकि यह भाव रोग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इसके प्रभाव से आप नाक कान तथा गले आदि के कष्ट से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आप में सहन शक्ति के भाव की भी यदा कदा अल्पता रहेगी एवं चर्म रोगों से आपको परेशानी होगी ।

आपको क्रोध एवं उत्तेजना पर हमेशा नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में कमी आएगी तथा विरोधी पक्ष में वृद्धि होगी। साथ ही बन्धु वर्ग तथा अन्य संबन्धी आप के लिए छिपकर षडयंत्र भी कर सकते हैं। सरकार या पड़ोसियों से भी आपको शत्रुता का सामना करना पड़ सकता है। अतः आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें तथा किसी अन्य की अनावश्यक आलोचना न करें एवं सहनशीलता बनाएं रखें। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको जीवन में अनावश्यक शत्रुओं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आपके लिए धन सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे। अतः ऐसे मामलों की यत्न पूर्वक उपेक्षा ही करें। सेवक वर्ग की आपको प्रबल आवश्यकता रहेगी लेकिन इनसे आपको समय समय पर धन एवं अन्य प्रकार से हानि होती रहेगी अतः नौकरों का अत्यधिक सावधानी से चयन करें। साथ ही ऋण आदि लेने की भी आपको उपेक्षा करनी चाहिए यदि आपकी प्रवृत्ति इस ओर रही तो आप काफी समय तक ऋण के भार से दबे रहेंगे। बचपन में मामा तथा मामी से आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त खान पान में तेज मसालों आदि का भी परहेज रखना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग का आप दमन करेंगे परन्तु स्त्रियों के प्रति आसक्ति में आपका धन व्यय हो सकता है अतः सतर्क रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल, भ्रमण प्रिय, प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्यो में वह दक्ष होंगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा इसमें वृद्धि करने के लिए वह आधुनिक सौंदर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देंगे। इससे जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे । तथा समय समय पर उनसे आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा आपके आपसी संबंधों में विशेष मधुरता रहेगी ।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा तथा बहू के रूप में जितनी सेवा या सुख उन्हें देना चाहिए देंगी जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही देवर एवं ननदों से भी मधुर स्वभाव के कारण मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे आपको लाभ एवं उन्नति मिलेगी। अतः साझेदारी के कार्यो को आप सम्पन्न कर सकते है।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप एक व्यवहारिक व्यक्ति होंगे तथा ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर आपका विश्वास अल्प ही रहेगा तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे या अन्य किसी भी प्रकार से आपको विशिष्ट लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी समीपस्थ संबन्धी के द्वारा भी आपकी जायदाद में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। साझेदार या पत्नी के द्वारा भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप यद्यपि घर से पूर्ण सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथापि शादी के समय भी आप दहेज नकदी या आभूषण आदि को भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प रहेंगी यदि कोई ऐसी घटना घटेगी तो यह सामान्य रहेगी अतः इसके विषय में आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि सावधानी वश आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। आपको अपने घर या कार आदि का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि इनसे आपको पूर्ण लाभ होने की संभावना रहेगी। दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि बीमा कराने से अधिक लाभ होगा। सामान्यतया आप उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहेंगे परन्तु वाहन चलाते समय आपको गति पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए तथा ध्यान से सवारी चलानी चाहिए अन्यथा सामान्य दुर्घटना घट सकती है। इसके अतिरिक्त आप की आयु अच्छी रहेगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहंगे। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी आपके मन में रूचि बनी रहेगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ पर अवश्य व्यतीत करेंगे। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मोपदेशक के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से बिना उसकी इच्छा के कुछ भी कार्य होना असम्भव सा है। साथ ही आप कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करने वाले व्यक्ति होंगे।

आपके पास अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी विद्यमान रहेगी। अतः अपने विषय में आपको पूर्वाभास हो सकता है। आप धार्मिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा अर्जित करने के भी इच्छुक रहेंगे साथ ही लम्बी तीर्थ यात्राओं को भी जीवन में सम्पन्न करेंगे। अपने जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको इच्छित मान प्रदान करेंगे। आपके विचार से जीवन में मनुष्य को जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म में किए गए कार्यो का फल है अतः आंतरिक रूप से आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसका ज्ञान भी रहेगा। इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर, देवता एवं ब्राह्मणों के सेवक महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाले तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मलग्न में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही शुक्र भी मित्र राशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। मकरराशि भूमितत्व युक्त तथा शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र श्रम साध्य होगा परंतु बौद्धिकता का भाव भी बना रहेगा। साथ ही आप व्यवसाय या कार्यक्षेत्र में काफी बदलाव की इच्छा रखेंगे। चूंकि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति है अतः जो भी परिवर्तन करेंगे उससे आपको लाभ की ही प्राप्ति होगी।

द्वितीयेश एवं सप्तमेश शुक्र के दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपकी आजीविका का क्षेत्र कला, संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन-विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स, न्याय विभाग यथा न्यायधीश वकील सचिव सलाहकार फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में प्रारम्भ कर सकते हैं। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों या संबंधित विभागों में अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगे तो इसमें आपको वांछित सफलता मिलेगी एवं उन्नति के मार्ग पर बिना किसी समस्या एवं व्यवधान के अग्रसर होंगे। शनि की राशि में शुक्र के प्रभाव से आप राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते है।

व्यापारिक क्षेत्र में अपना व्यवसाय प्रारम्भ करेने के लिए आपको चांदी सोना रत्न आदि का व्यापार दूध दही गुड़ आदि का व्यापार, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय आंलकारिक एवं मूल्यवान वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री तथा आयात निर्यात संबंधी यथा वस्त्रों का कार्य, शराब का व्यापार आदि लाभ दायक रहेगा एवं यदि आप ऐसे क्षेत्रों में अपने कार्यक्षेत्र या व्यापार को प्रारम्भ करेंगे तो इससे आपको जीवन में इच्छित लाभ एवं धनार्जन होगा तथा अपने स्तर की वृद्धि करने में समर्थ होंगे।

शुक्र की मित्र राशि में दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से आप जीवन में किसी उच्च एवं अधिकारिक पद को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। व्यापारिक क्षेत्र में आप अपना आदरणीय स्थान स्थापित करने में समर्थ होंगे। साथ ही आप किसी मान्यता प्राप्त संस्था के कोई पदाधिकारी भी बन सकते है तथा कई सम्मानीय एवं अधिकार प्राप्त लोगों से आपके सम्पर्क बनें रहेंगे।

आपके पिताजी एक बुद्धिमान एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा कलात्मकता के प्रति उनके मन में विशेष सम्मान होगा। साथ ही अपने आकर्षक व्यक्तित्व एवं अन्य कार्य कलापों से वे अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा समाज में आदरणीय समझें जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं आपकी उन्नति के लिए वे प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील रहेंगे फलतः आपको इच्छित शिक्षा प्रदान करेंगे एवं शिक्षा के स्तर में वृद्धि करने के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे। उनके प्रभाव से भी आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता

रहेगी तथा किसी भी प्रकार की आपस में समस्याएं नहीं होंगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा आपकी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूर्ण होती रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी कई इच्छाएं मन में विद्यमान रहेंगी तथा अन्य जनों की अपेक्षा आप की महत्वाकांक्षाएं यथा समय पूर्ण होंगी। आपके आय स्रोतों में स्वतः वृद्धि होती रहेगी तथा इनमें आपको अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। अतिरिक्त आय स्रोतों के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार लकड़ी या पेट्रोलियम पदार्थों के कार्य से इच्छित लाभ अर्जित कर सकते है।

आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी जिसमें आपको हार्दिक प्रसन्नता मिलेगी एवं उनसे भी यथा समय यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। अपने से अधिक आयु के लोगों से मित्रता आदि संबंध स्थापित करने से आपको इच्छित लाभ होगा क्योंकि अपनी आयु की अपेक्षा अधिक आयु के लोगों को समझना आपके लिए आसान रहेगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा वे सभी आपको अपना पथ प्रदर्शक समझेंगे।

आपके अंदर सामाजिकता की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी तथा सामूहिक मनोरंजन में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीय पुरूष समझें जाएंगे तथा कोई भी व्यक्ति आपके विरूद्ध सत्य असत्य बात कहने के लिए तैयार नहीं होगा तथा आपके सभी आभारी रहेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग सामान्य मात्रा में ही प्राप्त होगा परन्तु बहिनों से यदा कदा विशिष्ट लाभ या सहयोग मिल सकता है। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपके बाऐं कान में कोई परेशानी होगी परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही भाग्यशाली रहेंगे लेकिन समय के साथ ही आप बिना सोचे समझे कई बार मुक्त हाथों से व्यय करेंगे इससे आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगे तो आप आर्थिक परेशानियों से सुरक्षित रह सकते है।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे अतः धार्मिक कार्य कलापों तीर्थ यात्राओं मन्दिर निमार्ण आदि कार्यो या परोपकार संबंधी कार्यो पर समय समय पर व्यय करते रहेंगे। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनके रहन सहन पठन पाठन का विशेष ध्यान रखेंगे तथा उन पर यथोचित व्यय करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप उन्हें अच्छे स्कूलों तथा कालेजों में प्रवेश दिलाने के परम इच्छुक रहेंगे। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर भी आपका व्यय होता रहेगा। साथ ही घर की साज सज्जा की वस्तुओं यथा फर्नीचर टेलीफोन आदि भौतिक उपकरणों पर भी आपका समय समय पर व्यय होता रहेगा लेकिन आप व्यय पहले करेंगे बाद में अपना आर्थिक बजट देखेंगे इससे यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आप कर्ज आदि ले सकते है लेकिन इससे कोई परेशानी नहीं होगी तथा आप आसानी से कर्ज वापस कर देंगे।

आप नवीन विचारों की खोज में हमेशा मननशील रहेंगे तथा जीवन में नवीन आयाम भी प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रादि से भी आपकी इस क्षेत्र में उन्नति होगी आप शिक्षा, सरकारी अथवा कम्पनी के कार्य से विदेश यात्रा भी कर सकते है तथा इन यात्राओं से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में लम्बी अवधि तक प्रवास भी कर सकते है जो आर्थिक एवं सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इससे आपके रहन-सहन, खान पान एवं अन्य क्षेत्रों में उन्नति कारक परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भु" या "भू" अक्षर से होगा यथा- भूदेव।

आप अपने जीवन काल में समस्त सुखैश्वर्य का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगी तथा इसी प्रिय एवं मधुरवाणी का आप अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे। आपका चरित्र निर्मल तथा अनुकरणीय रहेगा। साथ ही धन दौलत का आपके पास सामान्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में बार बार जल पीने की इच्छा जागृत होती रहेगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सर्वप्रकार से आनन्द तथा सुख प्रदान करने वाली पत्नी की प्राप्ति होगी अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही आनन्द एवं सुखपूर्वक व्यतीत होगा। समाज में आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय व्यक्ति समझे जाएंगे। आप किसी अन्य से स्थिर मित्रता करना पसन्द करेंगे। अतः आपके अधिकांश मित्र बुद्धिमान तथा गुणवान रहेंगे। साथ ही आपके पास ऐश्वर्य एवं वैभव भी स्थिर मात्रा में ही रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके अर्न्तमन में अन्य जनों के उपकार करने की भावना सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा अपने स्वजनों के अतिरिक्त अन्य जनों के उपकार करने के लिए भी आप सदैव तत्पर रहेंगे। अतः ऐसे कार्यों से आपका समाजिक सम्मान निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहेगा। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा अपने सौभाग्य से ही अनेक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप की बुद्धि भी अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी तथा अधिकांश

शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के कार्यों को करने में भी आप निपुण रहेंगे। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रिय भी रहेंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा समाज में सर्वप्रकार के मान सम्मान से युक्त रहेंगे। आपकी मुख्य विशेषता रह रहेगी कि आपके हृदय में स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी अनावश्यक रूप से आप कभी भी उत्तेजित नहीं होंगे तथा संकट काल में भी बुद्धि तथा धैर्य का अवलम्बन करके शान्ति एवं सहनशीलता के भाव का यत्नपूर्वक जीवन में पालन करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

धनु राशि में जन्म होने के कारण आपकी मुखाकृति तथा कण्ठभाग दीर्घता से युक्त रहेगे। आपके कान, ओंठ तथा दान्तों में भी स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही आपकी भुजाएं भी पुष्ट रहेगी। आपको पिता द्वारा अर्जित धन की पूर्ण रूपेण प्राप्ति होगी तथा इससे आप समृद्ध रहेंगे। आपकी दानशीलता की प्रवृति भी रहेगी। अतः समय समय पर यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में पूर्ण रूचि रखेंगे। अतः काव्यादि सृजन में ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अतः शरीर में बल का अभाव नहीं होगा। आप उच्च श्रेणी के वक्ता होंगे तथा अपने

ओजस्वी भाषणों से अन्य जनों को पूर्ण रूपेण प्रभावित करने में सफल रहेंगे। सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में विद्यमान रहेगी। चित्रकारी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसमें आप विशेष योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे। आप गम्भीर प्रवृति से युक्त होकर धर्म के विषय में विस्तृत ज्ञान भी रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके संबंध सामान्य ही रहेगे। इसके अतिरिक्त आप से बलपूर्वक कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करवाया जा सकेगा। आप केवल प्रेम तथा सम्मान से ही कार्य करेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोल तथा सुन्दर रहेंगी एवं हाथ की लम्बाई भी सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आपको पानी के नजदीक रहना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अतः अवसरानुकूल आप अपनी इस रूचि का भी पालन करते रहेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी स्वस्थ एवं पुष्ट रहेंगी। आपके अन्दर कृतज्ञता का सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उसके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे तथा उसके उपकार को पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप हमेशा अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर कभी भी नहीं बैठेंगे। आप अत्यन्त ही वाक्पटु होंगे तथा आप वाणी की चतुरता से कई कार्यों को सिद्ध करेंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में भी सफल रहेंगे। आपकी प्रवृति त्याग की भावना से भी युक्त रहेगी। साथ ही आपका कद मध्यम रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगे। शत्रुओं का नाश करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे सर्वदा भयभीत से रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामान्य लोगों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय भी रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे तथा हमेशा सदाचारी जीवन व्यतीत करने के लिए जीवन में यत्नशील रहेंगे। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा आपको जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष उसे कह देंगे। इसके साथ ही आप सोच विचार कर अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा पुष्ट रहेंगे तथा अपने कुल एवं परिवार में भाईयों की अपेक्षा श्रेष्ठ माने जाएंगे। समस्त परिवारजन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप चित्रकारी या इंजीनियरिंग में विशेष सफलता अपने जीवन में अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से ही शूरवीर तथा साहसी पुरूष रहेंगे। सत्य के प्रति आप निष्ठावान होंगे तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के स्वामी होंगे अतः आप अपने कार्य या आजीविका आदि को स्थिर रूप में ही करना पसन्द करेंगे। आप सभी लोगों के प्रति प्रेम तथा सम्मान की भावना का प्रदर्शन करेंगे तथा अनावश्यक वैमनस्य का भाव अपने मन में नहीं रखेंगे। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा सुन्दर सुशील एवं बुद्धिमती भार्या की आपको प्राप्ति होगी। आपकी प्रवृति नाटकों के प्रति भी रहेगी अतः इसे भी आप सम्पन्न करेंगे। आपका शरीर स्थूल रहेगा तथा कभी कभी आप ऐसे कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे समस्त कुल एवं परिवार को परेशानी तथा कष्ट की अनुभूति भी होगी लेकिन समाज में आपकी लोकप्रियता बनी रहेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वप्रकार के सद्गुणों सम्मान तथा आदर से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगे। आप अपने अन्य भाईयों में निश्चित रूप से श्रेष्ठ एवं सम्माननीय समझे जाएंगे। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा। आपकी चाल अत्यन्त ही आकर्षक होगी परन्तु स्वभाव में सहनशीलता के भाव का प्रायः अभाव ही रहेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा जिसका आप समयानुसार यथाशक्ति पालन भी करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान तथा सादगी पूर्ण पुरूष रहेंगे। व्यर्थ की भौतिकता में आपका विश्वास नहीं रहेगा। साथ ही समाज में आप एक विद्वान के रूप में प्रसिद्ध रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति अत्यन्त ही चंचल रहेगी। आप मीठे पदार्थो के भक्षण के अत्यन्त शौकीन रहेंगे। धन के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसको प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही आतुर तथा प्रयत्नशील रहेंगे। यदा कदा आपका स्वभाव वाद विवाद में भी क्रियाशील रहेगा एवं किसी न किसी से आपका परस्पर विवाद चलता रहेगा। भावना की अधिकता भी आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा उत्तम एवं गुणवान सन्तति से आप हमेशा युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अनेक साहसी कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक

व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय मे आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इस प्रकार करने से आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था के प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकते हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगे। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगे। आप बहुत वहम करेंगे। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता से दूर होना पड़ सकता है। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्चपद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगे तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नजर और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती पगड़ी या टोपी पहनें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में नौंवे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से आप दुःखियों के हमदर्द, समाज में आदरणीय, पैतृक जायदाद मिलेगी और उससे अधिक लाभ होगा। हर प्रकार से जीवन उत्तम बीतेगा। आपके जीवन के 24वें वर्ष में चंद्रमा का अच्छा फल मिलेगा। आप घूमने-फिरने के शौकीन होंगे। तीर्थयात्रा भी करेंगे। आपका स्वभाव सरल, संगीत में रुचि रखने वाले, धार्मिक और कुशल कार्यकर्त्ता होंगे। आप गणित विद्या के माहिर होंगे। आप धर्म का पालन करेंगे। आपको अच्छी संतान का सुख नसीब होगा। आपके धन-दौलत में बरकत होगी। 34 वर्ष की आयु के बाद साधारण लेकिन 48 वर्ष की आयु के बाद आर्थिक हालात अच्छी

हो जाएगी। आप विदेश का सफर करेंगे। दान-धर्म के कार्यो में पूरी दिलचस्पी रखेंगे। पिता के प्रति अच्छा व्यवहार रहेगा। पिता का पूरा सुख नसीब होगा। कभी-कभी आपसे गलत काम हो सकते हैं इसका विशेष ध्यान रखें। स्वभाव से साधू तथा व्यवहार में नम्र होंगे। यदि सिंह बन कर रहना चाहें तो उथल-पुथल होती रहेगी। आपके लिए नम्र बन कर रहना ही शुभकारक है। आप जीवन में तरक्की की चोटी तक पहुंच जाएंगे।

यदि आपने धार्मिक कार्यों के विरुद्ध कार्य किया या धर्म के नाम पर चंदा मांगा, माता को कष्ट दिया या माता का विरोध किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी अक्ल धोखा देगी, आपका छोटा दिल होगा और आवारा घूमने से हानि होगी। चांदी-पानी-चावल आदि सफेद वस्तुओं का कार्य हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ-झूठ से दूर रहें।

उपाय :

1. तीर्थ यात्रा करें या धार्मिक कार्य करें।
2. चंद्र ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप

सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी के प्रिय रहेंगे। आप व्यवहार कुशल, ठीक से जीवन निर्वाह करने वाले होंगे। आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगे। आप लेखक-संपादक, अनेक विद्याओं के जानने वाले हो सकते हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाले होंगे। आप पूरा धन कमाने वाले हैं। आप अव्वल दर्जे के खुशामदी होंगे। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ सिद्ध करेंगे। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगे। आप शरारती और मतलब परस्त होंगे। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगे। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगे। व्यापार करने से घर के लोगों को भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव के है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका अच्छा जीवन बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम अपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगे। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चौड़े पत्तों का वृक्ष, तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।

3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :

1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में तीसरे खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप जिस पर मेहरबान होंगे तो उसे बड़ा लाभ होगा। आप नौकरी-व्यापार से आजीविका चलाएंगे। 40 वर्ष की उम्र तक गृहस्थ जीवन में पूर्ण योगदान करेंगे। आप न्यायप्रिय होंगे। भाई से भी सुख प्राप्त होने की संभावना है। परंतु आप स्वयं बुद्धिमान होंगे। आपको अपने भाई-बहन की सहायता करने से लाभ मिलेगा और उनसे संबंध अच्छे रहेंगे। 26 वर्ष की उम्र में आपकी दौलत बढ़ने लगेगी। आपकी औलाद के जन्म के बाद आपका भाग्योदय होगा। आप अपने जीवन में लगातार उन्नति करते रहेंगे। समाज में अच्छी प्रतिष्ठा मिलेगी। आप अपने भाई के मददगार होंगे। आपका घर-वार नेक होगा। आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी पत्नी आपके जीवन में सहायता करेगी। आपके द्वारा बुजुर्गों की सेवा से धन-दौलत में वृद्धि होगी। आप धार्मिक स्वभाव के होंगे। आप अपने भाग्य पर सब्र करने वाले होंगे, अपनी किस्मत पर संतुष्ट रहेंगे। आप बुढ़ापे में आराम पाएंगे। आप बहादुर होंगे। आप आंखों की होशियारी से ही दूसरों को भांप लेंगे।

यदि आपके घर में कटा या सूखा पीपल का पेड़, धर्म मंदिर है उसकी सेवा नहीं करते, बुरे तरीकों से धन कमाया या मित्र मार की तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से 31वें वर्ष में बीमारी की आशंका है। आप अपने मित्रों के साथ धोखाधड़ी करके या लूट कर धनवान बनेंगे। आपकी बेमतलब की बकवास/गप्पबाजी आपके आने वाले समय को खराब कर देगी। जिस पर आप बिगड़ जाएं उसका सब कुछ नष्ट कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सूखा पीपल घर में नहीं रहे।
2. घर में मंदिर बंद न रखें।

उपाय :

1. दुर्गा पाठ या कन्याओं की सेवा करें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आप लोभी, शक्की दस्तकारी के कामों में रुचि लेंगे। आप शक्ति संपन्न होंगे। आप कामुक होंगे। आप कामवासना के अधीन रहेंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आप बाग-बगीचों के मालिक होंगे। आप अपने जीवन में दुर्घटना के शिकार नहीं होंगे। आपको अच्छा धन प्राप्त होगा। बुढ़ापा आराम से बीतेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी जवानी प्रेम संबंधों में उलझी रहेगी। आपकी चालाकी, शैतानी और होशियारी की अधिकता से अधिक लाभ, आंशिक क्षति भी हो सकती है। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। पत्नी के साथ रहते आपके साथ कभी भी कोई हादसा नहीं होगा।

यदि आपने शराब, बीयर आदि पीना और मांस खाना शुरु किया, मछली का शिकार किया, स्त्री पर अधिक विश्वास किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको पत्नी से दब कर रहना होगा। पराई स्त्री से संबंध रहने से संतान को दुःख पहुंचेगा। संतान सुख के लिए जीवन में बाधा आ सकती है। विवाह के 13 वर्ष बाद पत्नी बीमार हो सकती है या पत्नी अस्वस्थ रहेगी जिसके कारण आपको दुःख भी झेलने पड़ सकते हैं। आपको पेशाब की बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें।
2. आधिक मिजाज न बनें।

उपाय :

1. कपिला गाय का दान करें।
2. पत्नी शरीर पर दूध-दही मल कर स्नान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप पैसे की परवाह नही करेंगे और बेबाक खर्च करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। आप असहायों को सहारा देंगे और उजड़ों को बसाएंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होंगा। आप धनवान और सुखी होंगे। आपकी जो भी इच्छा होगी देर-सबेर पूरी होगी। आपके पास विभिन्न प्रकार की जायदाद होगी। आपका जीवन आराम से बीतेगा। आपका परिवार खानदानी होगा। आपकी कमाई में बरकत होगी। आप अपने पिछले जन्म की इच्छाओं के अनुरूप कोई बड़ा कार्य संपन्न करेंगे। आप में साधना करने की कला विद्यमान हैं। आप मुखिया या नेता हों या ऐसा सम्मान प्राप्त हो यह संभावना है। आपकी आमदनी और सुख के लिए शुभकारक है। आपमें जरूरत से ज्यादा होशियारी रहेगी। आपको रात्रि में पूरा आराम और सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने प्लाट खरीद कर मकान बनाया, मकान के अंत में अंधेरा कमरा हो उसको रोशनी में बदला, झूठ को धर्म बनाया, दूसरे के माल पर नजर रखी तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से झूठ बोलना या शराब आदि का चस्का लग जाना बहुत हानिकारक हो सकता है। आप गुप्त रूप से कुछ धोखा-फरेब करने के आदी हो जाएंगे। आप झूठ बोलने वाले, चरित्रहीन स्त्रियों से संबंध रखने वाले या शराब आदि का सेवन कर, अशुभ फल के भागी बनेंगे। जुबान का चस्का भी आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आंखों की नजर संबंधी दोष हो सकता है। एक से अधिक विवाह की आशंका है। आप कभी-कभी बहुत ज्यादा गुस्सा कर बैठते हैं जो बड़ा नुकसानदेह है। आप अपनी पत्नी के गुलाम होंगे। हर वक्त आप चालाकी करते रहेंगे। संतान सुख में विघ्न या संतान देरी से होगी। आप पर कत्ल या दीवानी का मुकद्दमा चल सकता है। पुलिस/कोर्ट में जुर्माना या दण्ड का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूसरों के माल पर नजर न रखें।

उपाय :

1. तांबे के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. तख्त पोश पर शयन करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता के सहयोग के भी आगे बढ़तें रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता-पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरो पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात्

आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :

1. गुरु-पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि सेवर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नही होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेयह वर्ष सामान्यरहेगा।एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान केशनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक ब्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भुमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धने खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहींरहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा।तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान मेंगुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।आपको मित्रोंका भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है।यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा हैयह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा।द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होनाशुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों कीअध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावनासफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथलम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल

रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी

मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्धारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप

नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठ में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करेंएवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल

रहेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय

आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज

में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य

सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्य मान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके

विशेष अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा ।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधिओं को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता हैं। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राए होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नही तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का

स्वास्थ्य अच्छा नही रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि इस वर्ष भाग्य आपका साथ नहीं देगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

वर्ष के उतरार्द्ध में कुछ गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 15 अक्टूबर के बाद आपका ग्रह गोचर अनुकूल हो रहा है। आपके काम करने का तरीका सबसे अलग है इसलिए यह आपके व्यक्तित्व को सबसे जुदा करता है और आपके इस तरीके से कई अधिकारी प्रभावित है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

जून के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आप अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। जून से सितम्बर तक का समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। सितम्बर के बाद घरेलू वातावरण में अनुकूलता आना शुरु हो जाएगी।

15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य में

उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से रहना चाहिए अन्यथा गर्भपात भी हो सकता है।

18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। जून के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। आप स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ नहीं है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 18 फरवरी के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आएगी। अध्ययन कार्य में आपकी रूचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 15 अक्टूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के शुरु में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। 15 अक्टूबर के बाद विदेश जाने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होगा। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करे।
- हनुमान चालीसा या दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वितीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं तृतीय में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशिएवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तसस्थ राहु एवं द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता हैपरन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त से आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों कापदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेवर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर ही उसमें निवेश करें क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होती। 5 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन किया हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर भी अधिक खर्च करेंगे।

23 अक्तूबर से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा।

31 मई से समय आपके छोटे भाई-बहनों के लिए काफी शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग मिलेगा। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। गुरु की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। पिताजी के लिए यह समय लाभप्रद सिद्ध होगा। संतान के विवाह आदि का भी शुभ योग बना हुआ है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों कीशिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

आपकी सन्तान के विवाह का पूर्ण योग बन रहा है। भाग्योदय तथा धर्म कार्यों में रुचि के साथ-साथ यात्राओं का योग बना हुआ है। आप अपनी सन्तान के सौभाग्य व सुख से प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं क्योंकि लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगी जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा।शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

12 अगस्त से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अतिसक्रिय बने रहेंगे। सुबह-शाम के सैर-सपाटे या नियमित अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके अन्दर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरें कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मई के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

सप्तमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी यात्राएं होती रहेंगी। 05 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

31 मई के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों कीउन्नति कारक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थगुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 5 मार्च के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। 31 अगस्त के बाद आप दान, पुण्य करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष श्रेष्ठमत रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली कहावत आप पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी। साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए 18 मार्च से पहले का समय बहुत ही शुभ है।

आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय, या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष भर आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी बनाएंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्नाभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंग। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। 5 मार्च से आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। अविवाहित व्यक्तियों के लिए विवाह के संकेत हैं। विवाहित व्यक्तियों हेतु संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा।

आपके भाई-बहनो के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आपको उनके ऊपर अभिमान होगा। उनकी कामयाबी से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके अन्दर दृढता और सशक्त इच्छाशक्ति जाग्रत होगी। आपको किसी बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम/योगा आदि भी करते रहें जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थी व प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए कोई नया स्रोतों का सृजन करेंगे।

प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले जातकों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है।

द्वादश स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक रूप से अत्यधिक उन्नतिकारक रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति करेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। मार्च के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

वर्ष के उतरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह के प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण आय के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहें। पैसे के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। संचित धन में कमी आ सकती है। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। नहीं तो धन हानि का योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से श्रेष्ठ रहेगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। माता पिता के साथ आपके संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही अच्छी है। धर्म पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा व उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी।

13 जुलाई से द्वितीय स्थान के शनि आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह

सकते हैं। अष्टम स्थान का राहु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचमस्थ राहु के कारण आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु मार्च के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। तेल, मसाला व बाहरी भोजन का परित्याग करें। संतुलित आहार के साथ साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। छठे स्थान का राहु एवं एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रतिकूल होने कारण सफलता के मार्ग प्रभावित होंगे। विद्यार्थिओं की शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर के पास भी हो सकता है। आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

इस यात्रा के अंतराल में पुत्र या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः यात्रा करते समय सावधानी बहुत जरूरी है। द्वादश स्थान का गुरु आपको विदेश यात्रा भी करा सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंग जैसे- गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें जिससे राहु का नकारात्मक प्रभाव समाप्त होगा।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि चतुर्थ भाव में और सिंह राशि का राहु पंचम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल व्यवसायियों के लिए मिला-जुला रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वास पात्र लोगों के साथ कार्य करना लाभप्रद रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 5 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके कार्यों में कुछ सुधार होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। यह सदा सत्य है कि रात के बाद दिन जरूर होता है, इसलिए अपने प्रयासों को जारी रखें, सफलता जरूर मिलेगी। कोई कार्य प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रहा है।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात की जाए तो इसमें कुछ उतार-चढ़ाव रहने की स्थिति बनी रहेगी। चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। आप अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हैं। स्वभाव में परिवर्तन करें, यह आपके पारिवारिक जीवन के

लिए अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। माता पिता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। इस समय थोड़ा सावधान रहें और वाद-विवाद में न फंसे। बच्चों के साथ भी कुछ अनबन होने की संभावना है और उनके स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी हो सकती है, अतः उनका ख्याल रखें। आपको जीवनसाथी का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिससे आपकी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

पंचम स्थान का राहु संतान को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं दे सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत हैं नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक प्रतिकूल रहने वाला है। द्वादश स्थान का गुरु पेट व मोटापे से संबंधित परेशानी दे सकता है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण भी परेशनी हो सकती है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

5 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित बनाएं। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अपने जीवन में उन्नति करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। पंचम स्थान का राहु विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरूचि उत्पन्न करा सकता है। अतः इस समय के अन्तराल में पढ़ाई में मन को एकाग्र करना भी बहुत जरूरी है। नहीं तो आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

गुरु का गोचर व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। उस समय के दौरान व्यवसायियों को अच्छा लाभ मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से समय अनुकूल है वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है। 6 अप्रैल से आप लम्बी यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

नौकरी करने वालों व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि कम ही रहेगी। यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो उसको भी योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा कार्य में असफलता या यात्रा में व्यवधान आने की आशंका है। 6 अप्रैल से आपका दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। यज्ञ, अनष्ठान, पूजा-पाठ इत्यादि के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे। अपने माता पिता की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म समझेंगे।

- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान (तुला दान) करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। लग्न का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापर को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें कम समय में अच्छा लाभ होगा। 13 अपैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु 27 अगस्त के बाद आप उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से सोना, चांदी, रत्न व ज्वैलरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागमन तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। 13 अप्रैल से समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई क्रय-विक्रय न करें। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। भूमि व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें और जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। किसी से उधार पैसा न लें। यह आपके लिए घाटे का सौदा हो सकता है।

अगस्त के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं, तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। 13 अप्रैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति पारिवारिक माहौल को और भी ज्यादा प्रभावित कर रही है। आपके

माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

27 अगस्त के बाद नैसर्गिक रूप से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में नये सदस्य की बढ़ोत्तरी होगी। मातुल व ससुरल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

पंचम स्थान का राहु अचानक आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। नव विवाहित व्यक्तियों संतान प्राप्ति के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 13 अप्रैल के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है, तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

15 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। उस समय सिर दर्द, गैस, व पेट से संबंधित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु अगस्त के बाद आपका समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। शनि एवं गुरु का गोचर अच्छा होने के कारण आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। परन्तु आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण आप मानसिक परेशान रह सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अगस्त के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी

मिल सकती है परन्तु परिश्रम के बाद इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र व सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होगी।

अप्रैल से अगस्त तक वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। 27 अगस्त के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपका पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा।

- अगस्त के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तिर्थ यात्रा कर व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले में धारण करें ।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप व्यापारी हैं तो इस साल आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। धन व प्रतिष्ठा दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। अहंकार का त्याग करें और क्रोध पर काबू रखें। 26 अप्रैल के बाद का समय उन लोगों के लिए अच्छा है जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कारोबार कर रहे हैं। साझेदारी व मित्रता में भी आप कोई कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

नौकरी वालों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। आपका अपने बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है या अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। जो आपके हित में नहीं होगा। चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ लोग आपके खिलाफ साजिस भी कर सकते हैं। परन्तु 16 सितम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद सफलता और समृद्धि आपके साथ रहेगी। 19 अक्टूबर के बाद बिना रुकावट उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा पैसा बचाना आपके लिए फायदेमंद होगा। 16 सितम्बर के बाद से आपको लाभ होने लगेगा और जमापूंजी में भी वृद्धि देखने को मिलेगी।

19 अक्टूबर के बाद फिर से विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

घर-परिवार, समाज

26 अप्रैल तक पारिवारिक वातावरण बहुत ही उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के

प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। चतुर्थ स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। मेष लग्न के जातक जल्द ही नाराज हो जाते हैं और बाद में अफसोस भी जाहिर नहीं करते हैं। जीवनसाथी के साथ बेहतर रिश्ते निभाने के लिए आपको अपने स्तर पर प्रयासरत रहना होगा।

माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है, जो आपकी अंतःक्लेश का कारण होगा। इसलिए अंतःक्लेश को अपने ऊपर हावी न होने दें। संतान का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिससे आपको परेशानी हो सकती है, अतः संतान के स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखें। 19 अक्टूबर के बाद आपकी समाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

26 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। उसके साथ संबंधो में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। आप बच्चों की सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। 26 अप्रैल के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी। लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं। जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

वजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ राहु के कारण आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 16 सितम्बर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा, जिससे आपकी आरोग्यता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। 26 अप्रैल के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 19 अक्टूबर के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा होगी और आय में वृद्धि होगी। वरिष्ठ आधिकारी आपकी हर सम्भव मदद करेंगे। आपके प्रदर्शन से आगे कॅरियर में काफी लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 29 अप्रैल के बाद से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

16 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनिय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ शनि के कारण आपके सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 26 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान करें एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। सितम्बर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं चतुर्थ में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 11 मई को पुनः कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष व्यवसायियों के लिए अनुकूल रहेगा। अपने मन को शांत और एकाग्र करके व्यवसाय को बढ़ाने या फिर नए व्यवसाय को शुरू करने के बारे में सोचने की जरुरत है। आपका कुछ समय बर्बाद हो सकता है। परन्तु आप परेशान न हों और अपनी कोशिश को जारी रखें तो सफलता मिलना तय है। सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको व्यवसाय से लगातार आमदनी होती रहेगी। आपके सभी कार्य शीघ्र ही पूरे होंगे। वित्तीय कार्यों से जुड़े लोगों को धन-हानि हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वालों के लिए बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

22 अक्टूबर के बाद आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ, सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखिम उठाने से परहेज करें। यह हम सभी जानते हैं कि धन की प्राप्ति कठिन परिश्रम और काम के प्रति ईमानदारी से ही होती है। इसलिए धन से सम्बन्धित कोई भी फैसला सोच समझ कर ही लें और कोई भी जोखिम ना उठाएं। अगर आप शेयर बाजार से जुड़े हुए हैं तो उससे थोड़ी दूरी बना लें और कहीं भी निवेश करने से पहले सौ बार सोचें। थोड़े समय बाद आपको खुद ज्ञात होगा कि यह साल अनावश्यक रूप से पैसे खर्च करने के लिए बिल्कुल नहीं था। 11 मई के बाद समय अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है।

7 अक्टूबर के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोत खुलेंगे, जिससे आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे जिसमें आप अच्छा खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहने वाला है। कभी-कभी आप ज्यादा क्रोधित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें। 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भुमिका होगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु बड़े भाई एवं संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकते हैं।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उस समय आपके बच्चों की आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। बजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। मई के बाद आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

अक्टूबर के बाद समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे एवं

सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होने से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। विदेश में आपको सफलता मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद मुख्यतः सारे ग्रह अनुकूल हो रहे हैं। उस समय आप समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ से ही छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। मई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

अक्टूबर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। मई के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को दान देना, भिक्षुओं को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आप धर्म समझेंगे। कर्म ही पूजा है इस सिद्धांत के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा और आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

मुख्यतः सारे ग्रहों को गोचर अनुकूल होने के कारण वर्ष का प्रारम्भ काफी श्रेष्ठ रहेगा। कार्य व्यवसाय में वांछित उन्नति करेंगे। आपके सारे प्रतिद्वन्दी शान्त होंगे। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। परन्तु मार्च के बाद आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं।

पारिवारिक समस्याओं के कारण कार्य व्यवसाय प्रभावित होगा। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय ज्यादा प्रतिकूल रहेगा। राजनीति व शेयर बाजार से जुड़े लोगों को भी अचानक हानि हो सकती है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है तथा साझेदार से भी अनबन हो सकती है। हालांकि 13 जुलाई के बाद आप सभी समस्याओं का निदान निकाल लेंगे और फिर से अपने उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे। उस समय के अंतराल में कुछ अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में पंचमस्थ गुरु आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ हैं। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्ति इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। छठे स्थान के शनि शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकते हैं। परन्तु मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। अतः लेन-देन करते समय सावधान रहें।

13 जुलाई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस अवधि में आप उन्नति करेंगे, परन्तु आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपत्ति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर, लॉटरी व सट्टे से दूर ही रहें क्योंकि गुरु, राहु एवं शनि से प्रभावित होकर छठे स्थान में पीड़ित है। जो आपके लिए हितकर नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक सुख-समृद्धि के प्रबल योग बने हुए हैं। पत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे तथा उनके स्वास्थ्य में लाभ होगा। संतान के लिए भी यह समय काफी शुभ है। 7 अप्रैल को द्वितीय स्थान में राहु का गोचर अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अतः आपको परिवार से जुड़ी छोटी छोटी बातो को भी गंभीरता से लेना होगा तथा परिवार में सभी लोगों के साथ भावनात्मक लगाव बनाए रखें।

पंचम स्थान के शनि आपकी संतान के लिए शुभ नहीं हैं तथा परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित कर सकता है। परन्तु 13 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय घर परिवार में कोई शुभ कार्य होंगे, जिसके प्रभाव से आपके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा। सामाजिक रूप से यह साल अच्छा रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 5 अप्रैल से समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

13 जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि के कारण आप किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे तथा शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आप खूब परिश्रम भी करेंगे। आपकी कार्य क्षमताएं निश्चित रूप से बढ़ेंगी। 5 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। स्वास्थ्य में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। मौसम जनित बीमारियों से भी आप प्रभावित रहेंगे।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि 13 जुलाई के बाद समय में फिर से सुधार आएगा। रोगों से शीघ्र मुक्ति मिलेगी। हाथ पैर के दर्द में सुधार होगा और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। रोजगार के नये

अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

13 अप्रैल के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से उन्नति के मार्ग प्रभावित होंगे। जुलाई के बाद आपका नई नई तकनीकि विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिकयात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। दान-पुण्य में भी आप तत्पर्य रहेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। मार्च के बाद आलस्य बढ़ेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आप गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित करें एवं उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- श्रीखण्ड चन्दन में केसर मिलाकर वीरवार के दिन तिलक करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक दायरा बढ़ाना चाहते हैं तो मार्च के बाद ही इसके बारे में सोचें क्योंकि मार्च से पहले समय अच्छा नहीं रहेगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी वालों के लिए समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

6 अप्रैल से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपके उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा। व्यापार में उम्मीद से अधिक उन्नति मिलेगी। जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। वर्षान्त आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु संचित धन में कमी कर सकता है। निवेश व लेन-देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यापार में अनुकूलता आएगी। शेयर, सट्टा व जुआ से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। सम्पत्ति क्रय करने का सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन, वसीयत व अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होगी।

जून के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। चोरी, बीमारी व दुर्घटना इत्योदि में आपका धन व्यय होने की संभावना बन रही है। यदि धन सम्पत्ति से संबंधित कोई मामला कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें अनुकूलता प्राप्त होगा। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। किसी से ब्याज पर व उधार पैसे लेने की संभावना बन रही है। इस समयांतराल में आपको अपनी धैर्य शक्ति बढ़ानी होगी क्योंकि नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है तथा उसके बाद आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिन्तित रहेंगे। द्वितीयस्थ राहु के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसे में आपको अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना चाहिए। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अप्रैल से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व संपन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। जून के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है।

आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे, जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। आपको भी उन पर गर्व होगा। परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं है अतः उनके रहन सहन पर ध्यान दें। दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। हालांकि 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि शारीरिक आरोग्यता के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, परिणामस्वरूप आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। 11 दिसम्बर के बाद लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को अचानक प्रभावित कर सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। यदि आप विदेश में उन्नति करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। प्रतियोगिता परिक्षार्थियों को वांछित क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक यात्राओं का आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। सांस्कृतिक उत्सव में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। 28 जून से आप दान पुण्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान आदि में ज्यादा रुचि लेंगे। धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि।

- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दूर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डू का भोग लगाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवन का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष कवच धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए शुभ रहेगा। व्यापार में वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। नौकरी में पदोन्नति व नई नौकरी मिलने की प्रबल संभावना बन रही है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे, परन्तु जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

व्यापारिक वर्गों से आपको ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व विवादों से दूर रहें। 25 सितम्बर के बाद कुछ नये निवेशक मिलेंगे। आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे जिसके कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। नई संपत्ति क्रय करने का योग बन रहा है तथा अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपको बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लेना होगा। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य पर भी कुछ पैसे खर्च करा सकता है। आपको सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा।

वर्ष उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ में वृद्धि होगी। बैंक से लोन इत्यादि आसानी से प्राप्त सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ होगा। छठे स्थान का शनि आपको शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकता है। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। सितम्बर के बाद आपको अचल संपति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपको भाईयों एवं मातुल पक्ष का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय अच्छा नहीं है। अतः इस अवधि में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना आपके लिए हितकारी रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद में न पड़ें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

उत्तरार्द्ध में समय पुनः अनुकूल हो रहा है। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी तथा आपके सारे विरोधी शान्त होंगे। परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर रहेंगे तथा समय आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। परिवार के सदस्य आपकी बुद्धिमता की तारीफ करेंगे। जन्दिगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। पूरे वर्ष कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। संक्रमण संबंधित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। जाँघ, जननांग या लीवर संबंधिक बीमारियां भी हो सकती हैं। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय और भी ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में आप अचानक बीमार हो सकते हैं तथा आप शारीरिक ऊर्जा में कमी का अनुभव करेंगे।

जुलाई के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,

जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्षान्त सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 6 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है। नवम स्थान पर राहु की दृष्टि लम्बी यात्राओं का प्रबल योग बना रही है। राहु के कारण अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में मित्रता व किसी पर विश्वास करना आपके लिए हानिकारक हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित रहेगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में मानसिक शान्ति बनी रहेगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वो को खुशी के साथ मनाएंगे। साधु महात्माओं का प्रवच सुनना, सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके अंदर गरीबों व दुखियों की निःस्वार्थ सहायता का भाव उत्पन्न होगा।

- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाकर श्रीसूक्त या कनकधारा स्तोत्र का पाठ नियमित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- सात एवं आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

दशमेश शनि के सप्तम भाव में उच्च राशि में होने कारण बड़े कार्यों के प्रस्ताव मिलेंगे व आप उन कार्यों को करने में सफल भी होंगे। व्यापार के बड़े निर्णय सावधानी से लें तथा विकास की योजनाओं को पूरी जांच परख करके अंजाम दें। किसी भी कानूनी झंझट में पड ने से बचें।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय साझे में काम करने वालों के लिए शुभ रहेगा। दूसरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रह सकते हैं। किसी की झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। किसी कार्य में अधिक आत्मविश्वास दिखाना नुकसान दे सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। इन सबके बावजूद अपने रुचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कुछ ऐसे कार्यों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। निरर्थक ही पैसे बर्बाद कर सकते हैं। इस वर्ष कुछ ऐसे खर्च भी आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों जैसे सट्टेबाजी, जुआ आदि से बचें, क्योंकि इनसे आपको कोई बड़ा घाटा हो सकता है।

जून से अगस्त के अंतराल में कुछ व्यापारिक सौदों के माध्यम से आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ हो सकता है। भौतिक सुख सुविधा पर आपका पैसा अधिक खर्च होगा। निवेश के लिए यह समय अनुकूल नहीं है क्योंकि द्वादश स्थान का राहु हानि करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार आपके प्रति वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है।

ईष्ट मित्र के साथ सम्बन्धों में मधुरता कम हो सकती है। आप अपने घर परिवार के सदस्यों के हित के बारे में सोचेंगे। परिवार के सदस्यों के ऊपर धन व्यय करेंगे। इन सबके बावजूद भी बीच-बीच में परिवार के कुछ सदस्यों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार पर अधिक निर्भरता उचित नहीं होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। जून से अगस्त तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय अधिक कष्टकारक हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु के जलीय राशि में होने के कारण कफ या उदर संबंधित बीमारी से परेशानी हो सकती है। जून से अगस्त तक का समय किंचित अनुकूल रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी। अगस्त के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है।

आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें अन्यथा आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम नहीं है। पढ़ाई-लिखाई व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

जून से अगस्त तक का समय अच्छा रहेगा। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। मई के बाद व्यवसाय से संबंधित यात्राएं अधिक होगी। ये यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी।

अगस्त के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है क्योंकि वर्षान्त में राहु ग्रह का गोचर दुर्घटना के योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। जून के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जैसे- हवन, माता की चौकी इत्यादि। वर्षान्त में तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वंदियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आपके सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। ब्याज पर पैसे देने के लिए समय उचित नहीं है लेकिन 11 सितम्बर के बाद आपका समय अच्छा होगा तथा आपका भाग्योदय होगा। आपको वांछित उन्नति मिलेगी। नौकरीपेसा जातकों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं या प्रतिकूल स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से भुमि, भवन व वाहन के साथ-साथ रत्नाभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे।

द्वादश स्थान का राहु कुछ अनावश्यक खर्चे करा सकता है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है इस पूरे वर्ष को आप आनन्द के साथ बिताएंगे। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके पक्ष में होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपके माता जी के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। बात बात पर क्रोधित न हों क्योंकि यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है । आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। जुलाई से सितम्बर तक का समय प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें तथा उन्नति में व्यवधान आ सकता है। लेकिन चिंता न करें क्योंकि सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा तथा उस समय आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। परन्तु 30 जुलाई के बाद अचानक आपकी सेहत बिगड़ सकती है। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें।

11 सितम्बर को गुरु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य को सुधारने वाला है तथा उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा।

मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। ऐसी स्थिति में अपने कार्यों में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें और उसे अविलंब पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि वर्षान्त में सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधनी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि होगी। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। गुरुवाणी व गुरुजी पर आपका अटूट विश्वास होगा।

- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन नीली वस्तु का दान करें एवं निम्नलिखित राहु मन्त्र का जाप करें-

  ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। अच्छे व्यवसाय हेतु अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। 16 फरवरी से नौकरी वाले व्यक्तियों के लिए समय शुभ हो रहा है। उस समय आपकी पदोन्नति होगी। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा की जाएगी तथा आपको बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी मेहनत करने वाला रहेगा क्योंकि शनि के आठवें भाव पर गोचरीय प्रभाव से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। व्यावसायिक कार्यों के चलते आपको निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। व्यापार वृद्धि के लिए नयी सोच व नयी योजनाओं पर विचार करें। बड़े कार्य में सोच समझ कर ही निवेश करें। लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय से जो भी कार्य करेंगे उनमें आप सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। प्रॉपर्टी के काम से जुड़े हुए लोगों को लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी नियमित आय बरकरार रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही लाभ मिलने या अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद है। आपमें साहस की कमी नहीं रहेगी। आप आमदनी के नए मार्ग खोजेंगे। 16 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले जातकों के वेतन में वृद्धि हो सकती है एवं प्रोत्साहन राशि भी प्राप्त हो सकती है। रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर खूब खर्च करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह आदि मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा।

धन प्राप्ति के अच्छे योग हैं। लेकिन जोखिम भरे कार्यों में धन का निवेश करने से बचें। किसी को पैसे उधार देने से भी बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए यह समय अच्छा नहीं है। क्योंकि अष्टम स्थान का शनि निवेश के लिए अच्छा नहीं होता। सट्टेबाजी अथवा जाखिम भरे कार्यों में धन न लगाएं, घाटा हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो 16 फरवरी के बाद से समय अनुकूल रहने

वाला है। परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य में सहयोग मिलेगा। घर के लिए कुछ आवश्यक सामान की खरीदारी में पैसे खर्च होंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण होंगे। अतिथियों के सत्कार में धन खर्च हो सकता है। घर में मांगलिक या धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हो सकता है। धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु परिवार एवं मित्रों के साथ आप कोई यात्रा भी कर सकते हैं।

परिवार में भाई-बहन और मित्रों के साथ आपके संबंध पहले से अधिक बेहतर होंगे। इस अवधि में आप अपने परिवार और मित्रों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण का आनंद उठाएंगे। माता-पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है, परन्तु अष्टम स्थान का शनि ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध बिगाड़ सकता है। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का मंगल आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं, परंतु 12 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है उस समय आपके बच्चे सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप अचानक बीमार हो सकते हैं। अष्टम स्थान का शनि मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। आलस्य व मानसिक तनाव से आप ग्रस्त हो सकते हैं। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर ध्यान दें, क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियो के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु एवं मंगल ग्रह के प्रभाव से पढ़ाई-लिखाई मे कमी व प्रतियोगिता परीक्षाओं में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। नौकरी करने वालों के

लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। जलीय स्थलों की यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफि शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष अपनी जन्मस्थली की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्राओं के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। आप किसी सिद्ध पुरूष को अपना गुरु बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में तन्त्र मन्त्र व काले जादू के प्रति आप आकर्षित होंगे। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आप तांत्रिक सिद्धि व शाबर सिद्ध प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्षारम्भ विशेष उत्तम रहने वाला है। काम धंधे में बढ ोत्तरी होने से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे। दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पदोन्नति का योग बन रहा है। साथ ही एकादश भाव में राहु के गोचरीय प्रभाव से आप अपने प्रतिद्वंदियों से आगे निकलने में सक्षम होंगे व शत्रु पक्ष को भी पूर्णतया नियंत्रित कर सकेंगे। आपके आत्मविश्वास व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी तथा उच्चाधिकारियों से लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल के द्वारा आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। आर्थिक समृद्धि, मांगलिक कार्य एवं व्यवसाय में सफलता का प्रबल योग बन रहा है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आपकी आमदनी में निरंतरता बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी। आप कोई सम्पति खरीद सकते हैं या कहीं पूंजी निवेश कर सकते हैं। यह समय आपके आर्थिक मामलों के लिए अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वि तीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ-साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अचल संपत्ति का विस्तार करने में सफल रहेंगे। नई साझेदारी योजनाएं शुरू करेंगे और नवीन प्रयोजनाओं को लागू करने के लिए समय की शुभता बनी हुई है। शेयर बाजार, सट्टा व अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं। उतार-चढ़ाव की स्थिति होने पर भी अच्छे लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी। परिजनों के साथ किसी दर्शनीय स्थल पर जाएंगे। भाई-बहनों, मित्रों तथा पड़ोसियों से सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। घर में खुशी का माहौल रहेगा। अपने परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों का आप आदर-सम्मान करेंगे। सामाजिक रूप से यह समय अनुकूल रहने वाला है। कुछ नए लोगों से आपका मेल-जोल बढ़ेगा।

15 जून के बाद आपका पारिवारिक माहौल कुछ प्रतिकूल हो रहा है। माता का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। आपकी धर्मपत्नी के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी तथा एक दूसरे प्रति भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आप मौज-मस्ती व मनोरंजक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। परिवार में कोई मांगलिक व धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन भी हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है, परन्तु 2 मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी तथा आपके बच्चे वांछित उन्नति करेंगे।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। आपको बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आपका यश बढ़ेगा तथा आप उन पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। आप शारीरिक श्रम की बजाय मानसिक श्रम अधिक करेंगे। हर बात पर क्रोध करने से आप अपने आस-पास के वातावरण को तनाव युक्त बना सकते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके ज्यादा तनाव न लें व क्रोध करने से बचें। अष्टम स्थान का शनि स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। खान-पान का ध्यान रखने की जरूरत है। मसाले युक्त भोजन करने से पेट के रोग हो सकते हैं। सुबह टहलना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। मौसम और बारिश से होने वाली बीमारियों से सतर्क रहें।

जो लोग मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित हैं, उन्हें अपना ख्याल रखने की जरूरत है क्योंकि राहु गुरु की युति आपके स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव डाल सकती है। अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें और व्यर्थ की बातों से स्वयं को दूर रखें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक शान्ति व शारीरिक आरोग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले छात्रों को सफलता प्राप्ति के लिए पहले से अधिक लगन और मेहनत से काम करना होगा तभी आपको सफलता मिलेगी। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्ष के प्रारम्भ में ही पदोन्नति की संभावना है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारंभ में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। गुरु ग्रह की चतुर्थ पर दृष्टि नौकरी वालों के लिए स्थानांतरण का योग बना रही है। स्थान परिवर्तन अनुकूल रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप ज्यादातर समय अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है, क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना व चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

2 मार्च के बाद आप पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान में अधिक रुचि लेंगे तथा आपका आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़ेगा। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप किसी को अपना गुरु बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। गुरु वाणी व गुरु जी पर आपका विश्वास बढ़ेगा।

- काली वस्तुओं का दान करें तथा शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- मजदूरों व भिखारियों को काले रंग का कम्बल दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(17/01/2026 - 26/08/2042)

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 17/01/2026 को आरंभ और 26/08/2042 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम् भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्त्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम् भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएंगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरवाद हो सकता है।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(17/01/2026 - 17/01/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 17/01/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका समाज में उच्च स्थान होगा और प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्धि मिलेगी। कई महिलाएं आपके अधीनस्थ कार्य कर सकती हैं या आप महिलाओं से संबंधित व्यवसाय जैसे सौंदर्य-प्रसाधन, बुटीक, आदि से संबद्ध हो सकते हैं। कोई दैवी शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं जिसका इस्तेमाल आप सावधानीपूर्वक करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(17/01/2026 - 26/12/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 26/12/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। व्यक्तित्व में निखार आएगा। धनागम और ज्ञानार्जन का योग है। उन्नति के शिखर पर पहुंचेंगे। वाहन, उत्तम बुद्धि, धन और प्रसिद्धि का संकेत है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप

करें। प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(26/12/2026 - 25/08/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 26/12/2026 से प्रारंभ होकर 25/08/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

नवम भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन अध्यात्म और ध्यान में लगेगा। समाज की भलाई के कार्य करेंगे, गुरु की सेवा करेंगे। मष्तिष्क में जिज्ञासाएं उभरेंगी, मन धर्म और आत्मा के उत्थान में लगा रहेगा। इससे आपके पिता और गुरु को भी लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा का यंत्र धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(25/08/2028 - 26/10/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 25/08/2028 को प्रारंभ होकर 26/10/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। मंगल ऊर्जा का कारक है। दशम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 1, 4, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्च पद प्राप्त करेंगे, सम्मान में वृद्धि होगी। प्रशंसा सुनकर खुश होंगे, प्रशासन में कठोर कदम उठायेंगे, जल्दबाजी में कार्य करेंगे।

वाहन सुख मिलेगा, धनागम अच्छा होगा। प्रतिष्ठित बनेंगे। चापलूसी सुनकर प्रसन्न होंगे।

ऊर्जा के सही दिशा में इस्तेमाल के लिए और अशुभत्व से बचाव हेतु प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(26/10/2029 - 25/10/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ होकर 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 26/10/2029 को प्रारंभ होकर 25/10/2032 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

विदेश से उत्तम धनार्जन हो सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रसिद्ध होंगे और लोकप्रियता प्राप्त करेंगे। कान की व्याधि से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(25/10/2032 - 26/06/2035)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2026 को आरंभ हुई थी और 26/08/2042 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/10/2032 को प्रारंभ होकर 26/06/2035 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 7, 9, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप आशावादी और दार्शनिक स्वभाव के रहेंगे। कंजूसी बढ़ सकती है; संतान और परिवारजनों से लगाव में कमी आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(26/06/2035 - 26/08/2038)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और वद 26/08/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 26/06/2035 को प्रारंभ होकर 26/08/2038 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में व्यापार आदि में व्यापार आदि में धन की हानि हो सकती है। शत्रुओं की संख्या बढ़ेगी, निराशावादी हो सकते हैं, चुपके-चुपके पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं। बुद्धि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए नौमुखी रुद्राक्ष चांदी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन शिवजी की प्रार्थना और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(26/08/2038 - 26/06/2041)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और वद 26/08/2042 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 26/08/2038 जो आपके लिए 26/06/2041 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे। नेकी और समाज की भलाई के काम करेंगे। व्यापार में सफल रहेंगे। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। सब परियोजनाओं में सफल रहेंगे। नेत्ररोग से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

महादशा :- सूर्य
(26/08/2042 - 25/08/2048)

सूर्य की महादशा 26/08/2042 को आरंभ और 25/08/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य दशम भाव में अवस्थित है। सूर्य शक्ति, प्रभुत्व, या, ख्याति, और राजकीय अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दशम भाव व्यवसाय, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, प्राप्ति और कार्य के स्वभाव का सूचक है। अतः इस दशा में आपको व्यवसाय में लाभ तथा प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा जीवन की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत शक्ति है और आप किसी भी बीमारी से जल्द ही छुटकारा प्राप्त कर लेंगे।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी। आप स्वभाव से उदार व दानी हैं, इसलिये यदि आप पर्याप्त धन चाहते हैं तो अपने व्यय पर नियंत्राण रखें। आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप पिता के कारोबार में शामिल हो सकते हैं और

नौकरी तथा वाणिज्य-व्यापार से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको सरकारी व्यवसाय से लाभ प्राप्त हो सकता है और कठिन परिश्रम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों या अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान होंगे। आपको शक्तिशाली व आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। इस दशा-काल में आपको नियत आमदनी के साथ-साथ एक सुरक्षित कार्य मिलेगा। आप सैन्य, राजनीतिक, प्रशसकीय, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। रत्न, पत्थर, संगमरमर, सोना, कोयला, अनाज आदि का व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोग इस दशा के दौरान बहुत अच्छा करेंगे और उनकी पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति और आमदनी में वृद्धि होगी। व्यवसायियों -व्यापारियों को यश और ख्याति तथा विरोधियों पर विजय की प्राप्ति होगी।

परिवार :

आप इस दशा में अपने बच्चों को प्यार देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे। आप अपने परिवार तथा जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखेंगे। आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी और आपका सामाजिक जीवन उत्तम होगा। अपना विचार दूसरों पर न थोंपे। आपके जीवन साथी की आमदनी अच्छी होगी और उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता को सुख प्राप्त होगा और साझेदारी में लाभ प्राप्त होंगे। आपके पिता भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों की अवांछित यात्राएँ और व्यय होंगे। उन्हें सुख-सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आप धार्मिक प्रवचन देंगे, या योग में आपकी रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(26/08/2042 - 14/12/2042)

आपके लिए सूर्य की महादशा 26/08/2042 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 14/12/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में सूर्य की शुभ स्थिति के कारण आप मान-सम्मान और उच्चपद को प्राप्त करेंगे। सरकार से लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। उच्चकोटि का व्यावसायिक जीवन रहेगा और सफलता कदम चूमेगी। राजनीति से संबद्ध जातकों को चुनाव में सफलता मिलेगी और जनमानस का स्नेह प्राप्त होगा। यह अवधि जायदाद क्रय करने के लिए शुभ है। विरासत में भी जायदाद मिल सकती है।

शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-सुविधाओं की वृद्धि होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता-पिता से भी धन मिलेगा। पिता का व्यवसाय प्रगति करेगा। माता की लोकप्रियता बढ़ेगी। भाई-बहनों के लिए समय प्रतिकूल हो सकता है। संतान के लिए समय भाग्यशाली रहेगा।

सभी मुकदमे और लंबित मामले आपके पक्ष में रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सिरदर्द, फुंसी आदि मामूली तकलीफें हो सकती हैं। घुटनों से संबंधित समस्या भी हो सकती है। इन सब से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप हितकर रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(14/12/2042 - 14/06/2043)

आपकी सूर्य की महादशा 26/08/2042 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 14/06/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका भाग्य चमकेगा। आप धनी और सुखी रहेंगे। पुश्तैनी जायदाद से लाभ होगा। माता-पिता से प्रसन्नता प्राप्त होगी। विद्या, लेखन, प्रकाशन और शोध से प्रसिद्धि मिल सकती है। लंबी यात्राओं से लाभ प्राप्त हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में आपकी रुचि रहेगी।

भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। वरिष्ठ व्यक्तियों से लाभप्रद संबंध बन सकते हैं। संतान भाग्यशाली रहेगी। संतान का जन्म भी संभव है। आपके पिता के अधिकार और शक्ति बढ़ेंगे। बड़े भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। विद्यार्थीगणों के ज्ञान का दायरा बढ़ेगा।

इस अंतर्दशा में सफलता, आय, प्रभाव, शुभ उत्सव, मान, सम्मान, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य आदि में प्रगति होगी। शुभत्ववर्धन हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(14/06/2043 - 20/10/2043)

आपकी सूर्य की महादशा 26/08/2042 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 20/10/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। आप स्फूर्ति और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे और प्रत्येक कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करेंगे। मकान का निर्माण कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी या साझेदार को पक्की नौकरी मिल सकती है या वे कोई वाहन खरीद सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदाताओं के लिए समय बहुत व्यस्त और शुभ रहेगा। सेवारत जातक भाग्यशाली रहेंगे। विरोधी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपके पुत्र-पुत्रियों को स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिलेगी। उनको स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त होगा। माता को विरोधी परेशान कर सकते हैं। उन्हें उष्मा से संबंधित व्याधियों से सावधान रहना चाहिए। छोटे भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है। बड़े भाई-बहनों का खर्च बढ़ेगा। व्यर्थ की कष्टप्रद यात्राएं हो सकती हैं। मामापक्ष के लोग सट्टेबाजी और मनोरंजन में समय व्यतीत कर सकते हैं।

आपको मामूली स्वास्थ्य समस्याएं जैसे गठिया, ज्वर और रक्त की खराबी आदि कष्ट दे सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ लाभकारी रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(20/10/2043 - 13/09/2044)

आपके लिए सूर्य की महादशा 26/08/2042 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 20/10/2043 को प्रारंभ होकर 13/09/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको आकांक्षाओं की पूर्ति में विभिन्न व्यक्तियों से सहायता प्राप्त होगी। विदेश के संपर्को से लाभ होगा। आपको धन, सुख-सुविधाएं और आराम नसीब होंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चाधिकारियों से सम्मान मिलेगा।

जीवनसाथी को धन मिलेगा। आपके पिता को सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मठता से प्रयास करने होंगे। माता को स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना चाहिए। भाई-बहन सौभाग्यशाली रहेंगे। उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त होगी। उनका विवाह हो सकता है। आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। संपर्क बढ़ाने के लिए समय उनके लिए उत्तम है।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे, सब कुछ ठीक ढंग से चलेगा। परामर्शदाताओं के जमा धन में वृद्धि होगी। व्यापारियों की व्यस्तता बढ़ेगी।

शरीर के निचले भागों और बायें कान की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए

नीले वस्त्र और सतनजे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(13/09/2044 - 02/07/2045)

आपके लिए सूर्य की महादशा 26/08/2042 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 13/09/2044 को प्रारंभ होकर 02/07/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ौसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्चे बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(02/07/2045 - 14/06/2046)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 02/07/2045 को प्रारंभ होगी और 14/06/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी परामनोविज्ञान और प्राच्यविद्या में रुचि होगी। खर्चे बढ़ेंगे। तबादला या परिवर्तन हो सकता है। अच्छे दिन आएंगे, मगर देर से। परिवार के बारे में कठोर निर्णय करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, नया व्यापार होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मातहत सहयोग करेंगे। प्रसिद्धि, धन लाभ, यात्रा, सफलता,दार्शनिक दृष्टिकोण के संकेत हैं।

आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य की मामूली तकलीफ हो सकती है। पिता को जायदाद मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, सांसारिक मामलों में सफलता मिलेगी। भाई-बहनों को

लाभ, समृद्धि और कार्य में उन्नति मिलेंगे। संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी मगर उच्चाधिकारियों के साथ संघर्ष करना पड़ेगा। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। गठिया, नेत्ररोग, थकान आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें और उनकी आराधना करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ – 2026

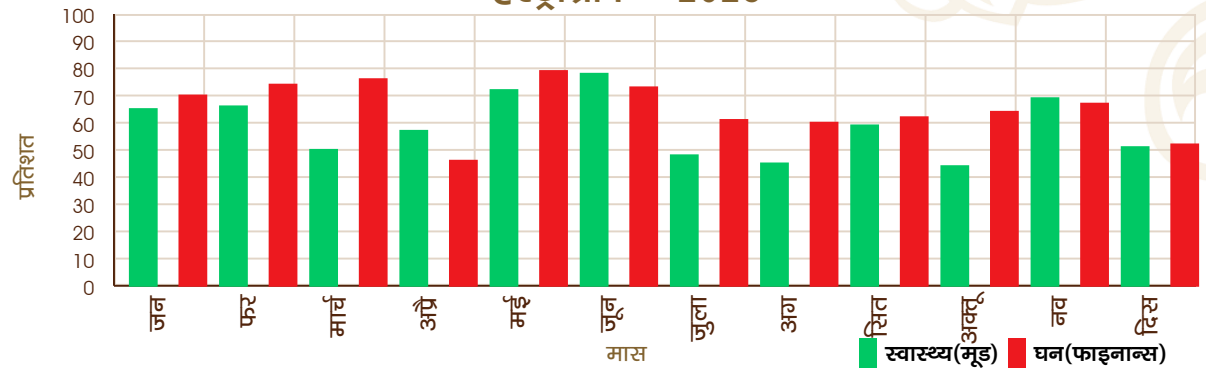

एस्ट्रोग्राफ – 2027

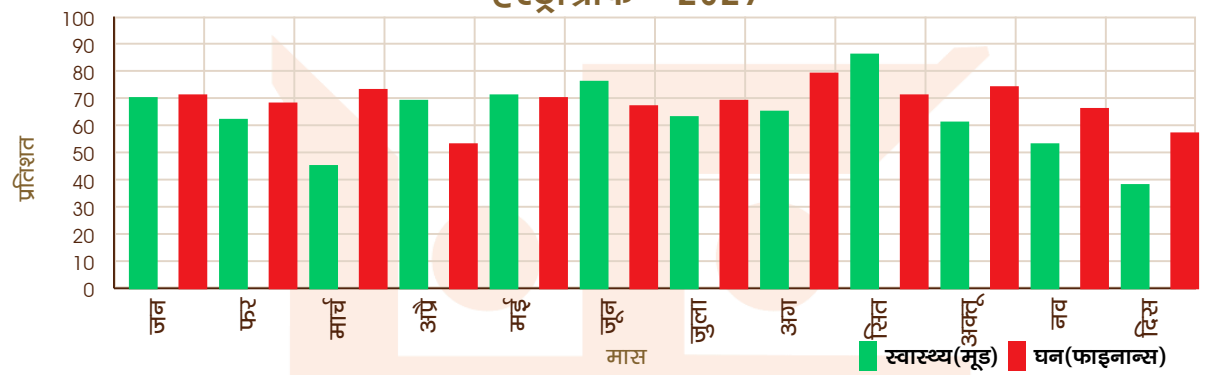

एस्ट्रोग्राफ – 2028

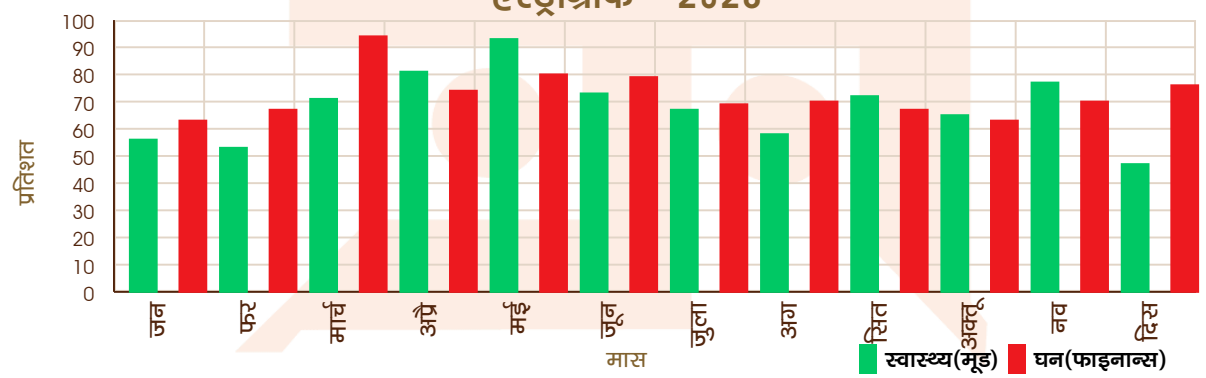

एस्ट्रोग्राफ – 2029

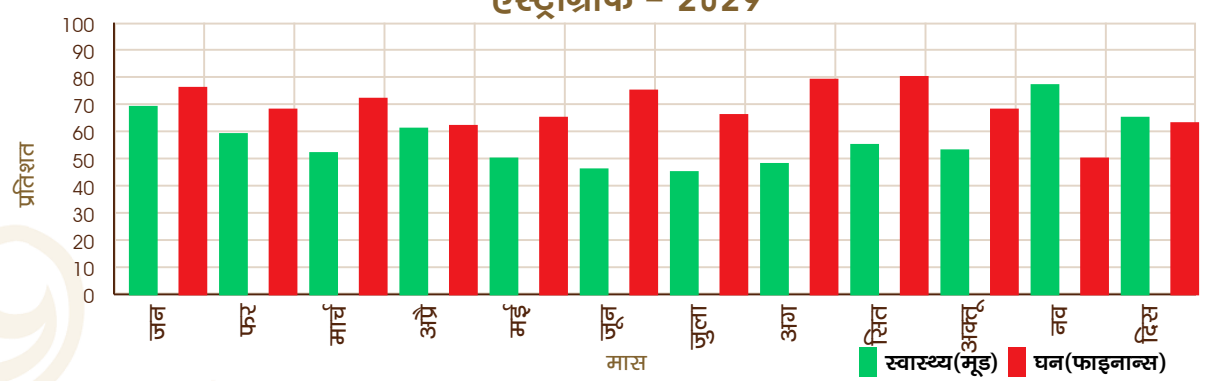

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

एस्ट्रोग्राफ - 2030

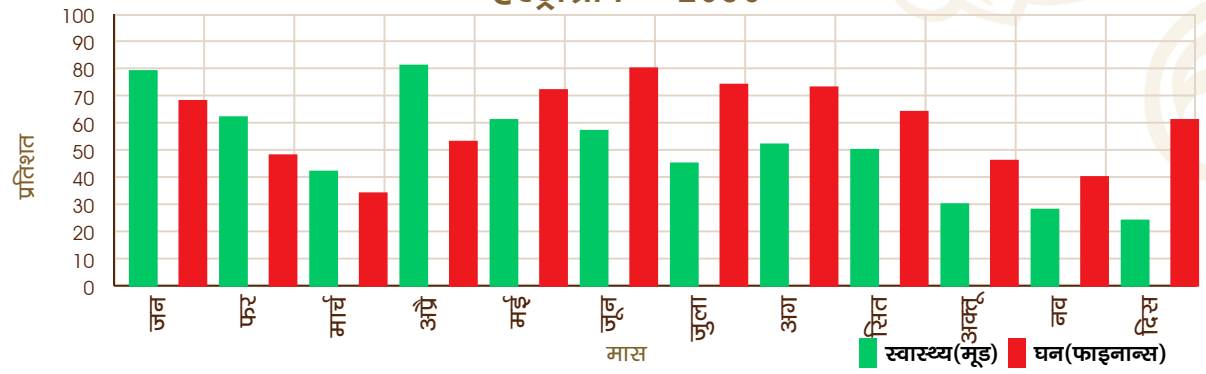

एस्ट्रोग्राफ - 2031

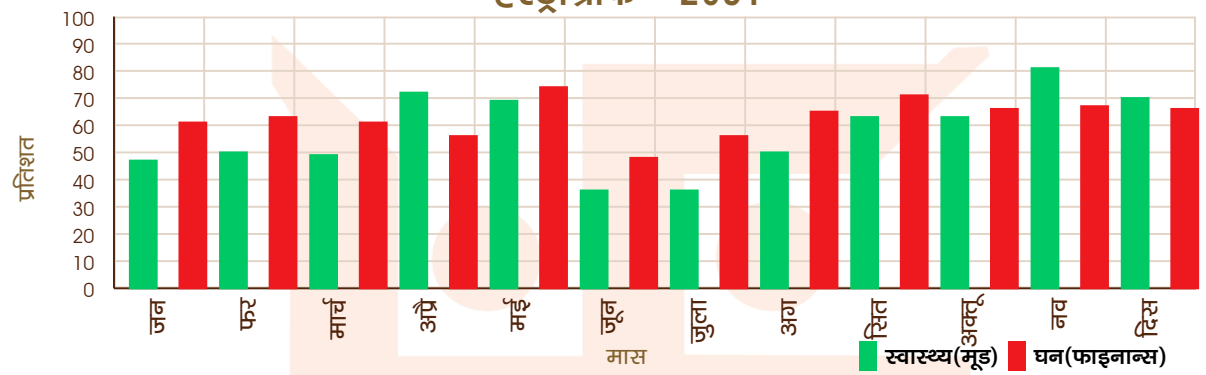

एस्ट्रोग्राफ - 2032

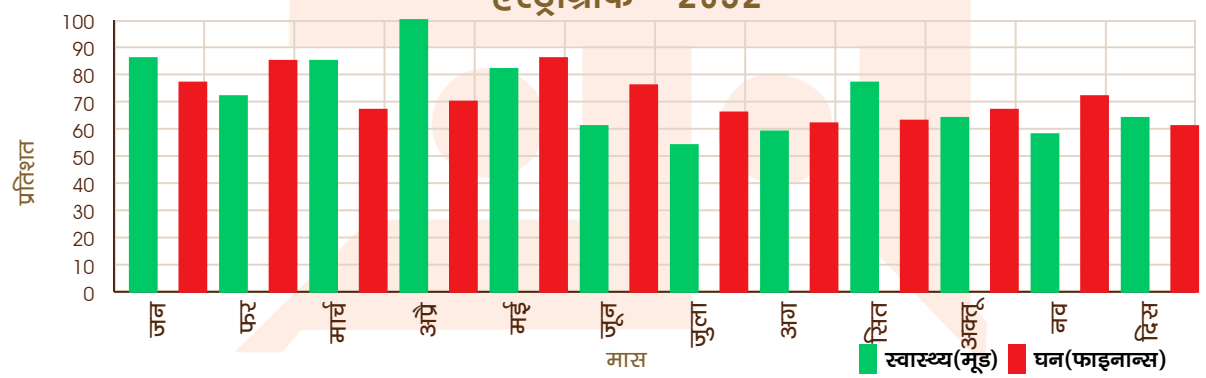

एस्ट्रोग्राफ - 2033

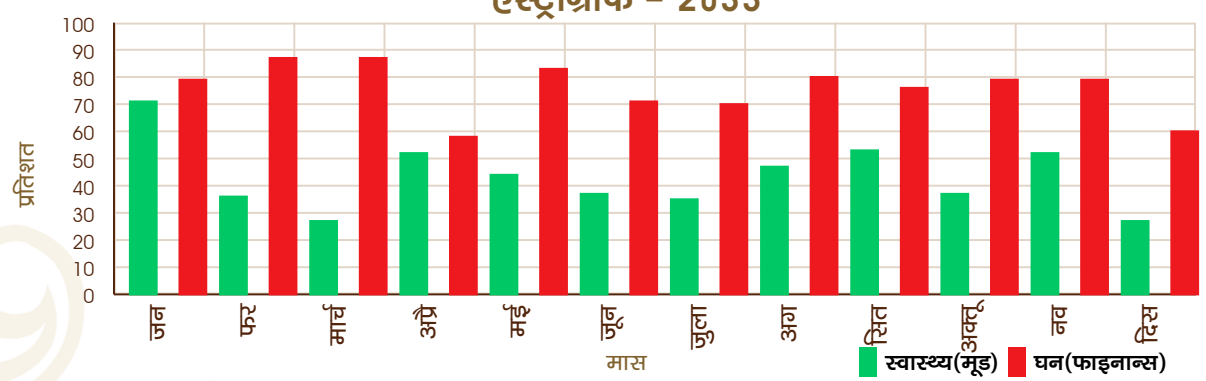

एस्ट्रोग्राफ - 2034

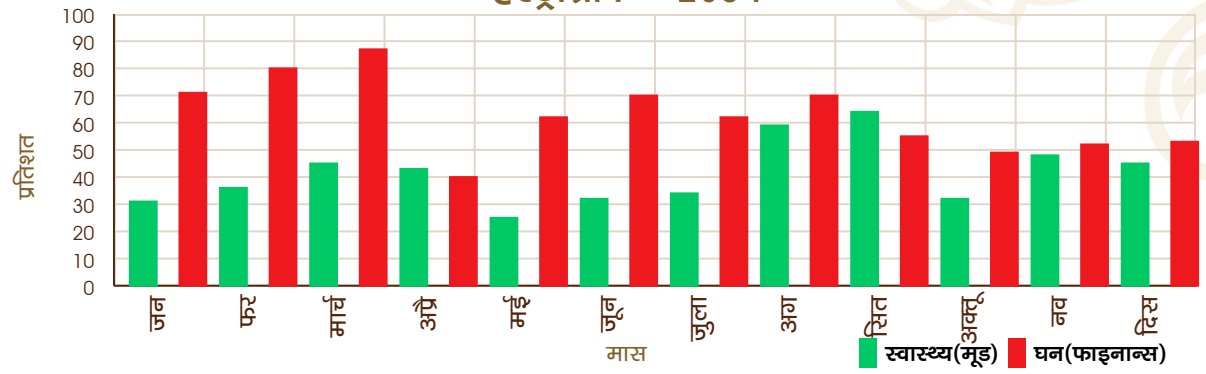

एस्ट्रोग्राफ - 2035

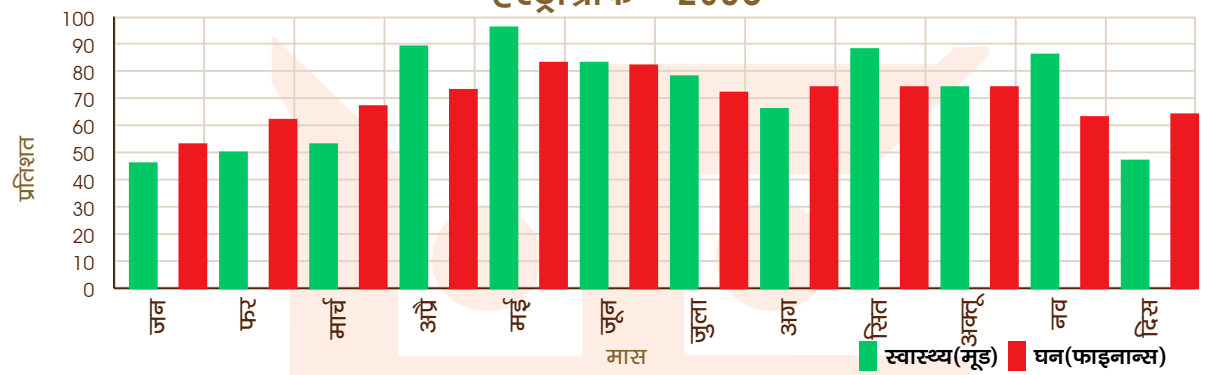

एस्ट्रोग्राफ - 2036

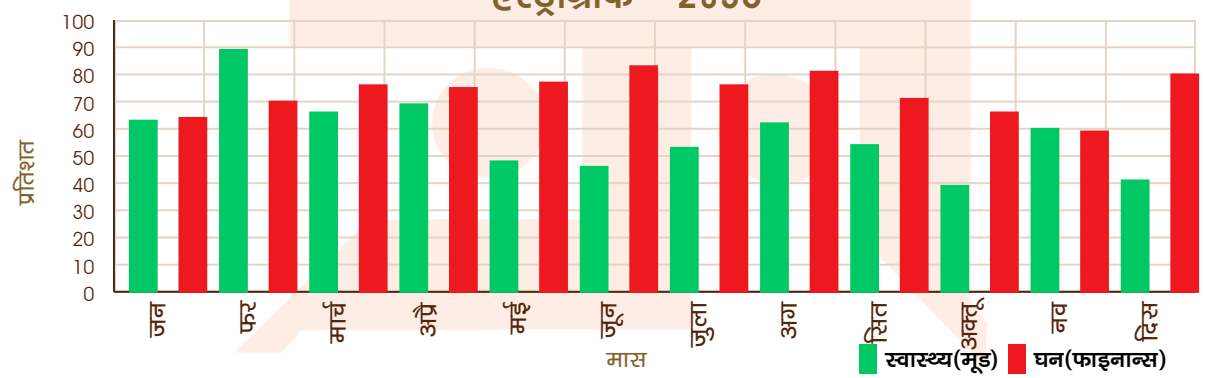

एस्ट्रोग्राफ - 2037

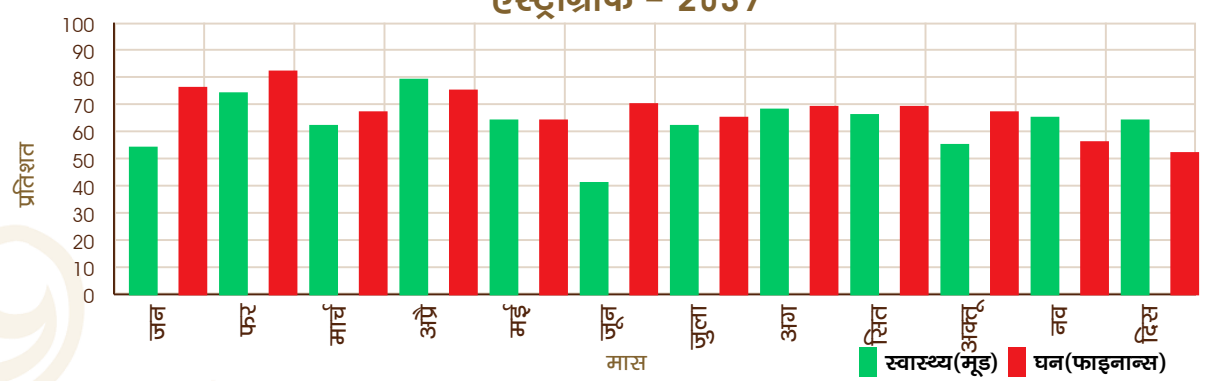

एस्ट्रोग्राफ - 2038

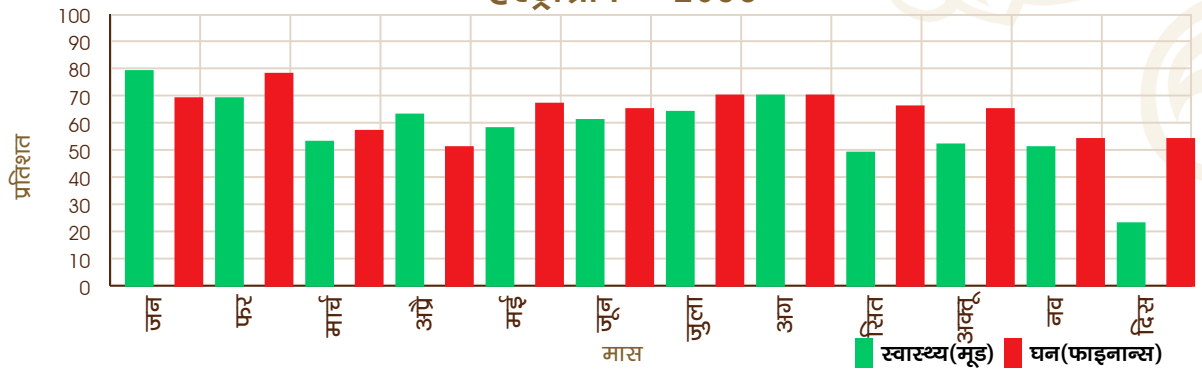

एस्ट्रोग्राफ - 2039

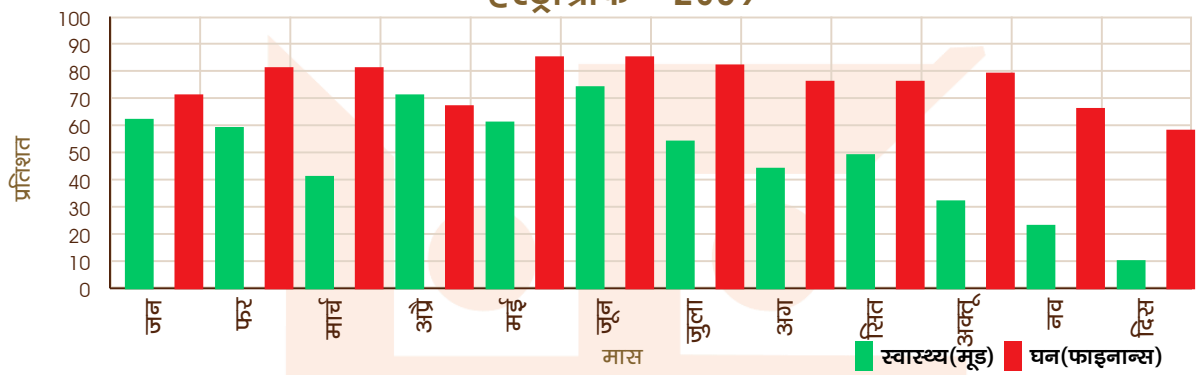

एस्ट्रोग्राफ - 2040

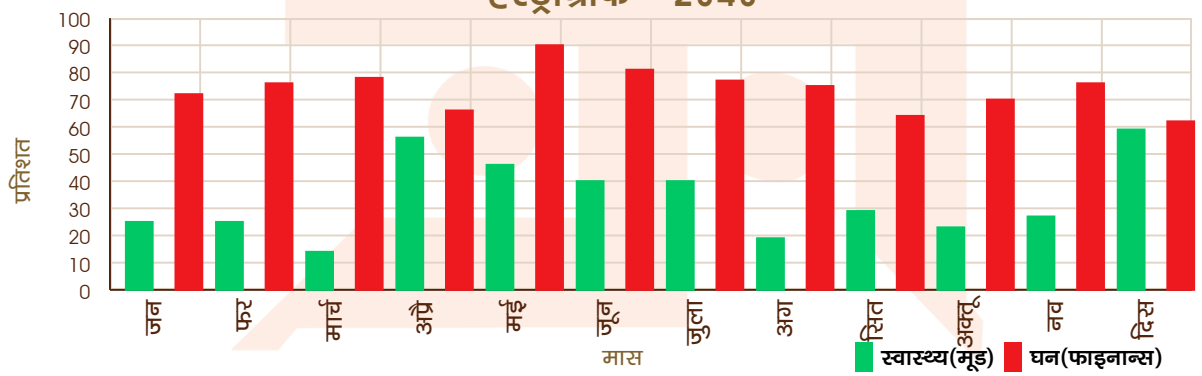

एस्ट्रोग्राफ - 2041

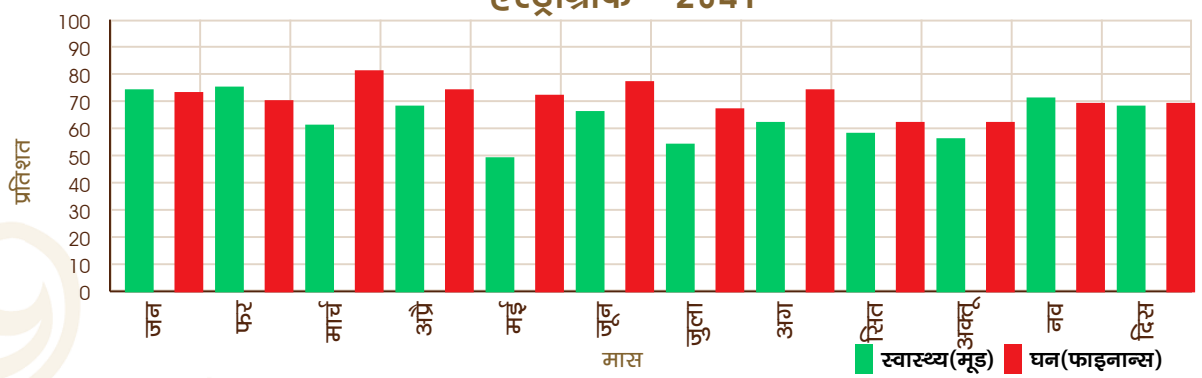

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

एस्ट्रोग्राफ - 2042

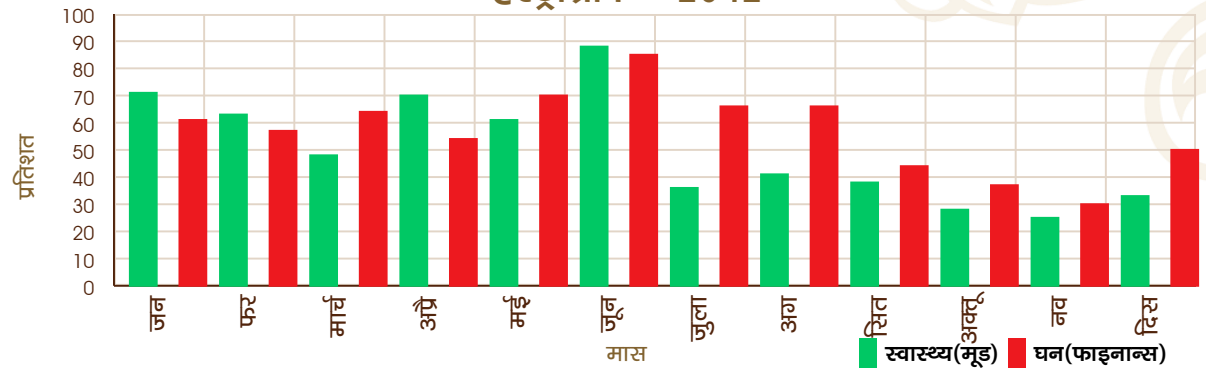

एस्ट्रोग्राफ - 2043

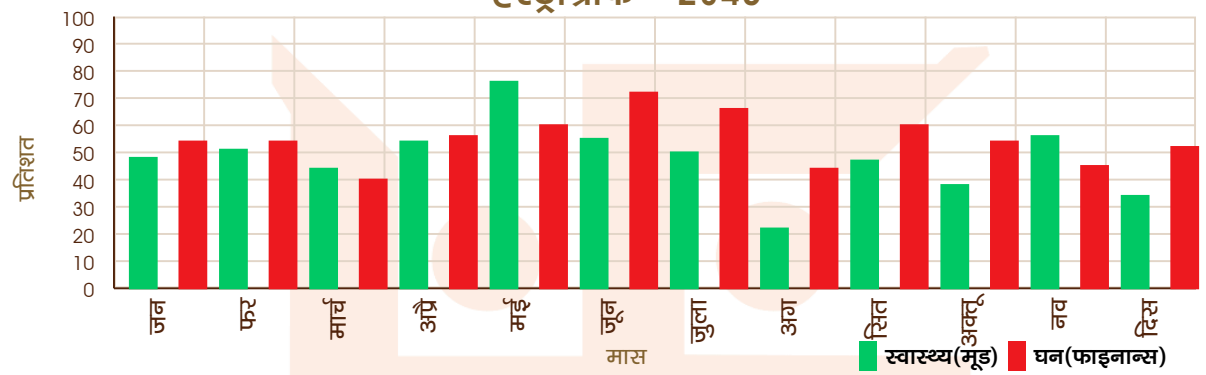

एस्ट्रोग्राफ - 2044

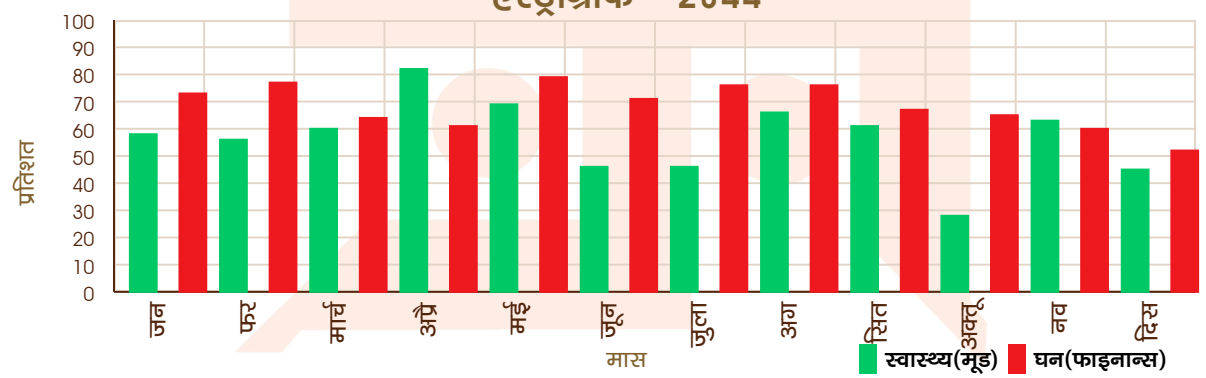

एस्ट्रोग्राफ - 2045

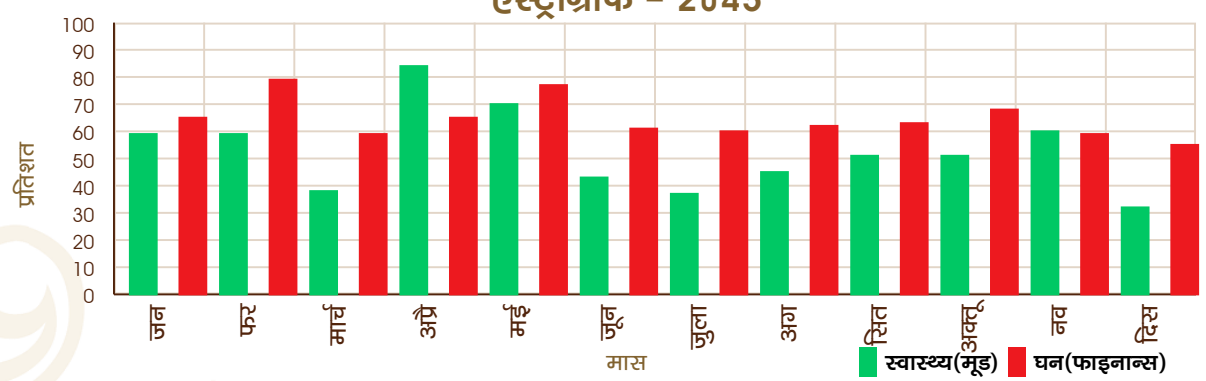

Future Point Pvt. Ltd.
A-3, Ring Road, South Ex Part 1 New Delhi - 110049
7401508000
narayan.sahani@futurepointindia.com

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।

।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र,गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

उच्चाह्वये कर्मगते लग्ननाथेन वीक्षिते ।
भाग्याधिपेन वा दृष्टे वाहनाधिपतिर्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-175 ।।

यदि जन्मपत्रिका में उच्च का ग्रह दशम भाव में लग्नेश अथवा नवमेश से दृष्ट हो तो जातक वाहनों का स्वामी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक वाहनों का सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ।
बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-36 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव कारक ग्रह जिसकी राशि अंशक में हो वह केंद्र या त्रिकोण में पंचमेश से दृष्ट हो तो तीव्रबुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।